श्री जैन स्तुति.

सुधारो करी लखनार खंभात संप्रदायना

मुनिश्री छगनलालजी महाराज.

मु. खंभात.

छपावी प्रसिद्ध करनार,

त्रीभोवनदास रुगनाथदास शाह.

आकाशेठना कुवानी पोळ-अमदावाद.

(आवृत्ति ६ ठ्ठी.)

सत्यविजय प्रिन्टिंग प्रेसमां-सांकलचंद

हरिलाले छाप्युं-अमदावाद.

संवत १९७४-सने १९१८-प्रत २०००

किम्मत. ०-८-०

आ पुस्तकमां अनुपूर्वी, छंदसंग्रह, सज्झायसंग्रह,
स्तोत्रसंग्रह, प्रदेशी राजाना प्रश्नोत्तर, सूरिकं-
तानुं केर दर्शक चरित्र अध्ययनसंग्रह,
तथा नित्यनियमादि प्रकरणनो
समावेश थाय छे.

प्रस्तावना.



सर्वे सुज्ञ जैन धर्माभीलाषीओने सविनय नींवेदन करवानुं के, आ पुस्तकनी गुजराती तेमज देवनागरी लिपीमां पांच आवृत्ति छपाइ बहार पडेल छे, अने ते दरेक जैनबंधुने अवश्य उपयोगी अने वांचवा लायक छे.

अमे दरेक आवृत्तिमां सुधारो वधारो करताज आव्या छीए. परन्तु आ आवृत्तिमां वांचकवर्गनी सुगमता सारु, छंद संग्रहादिक पांच विभाग पाडवामां आव्या छे. तेमज अनुक्रमणिका पण करेली छे, जेथी कोइ पण छंद के सज्झाय विगेरे अनुक्रमणिकामां जोवाथी तरतज दरेक विषय सहेलाइथी समजाशे.

संस्कृतमां भक्तामरस्तोत्र, अने किकपूर

स्तोत्र भावार्थ सहित तेमज दशवैकालीकना चार अध्ययन, नित्य नियमादि प्रकरण, तेमज आ छठ्ठी आवृत्तिमां प्रदेशी राजाना प्रश्नोत्तर, सूरिकंतानु केर दर्शक चरित्र, राणीनो कपट-रुपी विलाप, नवीन दाखल करेल छे, तेथी पुस्तकनुं कद २२४ पृष्टनुं थयुं छे, अने पुंठुं पाकुं सुशोभीत, उत्तम कागळ, सुंदर छपाइ साथे तैयार करवामां, हालना बारीक वखतमां कागळ विगेरे तमाम चीजनो भाव एकदम वधी जवाथी, अमोने ज्यादे खर्च लागेल छे जेथी पुस्तकनी किमत आठ आना राखेल छे. पर-मात्मानी स्तुति करवानी कया पुरुषने इच्छा नही होय ? आवा अमुल्य रत्ननी अमे वधारे प्रशंसा करवा मागता नथी, अमे आशा राखीए छीए के वांचक महाशय त्हेनी कदर समजशे.

अनुक्रमाणका.

आनुपूर्व्वि.

ज्यां १ छे त्यां नमो अरिहंताणं कहेवुं.
ज्यां २ छे त्यां नमो सिद्धाणं कहेवुं.
ज्यां ३ छे त्यां नमो आयरियाणं कहेवुं.
ज्यां ४ छे त्यां नमो उवगायाणं कहेवुं.
ज्यां ५ छे त्यां नमोलोए सव्वसाहुणं कहेवुं.

चोपाइ तथा दोहरा.

आनुपूर्व्वि गणज्यो जोय, छमासी तपनुं फल होय; संदेह नव आणो लगार, नीर्मल मने जपो नवकार ॥ १ ॥ शुद्ध वस्त्र धरी वीवेक, दीन दीन प्रत्ये गणवी एक; एम आनुपूर्व्वि जे गणे, ते पांचसे सागरना पापने हणे ॥ २ ॥ अशुभ कर्म के हरणकुं, मंत्र बडो नवकार ॥ वाणी द्वादश अंगमें; देख लीयो तत्व सार ॥ ३ ॥

૩	૩	૩	૩	૩	૩
૫	૫	૫	૫	૫	૫
૪	૪	૨	૨	૧	૧
૨	૧	૪	૧	૪	૨
૧	૨	૧	૪	૨	૪

૩	૩	૩	૩	૩	૩
૪	૪	૪	૪	૪	૪
૫	૫	૨	૨	૧	૧
૨	૧	૫	૧	૫	૨
૧	૨	૧	૫	૨	૫

ɤ	ɤ	ɤ	ɤ	ɤ	ɤ
∽	∽	∽	∽	∽	∽
∞	∞	m	m	α	α
m	α	∞	α	∞	m
α	m	α	∞	m	∞

ɤ	ɤ	ɤ	ɤ	ɤ	ɤ
α	α	α	α	α	α
∞	∞	m	m	∽	∽
m	∽	∞	∽	∞	m
∽	m	∽	∞	m	∞

๕	๕	๕	๕	๕	๕
๓	๓	๓	๓	๓	๓
๒	๒	๔	๔	๑	๑
๔	๑	๒	๑	๒	๔
๑	๔	๑	๒	๔	๒

๕	๕	๕	๕	๕	๕
๒	๒	๒	๒	๒	๒
๓	๓	๔	๔	๑	๑
๔	๑	๓	๑	๓	๔
๑	๔	๑	๓	๔	๓

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

༣	༣	༣	༣	༣	༣
༥	༥	༥	༥	༥	༥
༤	༤	༢	༢	༡	༡
༢	༡	༤	༡	༤	༢
༡	༢	༡	༤	༢	༤

༣	༣	༣	༣	༣	༣
༤	༤	༤	༤	༤	༤
༥	༥	༢	༢	༡	༡
༢	༡	༥	༡	༥	༢
༡	༢	༡	༥	༢	༥

๓	๓	๓	๓	๓	๓
๑	๑	๑	๑	๑	๑
๖	๖	๒	๒	๔	๔
๒	๔	๖	๔	๖	[illegible]
๔	๒	๔	๖	๒	๖

๓	๓	๓	๓	๓	๓
๔	๔	๔	๔	๔	๔
๖	๖	๒	๒	๑	๑
๒	๑	๖	๑	๖	๒
๑	๒	๑	๖	๒	๖

๙	๙	๙	๙	๙	๙
๔	๔	๔	๔	๔	๔
๒	๒	๓	๓	๑	๑
๓	๑	๒	๑	๒	๓
๑	๓	๑	๒	๓	๒

๙	๙	๙	๙	๙	๙
๒	๒	๒	๒	๒	๒
๔	๔	๓	๓	๑	๑
๓	๑	๔	๑	๔	๓
๑	๓	๑	๔	๓	๔

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
୪	୪	୪	୪	୪	୪
୧	୧	୩	୩	୨	୨
୩	୨	୧	୨	୧	୩
୨	୩	୨	୧	୩	୧

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
୧	୧	୧	୧	୧	୧
୪	୪	୩	୩	୨	୨
୩	୨	୪	୨	୪	୩
୨	୩	୨	୪	୩	୪

୧	୧	୧	୧	୧	୧
୨	୨	୨	୨	୨	୨
୫	୫	୪	୪	୩	୩
୪	୩	୫	୩	୫	୪
୩	୪	୩	୫	୪	୫

୧	୧	୧	୧	୧	୧
୩	୩	୩	୩	୩	୩
୫	୫	୪	୪	୨	୨
୪	୨	୫	୨	୫	୪
୨	୪	୨	୫	୪	୫

छंद संग्रह.

ॐ असिआउसाय नमः

प्रथम सिद्ध परमात्मानी स्तुति.

(हरीगीत छंद.)

तुमे तरण तारण दुःख निवारण भविक जीव आराधनं, श्री नाभीनंदन जगत वंदन नमो सिद्ध निरंजनं ॥ १ ॥ जगत भुषण विगत दुषण प्रवण प्राण निरुपकं, ध्यान रुप अनोप उपम नमो० ॥ २ ॥ गगन मंडळ मुक्ति पदवी सर्व उर्द्ध निवासनं, ज्ञान ज्योति अनंत राजे नमो० ॥ ३ ॥ अज्ञान नींद्रा विगत वेदन दलित मोह नीरायुषं, नाम गोत्र

निरंतरायं नमो० ॥ ४ ॥ विकट क्रोधा मान योधं माया लोभ विसर्जनं, राग द्वेष विमर्द अंकुर नमो० ॥ ५ ॥ विमल केवळ ज्ञान लोचन ध्यान शुकल समीरितं, योगीना तिगम्य रुपं नमो० ॥ ६ ॥ योग ने समोसरण मुद्रा परी पल्य कासनं, सर्व दीसे तेज रुपं नमो० ॥ ७ ॥ जगत जीनंके दास दासी तास आस निरासनं, चंद्रपे परमानंद रुपं नमो० ॥ ८ ॥ स्व समय समकित द्रष्टी जिनकी सोए योगी अयोगीकं, देखतामां लीन होवे नमो० ॥ ९ ॥ तिर्थ सिद्धा अतिर्थ सिद्धा भेद पंच दशादिकं, सर्व कर्म विमुक्त चैतन नमो० ॥ १० ॥ चंद्र सूर्य दीप मणीकी ज्योति येन उलंघितं, ते ज्योतिथी अपरम ज्योति नमो० ॥ ११ ॥ एकमांहि

अनेक राजे अनेकमांही एकीकं, एक अनेक-
की नांहि संख्या नमो० ॥ १२ ॥ अजर
अमर अलक्ष अनंतर निराकार निरंजनं, प-
रिब्रह्म ज्ञान अनंत दर्शन नमो० ॥ १३ ॥
अतुल सुखकी लहेरमें प्रभु लीन रहे निरं-
तरं, धर्म ध्यानथी सिद्ध दर्शन नमो० ॥१४॥
ध्यान धुपं मनः पुष्प पंचेंद्रीय हुताशनं, क्षमा
जाप संतोष पुजा पुजो देव निरंजनं० ॥१५॥
तुम्मे मुक्ति दाता कर्म घाता दीन जाणी दया
करो, सिद्धारथ नंदन जगत वंदन, महावीर
जीनेश्वरं ॥ १६ ॥ इति ॥

श्री पार्श्वनाथ स्वामीनो छंद.

[तोटक वृतनी देशीमां]

जय जय जगनायक पार्श्वजिनं, प्रणता

खिल मानव देवगणं ॥ जीन शासन मंडन स्वामी जयो, तुम दरीशन देखी आनंद भयो ॥ १ ॥ अश्वसेन कुलांबर भानुनिभं नव हस्त शरीर हरित प्रतिभं, धरणेंद्र सुसेवित पाद युगं, भर भासुर कांती सदा सुभगं ॥ २ ॥ निज रुप विनिर्जित रंभ पति, वदनो द्युती, शारद शोमतति ॥ नयनांबुज दीप्त विशाळतरा, तिलकुसुम सन्निभ नासा प्रवरा ॥ ३ ॥ रसनामृत कंद समान सदा, दशनावळि अनार कलि सुखदा ॥ अधरारुण विद्रुम रंग घनं. जय पुरुसादाणी पार्श्वजिनं ॥ ४ ॥ अतिचारु मुकुट मस्तक दीपे, काने कुंडळ रवीशशि जीपे ॥ तुज महिमा महिमंडळ गाजे, नित पंच शब्द बाजा बाजे ॥ ५ ॥ सुरकिन्नर विद्याधर आवे, नर नारी

तोरा गुण गावे ॥ तुज सेवे चोसठ इंद्र सदा, तुज नामे नावे कष्ट कदा ॥ ६ ॥ जे सेवे तुजने भाव घणे, नव निधी थाय घर तेह तणे ॥ अडवडीआ तुं आधार कह्यो समरथ साहिब में आज लह्यो ॥ ७ ॥ दुखियाने सुखदायक तुं दाखे, अशरणने शरणे तुं राखे ॥ तुज नामे संकट वीकट टळे, वीछडीयां व्हालां आवी मळे ॥८॥ नटविट लंपट दुरे नासे, तुज नामे चोर चरड त्रासे ॥ रण राउल जय तुज नाम थकी, सघळे आगण तुज सेव थकी ॥ ९ ॥ यक्ष राक्षस किन्नर सवी उरगा, करी केसरि दावानळ विहगा ॥ वधबंधन भय सघळा जावे, जे एक मने तुजने ध्यावे ॥ १० ॥ भुत प्रेत पिशाच छली न शके, जगदीश तुवा भिध जाप थके ॥

म्होटा जोटींग रहे दुरे, दैत्यादिकना तुं मद चुरे ॥ ११ ॥ डायणि सायणि जाय हटकी, भगवंत थाय तुज भजन थकी ॥ कपटी तुज नाम लिया कंपे, दुरजन मुखथी जीजी जंपे ॥ १२ ॥ मानी मच्छराळा मुह मोडे, ते पण आगळथी करजोडे ॥ दुरं मुख दुष्टादिक तुंहि दमे, तुज नामे म्होटा मलेच्छ नमे ॥ १३ ॥ तुज नामे माने नृप सबळा, तुज जश उज्वळ जेम चंद्रकळा ॥ तुज नामे पामे रुद्धि घणी, जय जय जगदीश्वर त्रिजगधणी॥१४॥ चिंतामणी काम सवी पामे, हयगय रथ पायक तुज नामे ॥ जनपद ठकुराइ तुं आपे, दुर्जन जननां दारिद्र कापे ॥ १५ ॥ निर्धनने तुं धनवंत करे, तूठ्यो कोठार भंडार भरे ॥ घर पुत्र कलत्र परिवार घणो, ते सहु

महिमा तुज नाम तणो ॥ १६ ॥ मणी माणेक मोती रत्न जडयां, सोवन भुषण बहु सुघड घड्यां ॥ वळी पहेरण नवरंग वेष घणां, तुम नामे नवि रहे कांइ मणा ॥ १७॥ वैरी विरुआ नवि ताकि शके, वळी चोर चुगल मनथी चमकें ॥ छळ छिद्र कदा केहनो न लगे, जीनराज सदा तुज ज्योति जगे ॥ १८ ॥ ठग ठाकुर सवि थर हर कंपे, पाखंडी पण को नवि फरके ॥ लुंटारादिक सहु नासी जाये, मारग तुज जपतां जय थाये ॥ १९ ॥ जड मुरख जे मति हिन वळी अज्ञान तिमिर तस जाय टळी ॥ तुज समरणथी डाह्या थाए, पंडित पद पामी पूजाए ॥ २० ॥ खस खांसी खयन पीडा नासे, दुरबळ मुख दीनपणुं त्रासे ॥ गड

मुंबड कुष्ट जिके सबळा, तुज जापे रोग समे सघळा ॥ २१ ॥ गहिला गुंगा बहिराय जिके, तुज ध्याने गत दुःख थाय तिके ॥ तनु कांति कळा सुविशेष वधे; तुज समरण शुं नवनिधि सधे ॥ २२ ॥ करि केसरी अहिरण बंध सया, जळ जलण जळोदर अष्ट भया ॥ रांगण पमुहा सवी जाय टळी, तुज नामे पामे रंगरळी ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हं श्री पार्श्वनमो, नमिउण जपंता दुष्ट दमो ॥ चिंतामणी मंत्र जिके ध्याये, तिणघर दिन दिन दोलत थाये ॥ २४ ॥ त्रीकरण शुद्धे जे आराधे, तस जस कीर्ति जगमां वाधे ॥ वळी कामीत काम सवे साधे, समीहीत चिंतामणि तुज लाधे ॥ २५ ॥ मद मच्छर मनथी दूर तजे, भगवंत भलीपरे जेह भजे ॥ तस घर

कमळा कीलोल करे, वळि राज्य रमणि बहु लीलवरे ॥ २६ ॥ भय वारक तारक तुं त्राता, सज्जन मन गति मतिनो दाता ॥ मात तात सहोदर तुं स्वामी, शीव दायक नायक हित कामी ॥ २७ ॥ करूणाकर ठाकुर तुं म्हारो, निशिवासर नाम जपु त्हारो ॥ सेवक शुं परम कृपा करज्यो, वालेशर वंछित फळ देज्यो ॥ २८ ॥ जीनराज सदा तुं जयकारी, तुज सुर्ति अति मोहनगारी ॥ मुगत मेहेल मांहि तुंही बीराजे, त्रिभुवन ठकुराइ तुज छाजे ॥ २९ ॥ इम भाव भले जीनवर गायो; वामा सुत देखी बहु सुख पायो ॥ रवि शशि मुनिसंवच्छर रंगे, जय देव सुरमा सुख संगे ॥ ३० ॥ जय पुरूसादाणी पार्श्व प्रभो, सकळार्थ समिहित देहि

विभो ॥ बुध हर्ष रुची विजयाय मुदा, तव लब्धी रुचि सुख थाय सदा ॥ ३१ ॥

कळश (वसंततिलका वृत्तम्)

इत्थं स्तुतः सकळ कामित सिद्धिदाता, यक्षाधिराज नत पार्श्वमभोधिराज ॥ स्वस्ति श्री हर्ष रुचिं पंकज सुप्रसादात, शिष्येण लब्ध रुचीने तीमुदा प्रसन्नः ॥ १ ॥

अथ श्री पार्श्वनाथ स्वामीनो छंद.

आपण घर बेठा लील करो, निज पुत्र कलत्र शुं प्रेम धरो ॥ तुमे देश देशांतर कांइ दोडो, नित्यपास जपो श्री जीन रुडो ॥ १ ॥ मनवंछित सघळां काज सरे, शीर उपर

छत्र चामर धरे, कलमल आगळ चाले घोडो ॥ नित्य० ॥ २ ॥ भूत प्रेत पिशाच वळी, सायणि ने डायणी जाय टळी ॥ छळ छिद्र न कोइ लागे जुडो ॥ नित्य० ॥ ३ ॥ एकांतर ताव सियोदाह, ओषध विण जाय क्षण मांह ॥ नवि दु:खे माथुं पग गुडो ॥ नित्यं० ॥ ४ ॥ कंठमाळ गड गुंबड सवळा, तस उदर रोग टळे सघळा ॥ पीडा न करे फिन गळ फोडो ॥ नित्य० ॥ ५ ॥ जागतो तिर्थंकर पास बहु, एम जाणे सघळो जगत सहु ॥ ततक्षण अशुभ कर्म तोडो ॥ नित्य० ॥ ६ ॥ पास वाणारशिपुरी नगरी, तिहां उदयो जिनवर उदय करी ॥ समय सुंदर कहे करजोडो ॥ नित्य० ॥ ७ ॥

अथ. श्री शांतिनाथ स्वामीनी छंद.

शारद मांय नमुं शिरनामी, हुं गुण गाउं त्रिभुवन के स्वामी ॥ शांति शांति जपे सब कोइ, ते घेर शांति सदा सुख होइ ॥ १ ॥ शांति जपी जे कीजे काम, सोही काम होवे अभिराम ॥ शांति जपी परदेश सीधावे, ते कुशळ कमळा लेइ आवे ॥ २ ॥ गर्भ थकी प्रभु मारि नीवारी, शांतिजी नाम दियो हितकारी ॥ जे नर शांती तणा गुण गावे, ऋद्धि अचिंती ते नर पावे ॥ ३ ॥ जे नरकुं प्रभु शांति सहाइ, ते नरकुं क्या आरती नाही ॥ जो कछु वंछे सोही पुरे, दुःख दारिद्र मिथ्या मति चुरे ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योत प्रकाशी, घट घट अं-

तर के प्रभु वासी ॥ स्वामी स्वरुप कह्यु नवि जाय, कहेतां मुज मन अचरीज थाय ॥ ५ ॥ डार दीये सवही हथियारा, जीत्या मोह तणा दळ सारा ॥ नारी तजी शिवशुं रंग राचो, राज तज्यो पण साहिब साचो ॥ ६ ॥ महा बळवंत कहीजे देवा, कायर कुंथु एक हणेवा ॥ रुद्धि सवळ प्रभु पास लहीजे, भिक्षा आहारी नाम कहीजे ॥ ७ ॥ निंदक पुजककुं सम भायक, पण सेवककुं हे सुख-दायक ॥ तजी परिग्रह हुवा जगनायक, नाम अतिथि सर्वे सिद्धि लायक ॥ ८ ॥ शत्रु मित्र सम चित्त गणीजे, नाम देव अरिहंत भणीजे ॥ सकळ जीव हितवंत कहीजे, सेव-क जाणी माहापद दीजे ॥ ९ ॥ सायर जेसा होत गंभिर, दुषण एक न माहे श-

रीसा, मेरु अचळ जिम अंतर जामी, पण न रहे प्रभु एकणं ठामी ॥ १० ॥ लोक कहे जिनजी सब देखे, पण सुपनांतर कबहुं न पेखे ॥ रीस विना बावीश परीसा, सेना जीती ते जगदीशा ॥ ११ ॥ मान विना जग आण मनाइ, माया विना शिव शुं लय लाइ, लोभ बिना गुण राशि ग्रहिजे, भिक्षु भावे त्रिगडो सेविजे ॥ १२ ॥ निर्ग्रंथपणे शिर छत्र धरावे, नाम यति पण चमर ढळावे ॥ अभयदान दाता सुख कारण, आगळ चक्र चाले अरिदारण ॥ १३ ॥ श्री जिनराज दयाळ भणीजे, कर्म सर्वेको मूळ खणीजे ॥ चउविह संघह तिरथ थापे,. लच्छी घणी देखे नवि आपे ॥ १४ ॥ विनयवंत भगवंत कहावे, नांहि कीसीकुं शीश नमावे ॥ अ-

कंचनको बीरुद धरावे, पण सोवन पद पंकज ठावे ॥ १५ ॥ राग नहि पण सेवक तारे; द्वेष नही निगुणा संग वारे ॥ तजी आरंभ निज आतम ध्यावे, शिव रमणीको साथ चलावे ॥ १६ ॥ तेरो महिमा अद्भुत कहीए, तेरा गुणको पार न लहिए ॥ तुं प्रभु समरथ साहेब मेरा, हुं मन मोहन सेवक तेरा ॥ १७ ॥ तुंरे त्रिलोक तणो प्रतिपाळ; हुंरे अनाथ ने तुंरे दयाळ ॥ तुं शरणागत राखत धीरा, तुं प्रभु तारक छे वड वीरा ॥ १८ ॥ तुंही समो वड भागज पायो, तो मेरो काज चडयोरे सवायो ॥ करजोडी प्रभु वीनवुं तमशुं, करो कृपा जिनवरजी अमशुं ॥ १९ ॥ जनम मरणना भय निवारो, भव सागरथी पार उतारो ॥ श्री हत्थीणा-

पुर मंडळ सोहे, त्यां श्री शांति सदा मन मोहे ॥ २० ॥ पद्म सागर गुरुराय पसाया, श्री गुण सागर कहे मन माया ॥ जे नर नारी एक चित्त गावे, ते मनवांछित निश्चे पावे ॥ २१ ॥ इति ॥

अथ श्री गौत्तम स्वामीनो छंद.

वीरजिणेशर केरो शिष्य, गौतम नाम जपो निशदिश ॥ जो कीजे गौतमनुं ध्यान, तो घर विलशे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामे गिरिवर चडे, मनवंछित हेला संपडे, गौतम नामे नावे रोग, गौतम नामे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी वीरूआ वंकडा, तस नामे नावे ढुंकडा ॥ भूत प्रेत नवि मंडे

प्राण, ते गौतमना करूं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे निर्मळकाय, गौतम नामे वाधे आय ॥ गौतम जिनशासन शणगार, गौतम नामे जय जयकार ॥ ४ ॥ शाळ दाळ सुरहा घृत गोळ, मनवंछित कापड तंबोळ ॥ घर सु धरणी निर्मळ चित्त, गौतम नामे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम उग्यो अविचळ भाण, गौतम नाम जपो जग जाण ॥ म्होटा मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सफळ वीहाण ॥ ६ ॥ घर मयंगळ घोडानी जोड, वारु पहोंचे वंछित कोड ॥ महियळ माने म्होटाराय, जो त्रुठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्या पातीक टळे, उत्तम नरनी संगत मळे ॥ गौतम नामे निर्मळ ज्ञान, गौतम नामे वाधे वान ॥ ८ ॥ पुन्यवंत अवधारो सहु, गुरु

गौतमना गुण छे बहु ॥ कहे लावण्य समय करंजोड, गौतम तूठे संपति कोड ॥ ९ ॥

अथ श्री सोळ सतीनो छंद.

आदिनाथ आदे जिनवर वंदी, सफळ मनोरथ कीजिए ॥ प्रभाते उठी मंगळिक कामे, सोळ सतिना नाम लीजीए ॥ १ ॥ बाळकुमारी जगहितकारी, ब्राह्मी भरतनी बेनडीए ॥ घट घट व्यापक अक्षर रुपे, सोळ सतिमां जे वडीए ॥ २ ॥ बाहु बळ भगिनी सतीय शिरोमणी, सुंदरी नाम ऋषभ सुताए ॥ अंक स्वरुपी त्रिभुवन मांहे, जेह अनोपम गुण जुताए ॥ ३ ॥ चंदनबाळा बाळपणेथी,

शीयळवंती शुद्ध श्राविकाए ॥ अडदना बा-
कुळा वीर प्रतिलाभ्या, केवळ लही व्रत
भाविकाए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुयः धारिणी
नंदनी, राजेमती नेम वल्लभा ए ॥ जोवन
वेशे कामने जीत्या, संजम लइ देव दुल्लभाए
॥ ५ ॥ पंच भरत्तारी पांडव नारी, द्रुपद
तनया वखाणीए ॥ एकसो आठे चोर पुराणा
शीयळ महिमा तस जाणीये ए ॥ ६ ॥ दशरथ
नृपनी नारी नीरुपम, कौशल्या कुळ चंद्रि-
काए शीयळ सलूणी राम जनेता, पुन्य
तणी प्रनाळीकाए ॥ ७ ॥ कोसंबिक ठामे
संतानिक नामे, राज्य करे रंग राजीयो ए ॥
तस घर धरणी मृगावती सती, सुर भुवने
जश गाजीयो ए ॥ ८ ॥ सुळशा साची
शीयळ न काची, राची नही विषया रसेए ॥

मुखडुं जोतां पाप पलाए, नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ९ ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामिनी, जनकसूता सीतासतीए ॥ जग सहु जाणे धीज करंता, अनळ शीतळ थयो शीयळर्थी ए ॥ १० ॥ सुरनर वंदित शीयळ अखंडित शीवा शीव पद गामनीए ॥ जेहने नामे निर्मळ थइए, बलीहारी तस नामनी ए ॥ ११ ॥ काचे तांतणे चालणी बांधी, कुप थकी जळ काढीयुं ए ॥ कलंक उतारवा सतीय सूभद्रा, चंपा बार उघाडीयुं ए ॥ १२ ॥ हस्तीनागपुरे पांडु रायनी, कुंता नामे कामीनीए ॥ पांडव माता दसे दसारनी, ब्हेन पतीव्रता पद्मनीए ॥ १३ ॥ शीळवती नामे शीळव्रत धारीणी, त्रीवीधे तहेने वंदीये ए ॥ नाम जपंता पातक जाए,

दरीसणे दुरीत नीकंदी ए ॥ १४ ॥ नीष-
धानगरी नळह नरींदनी, दमयंती तस गे-
हीनी ए ॥ संकट पडतां शीयळज राख्युं,
त्रीभुवन कीर्ती जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग
अजीता जग जन पुजीता, पुफचुळा ने प्र-
भावती ए ॥ वीश्व वीख्याता कामीत दाता,
सोळमी सती पदमावती ए ॥ १६ ॥ वीरे
भांखी शास्त्रे साखी; उदय रतन भाखे मुदा
ए ॥ व्हाणु वातां जे नर भणशे, ते लेशे
सुख संपदा ए ॥ १७ ॥ इति ॥

अथ श्री चिंतामणी पार्श्वनाथनो छंद.

(दोहा.)

कल्पवेल चींतामणि, कामधेनु गुण खाण ॥

अलख अगोचर अगम गती, चीदा-
नंद भगवान ॥ १ ॥ परम ज्योती पर-
मात्मा, नीराकार कीरतार, नीर्भय रुप
ज्योतीसरुप, पुरण ब्रह्म अपार ॥ २ ॥ अ-
वीनाशी साहीब धणी, चींतामणी श्री पास ॥
अरज करुं कर जोड के, पुरो वंछीत
आश ॥ ३ ॥ मन चींतीत आशा फळे,
सकळ सीद्धवे काम ॥ चींतामणीको जाप
जप, चींता हरे ए नाम ॥ ४ ॥ तुम सम मे-
रेको नही, चींतामणी भगवान ॥ चेतनकी
एह वीनती, दीजे अनुभव ज्ञान ॥ ५ ॥

(चोपाइ.)

प्राणत देवलोकथी आये, जन्म वणा-
रशी नगरी पाये ॥ अश्वसेन कुळ मंडन

स्वामी, त्रीहु जगके प्रभु अंतरजामी ॥ ६ ॥
वामा देवी माताके जाये, लंछन नाग फणी
मणी पाये ॥ शुभ काया नव हाथ वखाणो,
नील वरण तनु नीर्मळ जाणो ॥ ७ ॥ मा-
नव जक्ष सेवे प्रभु पाय, पद्मावती देवी सु-
खदाय ॥ इंद्र चंद्र पारस गुण गावे, कल्प-
वृक्ष चींतामणी पावे ॥ ८ ॥ नीत समरो
चींतामणी स्वामी, आशा पुरे अंतरजामी ॥
धन धन पार्श्व पुरीसादाणी, तुम सम
जगमे को नही नाणी ॥ ९ ॥ तुमारो नाम
सदा सुखकारी, सुख उपजे दुःख जाय वी-
सारी ॥ चेतनको मन तुमारे पास, मन वं-
छीत पुरो प्रभु आश ॥ १० ॥

(दं [illegible])

ॐ भगवंत चींता[illegible]ी, पार्श्व प्रभु जीनराय ॥ नमो नमो [illegible] नामसें, रोग शोग मीट जाय ॥ ११ ॥ वात पीत दुरे टळे, कफ नही आवे पाश ॥ चींताणीके नामसें मीटे श्वास ओर खास ॥ १२ ॥ प्रथम दुसरो तीसरो, ताव चोथीयो जाय ॥ शुळ वहोतेर दूरे रहे, दादर खाज न रहाय ॥१३॥ वीस्फोटक गड गुवडां. कोढ अढारे दुर ॥ नेत्र रोग सब परीहरे, कंठमाळ चक्चुर ॥ १४ ॥ चींतामणीके जापसें रोग शोग मीट जाय, चेतन पार्श्व नामको, समरो मन चीत लाय ॥ १५ ॥

(चो इ.)

मन शुद्धे समरो भगवान, भय भंजन चिंतामणी ध्यान ॥ भूत प्रेत भय जावे दुर, जाप जपे सुख संपति पूर ॥ १६ ॥ डाकण शाकण व्यंतर देव, भय नहीं लागे पारस सेव ॥ जळचर थलचर उरपर जीव, इनको भय नही समरो पीव ॥ १७ ॥ वाघ सिंह-को भय नहीं होय, सर्प गोह आवे नहि कोय ॥ वाट घाटमे रक्षा करे, चिंतामणी चिंता सब हरे ॥ १८ ॥ टोणां टामण जादु करे, तुमारो नाम लेतां सब डरे ॥ ठग फां-सीगर तस्कर होय, द्वेषी दुशमन नावे कोय ॥ १९ ॥ भय सब भागे तमारे नाम, मन वंछित पुरो सब काम ॥ भय नीवारण पुरे आश, चेतन जप चिंतामणी पास ॥२०॥

(दोहा.)

चिंतामणीके नामसें, सकल सीद्धवे काम ॥ राज ऋद्धी रमणी मळे, सुख संपती बहु दाम ॥ २१ ॥ हय गव रथ पायक मळे, लक्ष्मीको नही पारं ॥ पुत्र कलत्र मंगळ सदा, पावे शीव दरबार ॥ २२ ॥ चेतन चींता हरणको, जाप जपे तिन काळ ॥ कर आंबिल षट मासको, उपजे मंगळ माळ ॥ २३ ॥ पारस नाम प्रभावथी, वाधे बळ बहु ज्ञान ॥ मनवांछित सुख उपजे; नित समरो भगवान ॥ २४ ॥ संवत अढारा उपरे, साडत्रिशको परिमाण ॥ पोष शुकल दिन पंचमी, वार शनिश्चर जाण ॥ २५ ॥ भणे गुणे जो भावशुं. सुणे सदा चित लाय ॥

चेतन संपति बहु मळे, समरो मन वच काय ॥ २६ ॥

अथ श्री महावीर स्वामीनो छंद.

श्री सिद्धारथ कुळ शणगार, त्रिशळा देवी सुत जग आधार ॥ शोभे सुंदर सोवन वान, शरण तमारुं श्री वर्द्धमान ॥ १ ॥ तुम नामे लहिये संपदा, तुम नामे मन वंछीत मुदा ॥ तुम नामे लहीये सनमान, शरण० ॥ २ ॥ दुर्जन दुष्ट वैरी वीकराळ, तुम नामे नासे ततकाळ ॥ तुम नामे दीन दीन कल्याण, शरण० ॥ ३ ॥ तुम नामे नावे आपदा, भूत प्रेत व्यंतर नही कदा ॥ रोग शोग चींता नवी जाण, शरण० ॥ ४ ॥ ग्रहादीक

पीडा नवी करे, नाम तमारुं जे अनुसरे ॥ धर्मसींह मुनी भाव प्रधान, शरण० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ श्री पांसठीया यंत्रनो छंद.

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

श्री नेमीश्वर संभवं शाम, सुवीधी धर्म शांति अभीराम् ॥ अनंत सुव्रत नमीनाथ

सुजाण, श्री जीनवर मुज करो कल्याण ॥ १ ॥ अजीतनाथ चंद्र प्रभु धीर, आदीश्वर सुपार्श्व गंभीर ॥ वीमळनाथ वीमळ जग जाण, श्री जीनवर० ॥ २ ॥ मल्लीनाथ जीन मंगल रूप, पचवीश धनुष सुंदर स्वरूप ॥ श्री अरनाथ नमु वर्द्धमान, श्री जीनवर० ॥ ३ ॥ सुमती पद्म प्रभु अवतंस, वासु पुज्य शीतळ श्रेयांस ॥ कुंथुपार्श्व अभीनंदन भाण, श्री जीनवर. ॥ ४ ॥ इणीपरे जीनवर संभारीये, दुःख दारीद्र वीघ्न नीवारिये ॥ पच्चीसे पांसठ परमाण, श्री जीनवर० ॥ ५ ॥ इम भणतां दुःख नावे कदा, जो निज पासे राखो सदा ॥ धरीये पंचतणुं मन ध्यान, श्री जिनवर० ॥ ६ ॥ श्री जिनवर नामे वंछित मळे, मनवांछित सहु आशा फळे ॥ ध-

र्मसिंह मुनि नाम निधान, श्री जिनवर० ॥ ७ ॥ इति० ॥

अथ श्री नवकारनो छंद.

सुख कारण भवियण, समरो नितं नवकार ॥ जिनशासन आगम, चौद पुरवनो सार ॥ १ ॥ ए मंत्रनो महीमा, कहेता न लहुं पार ॥ सुरतरु जिम चिंतित, वंछित फल दातार ॥ २ ॥ सुरदानव मानव, सेवा करे करजोड, भुविमंडल विचरे, तारे भवीयण कोड ॥ ३ ॥ सुरछंदे विलसे अतिशय जास अनंत ॥ पद पहेले नमीये, अरिगंजन अरिहंत ॥ ४ ॥ जे पनरे भेदे, सिद्ध थया भगवंत ॥ पंचमि गति पहोत्या, अष्ट करम करी

अंत ॥ ५ ॥ कळ अकळ स्वरुपी, पंचानंतक देह ॥ जिनवर पाय प्रणमुं, बीजे पद वळी एह ॥ ६ ॥ गच्छभार धुरंधर, सुंदर शशिहर शोभ ॥ करे सारण वारण, गूण छत्रीशे थोभ ॥ ७ ॥ श्रुत जाण शीरोमणि, सागर जिम गंभीर ॥ त्रिजे पद नमीये, आचारज गुण धीर ॥ ८ ॥ ुतधर गुण आगर, सुत्र भणावें सार ॥ तप विधि संयोगे, भांखे अर्थ विचार ॥ ९ ॥ मुनीवर गुण जुत्ता, कहिये ते उवझाय ॥ पद चोथे नमीये, अहनिश तेहना पाय ॥ १० ॥ पंचाश्रव ठाळे, पाळे पंचाचार ॥ तपसी गुणधारी, वारे विषय विकार ॥ ११ ॥ त्रस थावर पीयर, लोक मांही जे साध ॥ त्रिविधे ते प्रणमुं, परमारथ जिणे लाध ॥ १२ ॥ अरि करि हरि

सायणि, डायणि भूत वैताळ ॥ सवि पाप पणासे, वाधे मंगळ माळ ॥ १३ ॥ इण समर्या संकट, दूर टळे तत्काळ ॥ इम जंपे जिन प्रभ, सुरि शिष्य रसाळ ॥ १४ ॥ इति ॥

अथ श्री वीरजीन छंद.

श्री सीद्धारथ कुळ दीपकचंद, त्रीशळा देवी राणीनो नंद ॥ ॥ कोमळ कंचन वरण शरीर, मनवंछीत पूरण महावीर ॥ १ ॥ कृपानाथ करी करुणा घणी, मुज सामु जुओ शासन धणी ॥ त्रीभुवननाथ आयो अवतीर, मन० ॥ २ ॥ अनंत वळी तप दुक्कर कीया, सवी कर्मकुं दावानळ दीया ॥ खम दम सम धीमानने धीर, मन० ॥ ३ ॥ चु-

मालीशे चेला किया, एकज दिनमे महा-
व्रत दीया ॥ गौतम सरीखा हुआ वजीर,
मन० ॥ ४ ॥ समवसरणमां सुण्यो अधीकार,
अमृत वाणीरुप दीदार ॥ दीठे हरखे हैडु
हीर, मन० ॥ ५ ॥ एक पळ धरे जो प्र-
भुजीनुं ध्यान. पग पग प्रगटे पुण्य नीधान ॥
वचन मींठां जीम मीसरी खीर, मन० ॥
६ ॥ चेन पामे चींता चकचुर, देखी दु-
श्मन नासे दूर ॥ दीन दीन वाधे संपत्ती
शीर, मन० ॥ ७ ॥ तुम नामे भव सायर
तरे, तुम नामे सवी कारज सरे ॥ ऋधी
वृद्धी पामे हीर चीर, मन० ॥ ८ ॥ चींता-
मणी जीम जीनवर जाप, क्रोड भवोना कापे
पाप ॥ रोग शोग नासे पर पीड, मन०
॥ ९ ॥ वैशाख शुदि दशम दिन जाण, प्र-

भुजी पाम्या केवळ नाणं ॥ सागर जेसा होत गंभीर, मन० ॥ १० ॥ संवत अढार. तेत्रीशमें ताम, मेडत नगर किधा गुण ग्राम, षट्कायाना प्रभुजी पीर, मन० ॥ ११ ॥ प्रभु पावापुरीमां मुगती गया, ऋषि रामचंद कहे करज्यो मया ॥ पहोंचाडो मुज भव.नळ तीर, मन० ॥ ११ ॥ इति ॥

पार्श्वनाथनो छंद (त्रोटक वृत्तम.)

प्रणमामी सदा प्रभु प्राश्वजीनं, जिन नायक दायक सुखधनं ॥ धनचारु मनोहर देहधरं, धरणीपति नित्य सुसेव करं ॥ १ ॥ करुणारस रंजित भव्यफणी, फणी सप्त सुशोभित मौलिमणि ॥ मणिकंचन रुप त्रिकोट

घटं, घटिता सुर किन्नर पार्श्वतटं ॥ २ ॥
तटिनी पती घोष गंभीर स्वरं, शरणां गत
विश्व अशेषनरं ॥ नरनारी नमस्कृत नित्य
मुदा, पद्मावति गावती गीत सदा ॥ ३ ॥
सततेंद्रिय गोप यथा कमठं, कमठासुर वारुण
मुक्तहठं ॥ हठहेलितकर्म कृतांत बळं,
बळधाम दरंदळ पंकजळं ॥ ४ ॥ जळ जद्वय
पत्र प्रभानयनं, नयनं दित भव्यतरी शमनं,
मनमथ मही रुह वन्हिसमं, समता गुण रत्न-
मयं परमं ॥ ५ ॥ परमार्थ विचार सदा
कुशळं, कुशळं कुरु मे जिन नाथ अलं ॥ अ-
लिनी नलिनी नळ नील तनं, तनुता प्रभु
पार्श्वजिनं शुधनं ॥ ६ ॥

(कळश द्रुतविलंबित्तम.)

सुधन धान्य क करुणापरं, परमसिद्धि करं दददा धरं ॥ भरतरं अश्वसेन कुळोद भवं, भवभ्राता प्रभु पार्श्वजिनंशिवं ॥७॥ इति.

शांतिनाथनो छंद.

सदा शांतीजी आश पुरो हमारी, करुं वीनती अंग उच्छाह धारी, दयावंतनुं दुःख-दारिद्र हारी, कृपावंत तुं करत कल्लोलकारी ॥ १ ॥ महावीपुल मतीवंत ए जीनराया, खटकाय राखे सदा छत्रछाया, महामोह मिथ्यातना मान मोडी, जीन मुक्ति पोहत्या कर्मकंठ तोडी ॥ २ ॥ भडभुत वैताल भय

जाय दोडी, जग मांहे तुम सम नहीं कोइ जोडी, सदा सिद्ध दाता नमुं कुटील छोडी, तुम नामे कल्याण क न कोडी ॥ ३ ॥ तुम नामे सुर असुर भय दुर नासे, धनधान धोरी घर अधिक वासे; गज केसरी अनळ दळ भय न होय ॥ अतीसे करी एहवी रीत जोय ॥ ४ ॥ गुण ग्यान करता किम पार लहीए, रसना करी एक लव लेश कहीए; महा विमळ नाण चरित्र दंशी, भणे संत गोविंद मुनीज संसी ॥ इति शांतीजीन स्तवन ॥

महावीर छंद.

चोवीसमा महावीर, शुरवीर महाधीर,

वाणी मिठी खांड खीर सिद्धारथ नंदहे, नागिंणीसि नारी जाणी, घटमां वैराग आणी योग लियो जग भाण, टाळया मोहफंदहे, चौद हजार संत तार दिया भगवंत, कर्मको कियो अंत, पाम्या सुख कंदहे ॥ कहे कवि चंद्रभाण, सुणो हो विवेकवान, महावीर कीया ध्यान. उपजे आणंदहे ॥

चिंतामणी छंद.

सुगुरु चिंतामणी देव सदा मुज सकळ मनोरथ पुरमदा ॥ कमळागर दुर न होय कदा ॥ जपता प्रभु पार्श्व नाम यदा ॥ १ ॥ जळ अनळ मतंगज भय जावे ॥ अरि चोर निकट पण नहीं आवे ॥ सिंह सर्प

रोग न सतावे ॥ धन्य धन्य प्रभु पार्श्वे
जीन ध्यावे ॥ २ ॥ मछ कछ मगर जळ
मांही भमै ॥ वडवानल नीर अथाह गमै ॥
प्रहवण बैठा नर पार पमै ॥ नित्य प्रभु पा-
र्श्व जीनंद नमै ॥ ३ ॥ विकराळ दावानळ
विश्व दहै ॥ ग्रह वस्ती धन ग्रास आकाश
ग्रहै ॥ तुम नाम लिया उपशांति लहै ॥ वन
नीर सरोवर जेम वहै ॥ ४ ॥ झरतो म-
द लोल कलोल करे ॥ भ्रमरा गुंजावर भर
रोस भरैं॥ करि दुष्ट भयंकर दुरि करैं, श्री-
पार्श्वनाथजीके समरैं ॥ ५ ॥ छाना छळ
छिद्र विनाय छलैं ॥ यश वाश सुणी मन
मांही जलै ॥ ते पिशुन्य पडे नित्य पाय
तलै ॥ जपतां प्रभू वैरी जाय टीलैं ॥ ६ ॥
धन देखी निशाचर कोढ धसैं ॥ मुझ मंदिर

पैशक देन सुखै ॥ अति उच्छव तास आवासँ अखै ॥ परमेश्वर पार्श्व जास परखैं ॥७॥ असराळ विद्राहरण हाथ हटैं, गल्लोल जीहां गज कुंभ घटै ॥ मृगराज महा भय भ्रांति मिटैं ॥ रसना जीन नायक जेह रटैं ॥ ८ ॥ फरतो चीहुं फेर फुंफार फणि ॥ धरणेंद्र धसैं धर रीस धणी ॥ भय त्रास न व्यापे तेह तणी ॥ धरतां चीत पार्श्वनाथ धणी ॥ ९ ॥ कफ कुष्ट जलोदर रोग क्रसैं ॥ गड गुंवड देह अनेक ग्रसैं ॥ विन वेषज व्याधि सब विनसैं; वामा सुत पार्श्व जे स्तवसैं ॥ १० ॥ धरणिंद्र धराधिप सूर ध्यायो ॥ प्रभु पार्श्व २ करपायो ॥ छबी रुप अनोपम जुग छायो ॥ जनन्नी धन्य वामा सुत जायो ११ ॥ करतां जीन जाप संताप कटैं, दुख

दारिद्र दोहग सोहघटै ॥ हठ छोडी जीहां रिपु जोर हठैं॥ पद्मावती पार्श्व जीहां प्रगटैं ॥ १२ ॥ ॐ नमो पार्श्वनाथाय ॥ धरणिंद्र पद्मावती सहिताय विषहर कुलयंग मंगलाय॥ ॐ -ह्रीँ श्रीँ चिंतामणी पार्श्वनाथाय॥ ॥ मम मनोरथ पुरय स्वाहा:) मंत्राक्षर गाथा गुढ पढयो ॥ चिंतामणी जाणे हाथ चढयो वळी मान महातम तेज बढयो ॥ श्री पार्श्वजीन स्तवन जेण पढयो ॥ १३ ॥ तिर्थपती पार्श्वनाथ तिलो ॥ भणतां जस वास निवास फळो ॥ मणी मंत्र सकोमळ होय मिलो ॥ अमचि प्रभु पार्श्वआश फळो॥ १४ ॥ लुंका गच्छ नायक लाभ लीए ॥ हित क्षेम करण गुरुनाम हीये ॥ दीन२ गछनायक सुख दीये ॥ किरति प्रभु पार्श्व मुख कीये. ॥ १५ ॥

पार्श्वनाथनो छंद.

प्रणमु पास जिणंद, दरसण द्विठे आणंद ॥ नगरी वणारसी ठाय, तीहां अश्वसेन राय ॥ १ ॥ वामा तस पटराणी, रुपे रंभासमाणि; तसधर पास उपन, लाध्या चउद सुपन ॥ २.॥ पोसवदि दसमीसार, जनम्या पार्श्व कुमार ॥ छपन कुमारिका आवे, स्तुति करी गुण गावे ॥ ३ ॥ सर्वे सुरपती रंगे, लइ गया मेरुने संगे; इंद्र सर्वे तिहां मीलीया, जनम मोच्छव करी वळीया ॥ ४ ॥ मुक्या माताजीनी पास, चिरंजीवो इम भाख्य; ताते मोच्छव किधो, पार्श्व कुमार नाम दिधो ॥ ५ ॥ जोवन वय जंव जाणी, जोडे प्रभावंति राणी, परणाव्या जीनराय, सेवे

सुरनर पाय ॥ ६ ॥ भोगतणा फळ लेही, दान समच्छरी देही; त्रणसें नरवर साथे ॥ संजम लीधो जगनाथे ॥ ७ ॥ तप संजम करमे वामी, जीनवर केवळ पामी ॥ पोत्या मुक्ति मोझार, जपता जयजयकार ॥ ८ ॥ एकसो वरसनुं आय नवकर शोभे काय ॥ त्रेवीशमा जीनराय, नामे नव निध थाय ॥ ९ ॥ पार्श्व उपसर्ग चुरे, मन वंछीत सुख पुरे; सफळ फळे तस आस, जे जाणसे प्रभु पास ॥ १० ॥ स्तवन सिद्ध सुखकारी भणशे जे नरनारी; भोज भणे करजोडी, पामे कल्याणनी कोडी ॥ ११ ॥ इति संपुर्ण. ॥

चोविस तिर्थंकरनुं स्तवन.

श्री रीखव अजीत संभव स्वामी, अ-

भीबंदनजी अंतरजामी, रागद्वेष दो क्षय करणा, वंदु सोळे जीन सोवन वरणा ॥ १ ॥ सूमतीजीने सूपासो, प्रभु सुगत गया मैटया गर्भा वासो, दूर कीया जन्म मरणा, वंदू० ॥ २ ॥ शीतळ श्रेयांस जीनदोइ, प्रभुजी चौदे राज रह्या जोइ, विमळ समत निर्मळ वरणा, वंदुं० ॥ ३ ॥ अनंत नाथजी अनंतज्ञानी, जासु मनरीतो वात नहीं छांनी, धर्मजीको ध्यान रुदे धरणा, वंदु० ॥ ४ ॥ शांतिनाथजी शाताकारी, कुंथु नाथजीरी जाउं हुं बलहारी, अरनाथ आतम उधरणा वंदु० ॥ ५ ॥ महिमा घणी मलीनाथ तणी, महावीरजी हूवा सासनना धणी; में झाल्यां जारां चरणा, वंदु० ॥ ६ ॥ प्रभूरे शरिर संपदा सुंदर सोहे, नीरखता नयन

तुरत मोहे, चतुरांरा तो चीत हरणा, वंदु० ॥ ७ ॥ प्रभुजीनी दीप दीप रही देही, जाने सुरनर नीरख रह्या केइ, आंख्या तो हुइ जावे अमी झरणा, वंदु० ॥ ८ ॥ प्रभु जीरो मस्तक ले पग नखतांही, जीनरो शरीर वखाण्यो सुत्रमांही, चारुही संग लेवे शरणां, वंदु० ॥ ९ ॥ तीन लोकरो रुप प्रभूजी पायो, बीजो मावडीए बेटो एसो नहीं जायो, चोसठ इंद्र भेटे चरणां, वंदु० ॥१०॥ एक समुचे अरज सुणजो सोळे, रुषी रायचंदजी आयो आपरे ओळे, मारी आवा गमण दुःख दुर करणां, वंदु० ॥ ११ ॥ संवत अढारसें त्रीसे वरसे, कीयो नागोर चोमासो भाव सरसे, जारो भजन कीया भवसागर तरणां, वंदु सोळे जीन सोवन वरणां ॥ १२ ॥

तीर्थंकरनुं स्तवन.

प्रह उठी प्रभाते वदुं, पद्म प्रभूजीना पायरे प्राणी; वासुपुज्यजी मारा मनमां वसीया, मारे कमी न रही कांयरे प्राणी, उपजे आनंद आठे जीन जपंतां ॥ १ ॥ ए दोए जीनवर. अवल बीराजे, हिंगुळ वरणां लालरे प्राणी; तीर्थ थापीने कर्मने कापी, प्रभु पाप कीया प्रेमालरे प्राणी उपजे० ॥ २ ॥ शुभ भावना ए मनमारे भाव्ये, तो आठ कर्म जाये तुटरे प्राणी; सुख संपदाने लील विलासो, भर्या भंडार अखुटरे प्राणी, उपजे० ॥ ३ ॥ चंद्र प्रभुजीने सुविधी जीनेश्वर, ए दोये वर्ण सफेदरे प्राणी; मोतीयां सरीखी जारी देहीज दीपे, मुज देखतां अ-

धिक उमेदरे प्राणी उपजे० ॥ ४ ॥ मुनी-सुव्रतजी ने नेम जीणेश्वर, ए दोय शाम वर्ण शरीरे प्राणी; इंद्रथकी पण अधिका दीपे, दीठे हरखे हैडानो हीररे प्राणी ॥ उपजे० ॥ ५ ॥ मल्लीनाथ ने पार्श्व प्रभूजी, जाणे नीलाते मोरनी पांखरे प्राणी; नीरखता तो नयन न धापे, अमीय ठरे दोय आंखरे प्राणी॥ उपजे० ॥ ६ ॥ रूप अनोपम अवल बीराजे, जाणे हीरा जडीया हेमरे प्राणी, सुरजथी जेम सवाया दीपे ॥ केणीमां आवे केमरे प्राणी॥ उपजे० ॥ ७ ॥ शीवनगरी माही साहीब बेठा, हुं नवी जाणुं दुररे प्राणी; मुज मन-डामां वसीया वालेसर, हुं समरुं उगमते सू-ररे प्राणी, उपजे० ॥ ८ ॥ ए आठे अरि-हंतने आगे, हुं तो. अरज करुं करजोडरे

प्राणी, रुषी रायचंदजी कहे मारा मनना, पुरो सघळा कोडरे प्राणी. उपजे० ॥ ९ ॥ संवत अढारने वर्ष छत्रीशे, नागोर शेहेर चोमासरे प्राणी, प्रसाद पुज्य जेमलजी केरे, मारे हैडे ते हरख उल्लासरे प्राणी. उपजे आनंद आठे जीन० ॥ १० ॥

चोवीस तिर्थंकरनुं स्तवन,

रुषभ अजीत संभव अभीनंदन ॥ नीरंजन निराकार, सुमती पद्म सुपार्श्व चंदा प्रभू, भेटया विषय विकारो, श्रीजीन मुजने पार उतारो. प्रभु हुं चाकर चरणारो ॥ श्री जीन० ॥ सुविधी सीतळ श्रेयांस वासु पुज्य मुक्ति तणा दातारो, वीमळ अनंत धर्मनाथ

शांती जीन, साताकारी संसारो, श्री जीन० कुंथुं अरनाथ मल्ली मुनी सुव्रत, पाम्या भव-जळ पारो, नमी नेमनाथ पार्श्व महावीरजी सासनना सीरदारो ॥ श्री जीन० ॥ अगी-आर गणधर विशे वीहर मान, सर्व साधु अणगारो, अनंती चोवीशीने नित्य २ वंदु कर गया खेवो पारो ॥ श्री जीन० ॥ अधम उधारण वीरूद्ध सुणी प्रभु, शरण लीयो च-रणारो; अधम उधारण परमपदा षद, अ-जर अमर अवीकारो ॥ श्री जीन० ॥ राग द्वेष कर्म बीज जे बळीया, बाळी कीधां सर्वे छारो, केवल ज्ञान ने केवळ दरशन, नीज गुण लीनो लारो ॥ श्री जीन० ॥ दान शीयळ तप भावना भावो, दया धर्म तत्व सारो, रुषी लालचंदजी एणीपेर विनवे, प्रभू मारो

करोने नीस्तारो ॥ श्री जीन मुजने पार उतारो ॥ इति चोवीस तिर्थंकरनुं स्तवन ॥

श्री नवकारनो छंद प्रारंभ.

(दोहा.)

वंछित पुरे विध परे, श्री जिनशासन सार ॥ निश्चे श्री नवकार नित, जपतां जय जयकार ॥ १ ॥ अडसठ अक्षर अधिक फळ, नवपद नवे निधान ॥ वीतराग स्वयं मुख वदे, पंचपरमेष्टि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एकज चित्ते, समर्यां संपति थाय ॥ संचित सागर सातनां, पातिक दुर पळाय ॥ ३ ॥ सकळ मंत्र शिर मुकुट मणी, सदगुरु भाषित सार ॥ सो भवियां मन शुद्धशुं, नित जपीए नवकार ॥ ४ ॥

(छंद हाटकी.)

नवकार थकी श्रीपाळ नरेसर, पाम्यो राज्य प्रसिद्ध ॥ समशान विषे शिव नाम कुमरने, सोवन पुरिसो सिद्ध ॥ नव लाख जपंतां नरक निवारे, पामे भवनो पार ॥ सो भवियां भंत्तः चोख्खे चित्ते, नित जपीए नवकार ॥ १ ॥ बांधी वडशाख्वा शिंके बेसी, हेटळ कुंड हुताश ॥ तस्करने मंत्र समप्यों श्रावके, ऊडयो ते आकाश ॥ विधि रीत जप्यो विषधर विष टाळे, ढाळे अमृत धार ॥ ॥ सो० ॥ २ ॥ बीजोरां कारण राय महाबळ, व्यंतर दुष्ट विरोध ॥ जेणे नवकारे हत्या टाळी, पाम्यो जक्ष प्रतिबोध ॥ नवलाख जपंतां थाये जिनवर, इशो छे अधिकार ॥ सो० ॥ ३ ॥ पल्लीपति शीख्यो

मूनिवर पासे, महामंत्र मन शूद्ध ॥ परभव ते राजसिंह पृंथवीपति, पाम्यो परिगळ ऋद्ध ॥ ॥ ए मंत्रे थकी अमरापुर पहोंच्यो, चारुदत्त सूविचार ॥ सो० ॥ ४ ॥ संन्यासी काशी तप साधंतो, पंचाग्नि परजाळ ॥ दीठो श्री पास कुमारे पन्नंग, अधवळतो ते टाळ ॥ संभळाव्यो श्री नवकारस्वयं मुख, इंद्रभुवन अवतार ॥ सो० ॥ ५ ॥ मन शुद्धे जपतां मयणासुंदरी, पामी प्रीय संयोग ॥ इण ध्याने कष्ट टळ्युं उंबरनुं. रक्तपितनो रोग ॥ निश्चेशुं जपतां नवनिधि थाये, धर्मतणो आधार ॥ सो० ॥ ६ ॥ घटमांही कृष्ण मूजंगम घाल्यो, धरणी करवा धात ॥ परमेष्टि प्रभावे, हार फुलनो वसुधामांहि विख्यात ॥ कमळावतिये पिंगळ कीधो,

पापतणो परिहार ॥ मो० ॥ ७ ॥ गयणांगण जाति राखी ग्रहीने, पाडी बाण प्रहार ॥ पद पंच सुणंतां पांडुपति घर, ते थइ कुंता नार ॥ ए मंत्र अमुलक महिमा मंदीर, भवदुःख भंजणहार ॥ मो० ॥ ८ ॥ कंबळ ने संबळ कादव काढयां, शकट पांचशे मान ॥ दीधे नवकार गया देवलोके, विलसे अमर विमान ॥ ए मंत्र थकी संपति वसुधां तळे विलशे जैन विहार ॥ मो० ॥ ९ ॥ आगे चोवीशी हुइ अनंती, होशे वार अनंत ॥ नवकार तणी कोइ आदि न जाणे इम भांखे अरिहंत ॥ पूरव दिशि चारे आदि प्रपंचे, समर्या संपति सार ॥ मो० ॥ १० ॥ परमेष्ठि सुर पद ते पण पामे, जे कृत कर्म कठोर ॥ पुंडरगिरि ऊपर परतख पे-

ख्यो, मणिधर ने एक मोर ॥ सहगुरुने सं-
नमुख विधि समरंतां, सफळ जनम संसार ॥
सो० ॥ ११ ॥ शूळीकारो पण तस्कर की-
धो, लोहखरो परसिद्ध । तिहां शेठे नव-
कार सुणाव्यो, पाम्यो अमरनी ऋद्ध ॥ शे-
ठने घर आवी विघ्न निवार्यां, सूर करी.
मनोहार ॥ सो० ॥ १२ ॥ पंच परमेष्टि
ज्ञानज पंचह, पंच दान चारित्र ॥ पंच
सज्झाय महाव्रत पंचह, पंच सुमति समकि-
त ॥ पंच प्रमादह विषय तजो पंच, पाळो
पंचाचार ॥ सो० ॥ १३ ॥

(कळश छप्पय.)

नित जपीए नवकार, सार संपति सु-
खदायक ॥ शुद्ध मंत्र ए शाश्वतो, इम जंपे

श्री जगनायक ॥ श्री अरिहंत सुसिद्ध, शुद्ध आचार्य भणीजे ॥ श्री उवझाय सुसाधु, पंच परमेष्टि थुणीजे ॥ नवकार सार संसार छे, कुशळलाभ वाचक कहे ॥ एक चित्ते आराधतां, विविध ऋध्धि वंछित लहे ॥ १४ ॥ इति.

अथ श्री शांतिनाथनो छंद.

नगर हस्थिणापुर अति रे भलो, जिहां जनम्या तिर्थंकर त्रिभुवन तिलो ॥ राय परुप्यो जैन खरो, श्री शांति जिनेश्वर शांति करो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सर्वारथसिद्ध थकीरे चवी, तव देश नगरमां शांति हवी शांतिजी नाम दियो सखरो, श्री शांति० ॥ २ ॥ विश्वसेन पिता अचिरा रे माया, जेणे चौद सुपन महोटां रे पाया ॥ जनम्या ती-

थंकर अमिय झरो, श्री शांति० ॥ ३ ॥ छप्पन कुमारिका उल्लास घणो, जेणे जनम महोच्छव कर्यो कुमर तणो ॥ चोसठ इंद्र आवी कळंश भरो, श्री शांति० ॥ ४ ॥ भणावी बहोतेर कळा, जेणे सहस्त्र चोसठ परणी महीला ॥ छखंड साध्या एणीय परो, श्री शांति० ॥ ५ ॥ सहस पंचोतेर वरस कह्यां. चक्रवर्तिपणे घर वास रह्यां ॥ पछे मिटाइ दियो सघळो झगडो, श्री शांति० ॥ ६ ॥ एक सहस पुरुष साथे शिक्षा, श्री जिनवरजीए लीधी दिक्षा ॥ पछे सुर नर आवी पाय पडो, श्री शांति० ॥ ७ ॥ एक मास लगे छदमस्थ रह्या, शुदि पोश नोमे दिन केवळ लह्या ॥ भरणी नक्षत्र प्रभात खरो, श्री शांति० ॥ ८ ॥ प्रभुए मोहजाळ सवि

कापी, चतुर्विध संघ तीरथ थापी ॥ चोथो दूसम सूसम आरो, श्री शांति० ॥ ९ ॥ बाशठ सहस मुनिराज थया, वळी सहस नव्यासी हुइ आजियां ॥ प्रभु तारोने वळी आप तरो, श्री शांति० ॥ १० ॥ दोय लाख नेवु सहस श्रावक गुणी, त्रण लाख त्राणी सहस श्राविका सुणी ॥ और चतुर्विध संघ खरो, श्री शांति० ॥ ११ ॥ चार हजार उहिनाणि जति, वळी त्रणशे हुवा विपुलमति ॥ नेवु गणधरनो पाप हरो, श्री शांति० ॥ ॥ १२ ॥ चार हजार त्रणशे रे कह्या, मुनि केवळ लहीने मुगति गया ॥ छ हजार मुनिवैक्रेय धारो, श्री शांति० ॥ १३ ॥ चोत्रीशे वादी भारो, वळी आठशे चौद पूरवधारी ॥ आठ करमशुं जाइ लडो, श्री शांति० ॥

॥ १४ ॥ नवपदवी मोटी रे कही, जेणे एकण 'भवमां' छए लही ॥ एसो भरियो पुण्य घडो, श्री शांति० ॥ १५ ॥ पा पा लाख कुमर सांधपणे, वळि अधलाख वरस रह्या राज्यपणे ॥ एक लाख वरसनो सर्व घडो, श्री शांति० ॥ १६ ॥ चाळीश धनुष उंची रे देही, वळि हेमवरणी उपमारे कही ॥ दीठे दील दरियाव ठरो; श्री शांति० ॥ १७ ॥ जो नाम धरावो श्रावक यति, तो अनाचार सेवो रे मती ॥ परभवथी सेंती कांइ डरो, श्री शांति० ॥ १८ ॥ त्रिविध त्रिविधे जीव मति रे हणो, ए उपदेश छे जिनराज तणो ॥ मार्ग बताव्यो शुद्ध खरो, श्री शांति० ॥ १९ ॥ आ जीव रायने रंक थयो, वळि नरक निगोदमां बहु रे रह्यो ॥ रडवडीयो जेम

गेडि दडो, श्री शांति० ॥ २० ॥ चार गतिनां रे दुःख कह्यां, जिवे अनंति अनंति वार लह्यां ॥ पची रह्यो जेम तेल वडो श्री शांति० ॥ २१ ॥ श्रद्धा सहित तुमे तप तपो, भव्य जीवो सौ तुमे जाप जपो ॥ मार्ग मळ्यो छे निपट खरो, श्री शांति० ॥ २२ ॥ संथारो एक मास तणो, सम्मेतशिखर सिद्ध ठाम भणो ॥ नवशें मुनिशुं मुगति वरो, श्री शांति० ॥ २३ ॥ मृग लंछन सेंति ध्यान रह्या, श्री शांति जिनेश्वर मुगति गया ॥ पछे मेट दियो सवि जन्म मरो; श्री शांति० ॥ २४ ॥ तुम नाम लिया सवि काज सरे, तुम नामे मुगति महेल मळे ॥ तुम नामे शुभ भंडार भरो, श्री शांति० ॥ २५ ॥ ऋषि जेमलजीए एह विनति कही, प्रभु तोरा गु-

णनो पार नही ॥ मुज भव भवनां दुःख दूर हरो, श्री शांति० ॥ २६ ॥ इति. ॥

अथ श्री चार शरणां प्रारंभ.

प्रह उठीने समरिये, हो भवियण मंगळिक शरणां चार ॥ आपदा मटी संपदा हुवे, हो भवियण दोलतनां दातार ॥ हृदयमां राखीए, हो भवियण मंगळिक शरणां चार ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अरिहंत सिद्ध साधु तणां, हो० केवळी भाषित धर्म ॥ ए शरणां नित ध्यावतां, हो० त्रुटे आठे कर्म ॥ हृ० ॥ हो० ॥ २ ॥ वाटे घाटे चालतां, हो० रात दिवस मोझार ॥ गाम. नगर पुर विचरतां हो० विघ्न निवारण हार ॥ हृ० ॥ हो० ॥ ३ ॥ ए चारे सुखकारियां, हो० ए

चारे जगसार ॥ ए चारे उत्तम कह्यां हो०, ए चारे हितकार ॥ हृ० ॥ हो० ॥४॥ डायण सायण भूतडां, हो० सिंह चित्राने शुर ॥ वैरी दुश्मन चोरटा, हो० रहे ते सघळा दुर ॥ हृ० ॥ हो० ॥ ५ ॥ राखो शरणांनी आसता, हो० नेडो नही आवे रोग ॥ आणंद वर्त्ते इण नामथी, हो० वहालो तणो संयोग ॥ हृ० ॥ हो० ॥ ६ ॥ सुखशाता वर्त्ते घणी, हो० जे ध्यावे नर नार ॥ परभव जातां इण जीवने, हो० एह तणो आधार हृ० ॥ हो ॥ ७ ॥ मन चिंतित मनोरथ फळे, हो० वर्त्ते कोड कल्याण ॥ शुद्धे मने ध्यावतां हो० निश्चे पद निरवाण ॥ हृ० ॥ हो० ॥ ॥ ८ ॥ इण सरिखो शरणो नहीं, हो० इण सरीखो नही नाम, इण सरीखो मित्र नहीं,

हो० गाम नगर पुर ठाम ॥ हृ० ॥ हो० ॥ ॥ ९ ॥ दान शियळ तप भावना, हो० जगमे तत्व सार ॥ करो आराधो भांवशुं, हो० पामो मोक्ष दुवार ॥ हृ० ॥ हो० ॥ १० ॥ जोड किधी छे जुगतिशुं, हो० पाली शेखा काळ ॥ रुषि चोथमलजी इम भणे हो० सुंणजो बाळ गोपाल ॥हृ०॥ हो० ॥११॥इति॥

अथ श्री ज्वर (ताव) नो छंद.

(दोहा)

नमो आनंदपुर नगर, अजयपाल राजन ॥ माता अजया जनमियो, ज्वर तुं कृपा निधान ॥ १ ॥ सातरुप शक्ति हुओ, करवा खेल जगंत ॥ नाम धरावे जूजुवा, पसर्यो तुं इत्त उत्त ॥ २ ॥ एकांतरो बेयांतरो, त्र-

इयो चोथो ताम, शीत उष्ण विषम ज्वरो,.
ए साते तुज नाम ॥ ३ ॥

॥ छंद ॥

ए साते तुज. नाम सुरंगा, जपतां पुरे कोड़ि उमंगा ॥ तें नाम्या जे जालिम जंगा, जगमां व्यापी तुज जस गंगा ॥ ४ ॥ तुज आगे भुपति सव रंका, त्रिभुवनमां वाजे तुज डंका ॥ माने नहि तुं केहनी शंका, तुठयो आपे सोवन टंका ॥ ५ ॥ साधक सिद्ध तणा मद मोडे, असुर सुरा तुज आगळ दोडे ॥ दुष्ट धीट्टनां कंधर तोडे, नमी चाले तेहने तुं छोडे ॥ ६ ॥ आवंतो थरहर कंपावे, डाह्याने जिम तिम बहेकावे ॥ पहिलो तुं केडमांथी आवे; सात शिरख पण शीत न जावे ॥ ७ ॥

हीं हीं हुं हुंकार करावे, पांसळियां हाडां कडकडावे ॥ उनाळे पण अमल जगावे, तापे पहिरणमां मूतरावे ॥ ८ ॥ आशो कार्तीक मां तुज जोरो; हठयो न माने धागो दोरो ॥ देश विदेश पडावे सोरो, करे सबळ तुं तातो तोरो ॥ ९ ॥ तुं हाथीनां हाडां भंजे, पापीने ताडे करपंजे, भक्ति वत्सल भावे जो रंजे, तो शेवकने कोय न गंजे ॥ १० ॥ फोडक तोडक डमरु डाकं, सुरपति सरिखा माने हाकं ॥ धमके धुंसड धांसड धाकं, चढतो चाले चंचल चाकं ॥११॥ पिशुन पछाडण नही को तोथी, तुज जस बोल्या जाय न कोथी ॥ शी अणखील करो ए थोथी, महेर करी अळगा रहो मोथी ॥१२॥

भक्त थकी एवडी कां खेडो, अवल अं-
मिना छांत रेडो ॥ लाखा भक्तनो ए
निवेडो, माहाराज मूको मुज केडो ॥ १३ ॥
लाजवशोमां अजया राणी, गुरु आण मानो
गुणखाणी ॥ घरे सीधावो करुणा आणी,
कहुछुं नाके लींटी ताणी ॥ १४ ॥ मंत्र स-
हित ए छंद जे पढशे, तेहने ताव कदी नव
चढशे ॥ कांति कळा देही नीरोगं, लेहेशे
लक्ष्मी लीला भोगं ॥ १५ ॥

॥ कलश छप्पय ॥

ॐ नमो धरि आदि, बीज गुरु नाम
वदीजे ॥ आनंदपुर अवनीश, अजयपाळ
राखीजे ॥ अजया जात अढार वांचिये
साते बेटा ॥ जपतां एहिज जाप, भक्तशुं न

करे मेटा ॥ उतरे चढियो अंग, पळमें तुज वयणे मुदा ॥ कहे कांति रोग नावे कदा, सार मंत्र गणिये सदा ॥ १६.॥ इति ज्वर-छंद समाप्तम् ॥

ए छंद सात वार, चौद वार, अथवा एकवीश वार सांभळे अथवा भणे, तो ताव जतो रहे ॥

अथ श्री महावीर स्वामीनो छंद.

सेवो वीरने चित्तमां नित्य धारो, अरि क्रोधने मन्नथी दुर वारो ॥ संतोषवृत्ति धरो चित्तमांहि, राग द्वेषथी दुर थाओ उच्छाहिं ॥ १ ॥ पडया मोहना पासमां जेह प्राणी, शुद्ध तत्वनी वात तेणे न जाणी ॥ मनु जन्म पामी वृथा कां गमो छो, जिनमार्ग छंडी

भूला कां भमो छो ॥ २ ॥ अलोभी अमानी
निरागी तजो छो, सलोभी समानी सरागी
भजो छो ॥ हरि हरादि अन्यथी शुं रमो छो,
नदी गंग मूकी गळीमां पडो छो ॥ ३ ॥
केइ देव हाथे असि चक्रधारा, केइ देव
घाले गळे रुंढमाला ॥ केइ देव उत्संगे राखे
छे वामा, केइ देव साथे रमे वृंद रामा ॥४॥
केइ देव जपे लेह जपमाळा, केइ मांसभक्षी
महा वीकराळा ॥ केइ योगीणी भोगिणी भो-
ग रागे, केइ रुद्राणी छागनो होम मागे ॥५॥
ईशा देव देवीतणी आश राखे, तदा मु-
क्तिनां सुखने केम चाखे ॥ जदा लोभना
थोकनो पार नाव्यो, तदा मधनो बिंदुओ मन्न
भाव्यो ॥ ६ ॥ जेह देवलां आपणी आश
राखे, तेह पींडने मन्न शुं लेइ चाखे ॥ दी-

न हीननी भीड ते केम भांजे, फुटयो ढोल होए कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूंढ भ्राता भजो मोक्ष दाता, अलोभी प्रभुने भजो विश्वख्याता ॥ रत्न चिंतामणि सारिखो एह साचो, कलंकी काचना पींड शुं मुत राचो ॥ ८ ॥ मंदबुद्धि शुं जेह प्राणी कहे छे, सवि धर्म एकत्व भूलो भमे छे ॥ किहां सर्षवाने किहां मेरुधीरं, किहां कायराने किहां शुरवीरं ॥ ॥ ९ ॥ किहां स्वर्णथाळं किहां कुंभखंडं, किहां कोद्रवाने किहां खीरमंडं ॥ किहां खीर सिंधु किहां क्षारनीरं, किहां कामधेनु किहां छागखीरं ॥ १० ॥ किहां सत्यवाचा किहां कूडवाणी, किहां रंकनारी किहां रायराणी ॥ किहां नारकीने किहां देव भोगी, किहां इंद्रदेही किहां कुष्टरोगी ॥ ११ ॥ कि-

हां कर्मघाती किहां कर्मधारी, नमो वीरस्वामी भजो अन्य वारी ॥ जिसी सेजमां स्वप्नथी राज्य पामी, राचे मंदबुद्धि धरी जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अथिर सुख संसारमां मन्न राचे, ते जना मूढमां श्रेष्ठ शुं इष्ट छाजे ॥ तजो मोह माया हरो दंभ रोशी, सजो पुण्य पोषी भजो ते अरोशी ॥ १३ ॥ गति चार संसार असार पामी, आव्यो आश धारी प्रभु पाय स्वामी ॥ तुहीं तुहीं तुहीं प्रभु परम रागी, भवफेरनी शृंखला मोह भागी ॥ १४ ॥ मानीये वीरजी अरज छे एक मोरी, दीजे दासकुं सेवना चरण तोरी ॥ पुण्य उदय हुवो गुरु आज मेरो, विवेके लह्यो में प्रभु दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति समाप्तम्. ॥

॥ अथ श्री वीरजिनना चउद स्वप्नुं स्तवन. ॥

रायरे सिद्धारथ घेर पटराणी, नामे त्रिशला सुलक्षणीए ॥ राजभुवन मांहे पलंगे पोढंतां, चउद सुपन राणीए लह्यांए ॥ १ ॥ पहेले रे सुपने गयवर दीठो, बीजे वृषभ सोहामणोए ॥ त्रीजे सिंह सुलक्षणो दीठो, चोथे लक्ष्मी देवताए ॥ २ ॥ पांचमे पंच वरणी फुलनी माळा, छठ्ठे चंद्र अमिय झर्यो ए ॥ सातमे सुरज आठमे ध्वजा, नवमे कळश अमिय भर्योए ॥ ३ ॥ पद्म सरोवर दशमे दीठो, खीरसमुद्र दीठो अगीयारमे ए ॥ देव विमान ते बारमुं दीठुं, रणजण घंटा वाजतां ए ॥ ४ ॥ रतननो राशि ते तेरमे

दीठो, अग्नीशिखा दीठी चउदमे ए ॥ चउद सुपन लही राणीजी जाग्यां, राय समोवड पोहोतल्यं ए ॥ ५ ॥ सुणोरे स्वामी में तों सुहणलां लाध्यां, पाछली रात रळीयामणी ए ॥ रायरे सिद्धारथ पंडित तेडया, कहोरे पंडित फळ एहनां ए ॥ ६ ॥ अम कुळमंडण तुम कुळ दीवो, धनरे महावीर स्वामी अवतर्या ए ॥ जे नर गावे ते सुख पावे, आनंद रंग वधामणां ए ॥ ७ ॥ इति समाप्तम् ॥

अथ श्री महावीरजिन छंद.

(त्रिभंगी छंद.)

जिनशासन स्वामी, अंतरजामी, शिवगति गामी सुखकारी ॥ जगमें जसवंता, श्री

भगवंता, ,सुगुण अनंता उपगारी ॥ सिद्धारथ कुळ आया, जगत सुहाया शुभपळ जाया गुणधारी ॥ धन त्रिशला नंदन, कुंळध्वज स्यंदन, जिन चरणनकी बलिहारी ॥ १ ॥ आसन कंपाया, सुरपति आया, शीश नमाया, शुभ भावे ॥ वैक्रियकी पासे, मेली उ० लासे, ले जिन तासें, गिरि आवे ॥ तिंहां प्रभुजीनो, महोच्छव कीनो, फिर मुक दीनो ज्यां महत्तारी ॥ धन त्रिशला० ॥ २ ॥ युग वंदणा करके, निद्रा हरके, स्तवन उचरके, घर जावे ॥ भइ रवि, उगाइ, भूधव तांइ, दासी वधाइ, दरसावे ॥ नृप महोच्छव कीनो, दानज दीनो, हर्षत हियो, . नीहारी ॥ धन० ॥ ३ ॥ योवंन वय मांही, नारी व्याही, अवसर पाही, जोग ग्रहे ॥ तपस्या तन तावे,

सम दम भावे, ध्यान सुध्यावे, कष्ट सहे ॥ प्रभु क्षमासागार, ज्ञान उजागर, गुण रत्नागर, अघ वारी ॥ धन० ॥ ४ ॥ शुद्ध संयम पाळे, दूपण टाळे ॥ शिवमग चाले, जग त्राता ॥ क्रोध मान ने माया, लोभ हठाया, मोह भगाया, अरि धाता ॥ शूकळ मन ध्याया; कर्म खपाया ॥ केवळ पाया, जिणवारी ॥ धन० ॥५॥ मुणि नाथ बडाइ, मन अकडाइ, आया चलाइ, प्रभु पासे ॥ विस्मय अति पाया, चित्त लजाया, गर्व गमाया, वीमासे ॥ प्रभु भर्म मीटाया जिन मग आया, संजम ठाया, तिण सारी ॥ धन० ॥ ६ ॥ परथम इंद्रभूति, पूरवधर श्रुति, त्रिपादि संयुति, फरमाया ॥ गणधर पद लीना, परम प्रवीना, सम दम भीना, तन ताया ॥ चुम्मांळीसे लारा, गण-

धर इग्यारा, भये अणगारा, व्रतधारी ॥ ॥ धन० ॥ ७ ॥ चार तीरथ थाप्यां, पाप उथाप्यां, सुव्रत आप्यां, नर नारी ॥ केइ स्वर्ग सिधाया, केइ शिव पाया, श्री जिनराया, हितकारी ॥ शैलेशी भावे, प्रभु शिव पावे, जगमें नावे, अविकारी ॥ धन० ॥ ८ ॥ प्रभु अलख निरंजन, भवदुःख भंजन, भविजन रंजन, किरपाळा ॥ जे शुद्ध मनध्यावे, दुःख पुलावे, सुख उपावे, प्रतीपाळा ॥ कहे ऋषि तिलोका, नीरंतर धोका, देजो शिव थोका, भव पारी ॥ धन० ॥ ९ ॥ इति ॥

अथ श्री शांतिनाथ स्वामीनो छंद.

शांतीनाथको कीजे जाप, क्रोड भवोनां कापे पाप ॥ शांतीनाथजी म्होटा देव, सुरनर

सारे जेहनी सेव ॥ १ ॥ दुःखदारीद्र जावे दुर, सुख सपंती होवे भरपुर ॥ ठग फांसीगर जांवे भाग, बळती होवे शीतळ आग ॥ २ ॥ राजलोकमा कीर्ति घणी, शांती जीनेश्वर माथे धणी ॥ जो ध्यावे प्रभुजीनुं ध्यान, राजा देवे अधीकुं मान ॥ ३ ॥ गडगुंबड पीडा मीट जाय, देखी दुश्मन लागे पाय ॥ सघळो भाग्यो मननो भर्म, पाम्यो समकीत काटयां कर्म ॥ ४ ॥ सुणो प्रभु मोरी अरदाश, हुं सेवक तमे पुरो आश ॥ मुजमन चिंतीत कारज करो, चींता आरति वीघ्र ज हरो ॥ ५ ॥ मेटो म्हारां आळ, जंजाळ,प्रभु मुजने तुं नयण नींहाळ ॥ आपनी कीर्ति ठामो ठाम, सुधारो प्रभु म्हारां काम ॥ ६ ॥ जो नित्य नित्य प्रभुजीने रटे, मोती बंधा

फूला कटे ॥ चेप लावण दोनुं जळ जाय, विण ओषध कट जावे छांय ॥ ७ ॥ शांतिनाथना नामथी थाय, आंखे तुट पडळ कट जाय ॥ कमळो पीळो जळ जळ झरे, शांती जीनेश्वर शाता करे ॥ ८ ॥ गरमी व्याधी मीटावे रोग, सयण मित्रनो मळे संयोग ॥ एहवा देव न दीसे ओर, नही चाले दुश्मन को जोर ॥ ९ ॥ लुंटारा सब जावे नास, दुर्जन फीटी होवे दास ॥ शांतीनाथनी कीर्ति घणी, कृपा करो तुमे त्रीभुवनधणी ॥१०॥ अरज करुंछुं जोडी हाथ, आपशुं नही कोइ छानी वात ॥ देखी रह्या छो पोते आप, काटो प्रभुजी म्हारां पाप ॥ ११ ॥ मुज मन चींतित करिये कांज, राखो प्रभुजी म्हारी लाज ॥ तुम सम जग मांही नही कोय, तुम

भजवाथी शाता होय ॥ १२ ॥ तुम पास
चले नही मरकी रोग, ताव तेजरो नांखे
तोड ॥ मारी मीठाइ कीधी प्रभु संत, तुज
गुणनो नही आवे अंत ॥ १३ ॥ तुमने सम-
रे साधु सती, तुमने समरे जोगी जती ॥
काटो संकट राखो मान, अवीचळ पदनुं
आपो स्थान ॥ १४ ॥ संवत अढार चोराणुं
जाण, देश माळवो अधिक दखाण ॥ शेहेर
जावरा चैतर मास, हुं प्रभु तुम चरणांकोदास
॥१५॥ रुपि रुगनाथजी कीधो छंद, काटो
प्रभुजी म्हारा फंद ॥ हुं जोउं प्रभुजीनी
वाट, मुज आरती चिंता सवीकाट ॥ १६ ॥

॥ छंद प्रकरण समाप्त ॥

अथ श्री दीवाळीनुं स्तवन.

पुग्व दीशे हुइ पावापुरी ॥ धन धान्य रुद्धी स्मृद्धि शुं भरी ॥ हस्तीपाळ नामे तीहां भुपाळी ॥ वीर मुगते वीराज्या दीन दीवाळी ॥ १ ॥ गौतमे गुरुनी सेवा कीधी मनमानी ॥ एक रातमे हुवा केवळज्ञानी ॥ जीके चौद राज्य रह्या भाळी ॥ वीर० ॥२॥ अढारे राय हुवा भगता ॥ दोय दोय पोसा कीधा लगता ॥ जीके वीर सामु रह्या भाळी ॥वीर०॥३॥ प्रभुए दोय दीनरो संथारो कीधो ॥ सोळ पहोर लगे उपदेश दीधो ॥ प्रभु मुगती गया कर्मने गाळी ॥वीर० ॥४॥ प्रभुए त्रीशे वर्षे संयम लीधो ॥ नींज आतम कारज सीद्ध कीधो ॥ वरस बेंताळीश दीक्षा

पाळी ॥वीर०॥५॥ प्रभुने सातसें चेला चौदसें चेली, ज्याने मुगती महेलमां दीया मेली ॥ जेणे कर्मना बीज दीयां बाळी ॥वीर०॥६॥ प्रभुने एक राणीने हुइ एक बेटी, ॥ जी के मुगती गया दुःख दीयां मेटी, जमाइ हुओ ज्यारो जमाळी॥वीर०॥७॥ प्रभुने एक बहेनने एकज भाइ ॥ जी के स्वर्गे गया समकीत पाई ॥ श्रावकनां व्रत शुद्धपाळी ॥वीर०॥८॥ रूपभदत्तने देवानंदा माता ॥ नयणे नीरखतां हुइशाता ॥ दोनुं मुगती गया कर्मने गाळी ॥ वीर० ॥ ९ ॥ सीद्धारथ राजाने त्रीशला राणी ॥ जेणे संथारो कीधो समता आणी अच्युय देवलोक टांको दीयो झाळी ॥ वीर०॥१०॥ जेणी राते वीरे॰ मुगती पामी ॥ केवळ पाम्या गौतम स्वामी ॥ ज्यारो जा-

पजपो नवकार चाली ॥ वीर० ॥११॥ सुधर्मा स्वामी हुवा पाट धणी ॥ ज्यारी कीर्ती महीमा जोर घणी ॥ दयामारग दीयो अजवाळी ॥ वीर० ॥१२॥ ज्यारी पाटे हूवा जंबु वैरागी ॥ राते परण्या प्रभाते आठे त्यागी, सोळ वर्षांमे काटी कर्म जाळी ॥वीर० ॥१३॥ आठे भामनी वैरागे भीनी ॥ प्रभाते पीयु साथे दीक्षा लीनी ॥ अवीहड प्रीत सघळी पाळी॥वीर०॥१४॥ प्रभवो पण राजानो बेटो ॥ जीके जंबु कुमर शुं हुवोरे भेटो ॥ पांचसें शुं वैराग पाम्यो ततकाळी ॥ वीर० ॥१५॥ वीशजीन समेत शीखर सीध्या ॥ अष्टापद गीरनार दोय सीध्या ॥ वासुपुज्य सीध्या चंपा चाली ॥वीर० ॥१६॥ मंहावीर चोमासो कीयो पावापुरी ॥ कारतक वदी अमावाशे

मुगती वरी ॥ भणतां सुणतां मंगळ माळी ॥वीर०॥१७॥ दीन दीवाळीनो पायो टाणो॥ तो रात्री भोजन असनादिक नहीं खाणो ॥ ज्यारो जाप जपो शीयळ पाळी ॥वीर०॥१८॥ गुरुचेलानी जोडी सूरज शशी ॥ रुषी रायचंद कहे मारे मनडे वशी ॥ में जुगतां शुं जोड जोडी टंकशाळी ॥ वीर० ॥१९॥ पुज्य जेमलजी रह्या पासो ॥ शेहेर नागोरमें कीयो चोमासो ॥ संवत अढार वर्ष पीस्ताळी ॥ वीर० ॥ २० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री महावीर स्वामीनुं हालरियुं ॥

माता त्रिशला झुलावे पुत्र पालणे, गावे हालो हालो हालरवानां गीतरे ॥ सोना

रुपाने वळी रत्ने जडियुं पालणुं, रेषम दोरी घुघरी वागे छुम छुम रीतरे ॥ हालो, हालो हालो हालो रे म्हारा वीरने ॥ १ ॥ जिनजी पास प्रभुथी वरस अढीसें अंतरे, होशे चोविशमो तीर्थंकर जित परिणाम ॥ केशी-स्वामी मुखथी एवी वाणी सांभळी, साची साची हुइ ते म्हारे अमृत वाणरे ॥ हा० ॥ ॥२॥ चौदे स्वप्ने होवे चक्री के जिनराज, वीत्या बारे चक्री नहीं हवे चक्रीराज, जिनजी पास प्रभुना श्री केशी गणधर ॥ तेहने वचने जाण्या चोवीशमा जिनराज, म्हारी कुखे आव्या त्रण भुवन शिरताज, म्हारी कुखे आव्या तरण तारण जिहाज ॥ हुं तो पुण्य पनोती इंद्राणी थइ आंज रे ॥ हा० ॥ ॥ ३ ॥ मुजने डोहळा उपन्या बेसुं गज अंबा-

डीर, सिंहासनपर बेसुं चामर छत्र धराय ॥ सहु लक्षण मुजने नंदन त्हारा तेजनां, ते दिन संभारुं ने आनंद अंग न माय रे ॥हा० ॥४॥ कर तळ पगतळ लक्षण एक हजारने आठ छे, नेहथी निश्चय जाण्या जिनवर श्री जगदीश ॥ नंदन जमणी जंघे लंछन सिंह बीराजतो, में तो पेहेले सुपने दीठो बीशवा-वीशरे ॥ हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला बंधव नंदी वर्द्धनना तमे, नंदन भोजाइयोना देवर छो सुकुमाळ ॥ हसशे भोजाइआ कही दीयर म्हारा लाडका, हसशे रमशे ने वळी चुंटी खणशे गाल, हसशे रमशे ने वळी ठुंसा देशे गालरे ॥ हा० ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेडा राजाना भाणेज छो, नंदन नवली पांचशे मामीना भाणेज छो, नंदन मामलीयाना भा-

णेजा सुकुमाळ ॥ हसशे हाथे उच्छाळी कं-
हीने न्हाना भाणेजा ॥ आंख्यो आंजीने
वळी टपकुं करशे गालरे ॥ हा० ॥ ७ ॥
नंदन मामा मामी लावशे टोपी आंगलां,
रतने जडीयां झुलडो मोती कसबी कोर ॥
निलां पीळां ने वळी रातां सरवे जातिना,
पहेरावशे मामी म्हारा नंद कीशोर रे ॥ हा०
॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सुखडली बहु
लावशे, नंदन गजुवे भरशे लाडु मोतीचुर ॥
नंदन मुखडां जोइने लेशे मामी भामणां
नंदन मामी कहेशे जीवो सुख भरपुररे ॥
हा० ॥ ९ ॥ नंदन नवला चेडा मामानी
साते सती, म्हारी भत्रीजीने व्हेन तमारा
नंद ॥ ते पण गुंजे भरवा लांकणसाइ लावशे,
तुमने जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद रे

॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजे लावशे लाख टकानो घुघरो, वळी मूडा मेना पोपटने गजराज ॥ सारस कोयल हंस तीतर ने वळी मोरजी, मामी लावशे रमवा नंद तमारे काजरे ॥ हा० ॥ ११ ॥ छप्पन कुमरी अमरी जळ कळशे नवरावीया, नंदन तमने अमने केळीघरनी मांह ॥ फूलनी वृष्टी कीधी योजन एकने मांडले, बहु चिरंजीवी आशीश दीधी तुमने त्यांह रे ॥ हा० ॥ १२ ॥ तमने मेरु गिरिपर सुरपतीये नवराविया, निरखी निरखी हरखी सुकृत लाभ कमाय ॥ मुखडा उपर वारी कोटी कोटी चंद्रमा, वळी तनपर वारी ग्रहगण समुदायरे ॥ हा० ॥ १३ ॥ नंदन नवला भणवा निशाळे पण मूकशुं गजपर अंबाडी बेसाडी म्होटे साज ॥ पसली

भरशुं श्रीफळ फोफळ नागरवेलशुं, सुखडली लेशुं, निशाळीयाने काजरे ॥ हा० ॥ १४ ॥ नंदन नवला म्होटा थाशो ने परणावशुं, वहु वर सरखी जोडी लावशुं राजकुमार ॥ सरखा सरखी वेवाइ वेवाणुं पधरावशुं, वर वहु पोंखी लेशुं जोइ जोइने देदार रे ॥ हा० ॥ १५ ॥ पीयर सासर म्हारा बेहु पख नंदन उजळा, म्हारी कूखे आव्या तात पनोता नंद ॥ म्हारे आंगणे वुठया अमृत दुधे मेहुला, म्हारे आंगणे फळिया सुरतरु सुखना कंदरे ॥ हा० ॥ १६ ॥ इणिपेरे गायुं माता त्रिशला सुतनुं हालरुं, जे कोइ गाशे लेशे पुत्र तणा साम्राज ॥ बीलीमोरा नगरे वरणव्युं वीरनुं हालरुं, जयजय मंगल होजो दीपविजय कविराजरे ॥ हा० ॥१७ ॥ इति॥

अथ श्री जीव राशिनी सज्झाय.

हवे राणी पद्मावती, जीवराशि खमा-
वे ॥ जाणपणुं जगते भलुं, एणीवेळाये आवे
॥ ते मुज मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥ अरिहंत-
नी साख ॥ जे में जीव विराधिया, चोराशी
लाख ॥ ते मुज० ॥ २ ॥ सात लाख पृथवी
तणा सातें अपकाय, सात लाख तेउकाय-
ना साते वळीवाय ॥ ते मुज० ॥ ३ ॥ दश-
लाख प्रत्येक वनस्पति, चउदे साधारण ॥बी-
ति चौरेंद्रिय जीवना, बे बे लाख विचार ॥
ते मुज० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, चा-
र चार प्रकाशी ॥ चउद लाख मनुष्यना,
ए लाख चोराशी ॥ ते मुज० ॥५॥ इणभवे
परभवे सेवीयां, जे पाप अढार ॥ त्रिविधे
त्रिविधे करी परिहरुं, दुर्गतिनां दातार ॥ ते

मुज० ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या, मृषावाद ॥ दोष अदत्तादानना, मैथुन उनमाद ॥ ते मुज० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेळ्या कारमो, कीधो क्रोध विशेष ॥ मान माया लोभ में कियां वळी राग ने द्वेष ॥ ते मुज० ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दुहव्या, दीधां कुडां कलंक ॥ निंदा कीधी पारकी, रति अरति निशंक ॥ ते मुज० ॥ ९ ॥ चाडी कीधी पारकी, कीधो थापण मोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो आण्यो भरोंसो ॥ ते-मुज० ॥ १० ॥ खाटकीने भवे में किया, जीवना वध घात ॥ चडीमार भवे चरकलां, मार्या दिननें रात ॥ ते मुज० ॥ ११ ॥ काजी मुल्लाने भवे, पढी मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक जभ्भे किय्या, कीधां पाप अघोर ॥ ते

मुज० ॥ १२ ॥ माछीने भवे माछलां झाल्यां जळवास ॥ धीवर भील कोळी भवे, मृग पाड्या पास ॥ ते मुज० ॥ १३ ॥ कोटवाळने भवे में किया, आकरा कर दंड ॥ बंधीवान मराविया, कोरडा छडी दंड ॥ ते मुज० ॥ १४ ॥ परमाधामीने भवे, दीधां नारकी दुःख ॥ छेदन भेदन वेदना, ताडन अति तिख्ख ॥ ते मुज० ॥ १५ ॥ कुंभारने भवे में किया, नीमाह पचाव्या ॥ तेली भवे तल पीलीया, पापे पिंड भराव्या ॥ ते मुज० ॥ १६ ॥ हाळी भवे हळ खेडीयां, फोडयां पृथ्वीनां पेट ॥ सुड निदान कियां घणां, दीधा बळद चपेट ॥ ते मुज० ॥ १७ ॥ माळी भवे रोप रोपिया, नानावीध व्रक्ष ॥ मूळ पत्र फळ फूलनां, लाग्यां पाप अलक्ष ॥ ते

मुज० ॥ १८ ॥ आदोवाइयाने भवे, भर्या
अधिका भार ॥ पोठी उंद कीडन पड्या, द-
या नाणी लगार ॥ ते मुज० ॥ १९ ॥ छीं-
पाने भवे छेतर्या, कीधां रंगण पास ॥ अग्नि
आरंभ कीधा घणा, धातुर्वाद अभ्यास ॥ ते
मुज० ॥ २० ॥ शुरपणे रण जुझतां, मार्यां
माणस वृंद ॥ मदिरा मांस माखण भख्यां,
खाधां मूळ ने कंद ॥ ते मुज० ॥ २१ ॥
खाण खणावी धातुनी, पाणी उलेच्यां ॥
आरंभ कीधा अति घणा, पोते पापज सं-
च्या ॥ ते मुज० ॥ २२ ॥ अंगार कर्म की-
या वळी, धरमे दवज दीधा ॥ सम खाधा
वीतरागना, कुडा कोसज कीधा ॥ ते मुज०
॥ २३ ॥ विली भवे उंदर गळ्या, गिरोळी
हत्यारी ॥ मूंढ गमारं तणे भवे, में जुं लीख

मारी ॥ ते मुज० ॥ २४ ॥ भाडभुंजा तणे भवे, एकेंद्रिय जीव ॥ जार चणा घउं शेकि-या, पाडंता रीव ॥ ते मुज० ॥२५॥ खाडण पीसण गारना, आरंभ अनेक ॥ रांधण इं-धण अग्निनां कीधां पाप उद्वेग ॥ ते मुज० ॥ २६ ॥ वीकथा चार कीधी वळी, सेव्या पंच प्रमाद ॥ इष्ट वियोग पडाविया, रुदन विषवाद ॥ ते मुज० ॥ २७ ॥ साधु अने श्रावक तणां, व्रत लेइने भाग्यां ॥ मुळ अने उत्तर तणा, मुज दुपण लाग्यां ॥ ते मुज० ॥ ॥ २८ ॥ साप वींछी सिंह चीतरा, शक-रा ने समळी ॥ हिंसक जीव तणे भवे, हिंसा कीधी सबळी ॥ ते मुज० ॥ २९ ॥ सुवावडी दुषण घणां, वळी गर्भ गळाव्या ॥ जीवाणी ढोळ्यां घणां, शीळव्रत भंजाव्यां ॥ ते मुज०

॥ ३० ॥ भव अनंता भमतां थकां कीधो देह सबंध, त्रिविधे त्रिविधे करी वोसिरुं, तीण शुं प्रतिबंध ॥ ते मुज० ॥ ३१ ॥ भवे अनंत भमतां थकां, कीधा परिग्रह सबंध ॥ त्रिविधे त्रिविधे करी वोशिरुं, तिणशुं प्रतिबंध ॥ ते मुज० ॥ ३२ ॥ भव अनंत भमतां थकां, कीधा कुटुंब सबंध ॥ त्रिविधे त्रिविधे करी वोशिरुं, तिणशुं प्रतिबंध ॥ ते मुज० ॥३३॥ इणिपरे इह भव परभवे, कीधां पाप अखत्र ॥ त्रिविधे त्रिविधे करी वोशिरुं, करुं जन्म पवित्र ॥ ते मुज० ॥ ३४ ॥ एणि विधे ए आराधना, भावे करशे जेह ॥ समय सुंदर कहे पापथी, वळी छुटशे तेह ॥ ते मुज० ॥ ३५ ॥ राग वैराडी जे सुणे, एह त्रीजी ढाळ ॥ समय सुंदर कहे पापथी, छुटे ततकाळ ॥

ते मुज० ॥ ३६ ॥ इति समाप्तम् ॥

॥ अथ श्री महावीरस्वामीनुं चोढालीयुं ॥ ढाल १ ली. ॥

सिद्धारथ कुळे तुं उपन्यां, त्रिशलादे थांरी मात जी ॥ वरशी दान देइ करी, संयम लीधो जगनाथ जी ॥ थें मन मोह्युं महावीरजी ॥ १ ॥ कंचन वरणी छे कायजी नयन न धापे जी निरखतां, दिठडे आवे छे दायजी ॥ थें मन० ॥ २ ॥ आप एकिला संयम आदर्यो, उपन्यो चोथो रे ज्ञान जी ॥ उत्कृष्ट तप थें आदर्यो, धरता निर्मळ ध्यान जी ॥ थें मन० ॥ ३ ॥ उग्र विहार थें आदर्यो, केइ वास रह्या वनवास जी ॥ केइ

वासा वस्तिये रह्या, न रह्या एक ठामें चोमास जी ॥ थें मन० ॥ ४ ॥ प्रभु पहेलो चोमासो थें कियो, अष्टी गाम मोझार जी ॥ दुजो वाणीज गाम में; पंच चंपा सुखकार जी ॥ थें मन० ॥ ५ ॥ पंच पृष्ट चंपा कर्यां, विशाळा नगरीमां तीन जी ॥ राजगृहीमां चौदे कर्यां, नालंदे पाडे लयलीन जी ॥ थें मन० ॥ ६ ॥ छ चोमासां मिथिला कर्यां, भद्रिकानगरीमां दोय जी ॥ एक कर्यो रे आलंभिया, सावर्थि नगरी एक होय जी ॥ थें मन० ॥ ७ ॥ एक अनारज देशमां, अपापा नगरी एक जाण जी ॥ एक कर्यो पावापुरि में, जहे पहोत्या निरवाण जी ॥ थें मन० ॥ ८ ॥ हस्तीपाळ राजा इम वीनवे, हुं तुम चरणारो दास जी, एक

शाळा म्हारे सूझती, आप करीने चोमास जी ॥ थें मन० ॥ ९ ॥ चाळीश चोमासां शहेरमां, दाख्यां देश नगरनां नाम जी ॥ एक अनारज देशमां, एक चोमासुं वळी गाम जी ॥ थें मन० ॥ १० ॥ प्रभु गाम नगर पुर विचर्या, भव्य जीवारां भाग्य जी ॥ मारग बताव्यो मोक्षनो, कियो उपगार अथाग जी ॥ थें मन० ॥ ११ ॥ साडाबार वरसां लगे, उपर आधो रे मास जी ॥ छद्मस्थ रह्या प्रभु एटलुं, पछी कर्यो केवळज्ञान प्रकाश जी ॥ थें मन ॥ १२ ॥ वर्ष बयाळीश पाळियो, संयम साहस धीर जी ॥ त्रीश वरस घरमां रह्या, मोक्ष दायक महावीर जी ॥ थें मन० ॥ १३ ॥ पावापुरिमां पधारिया, नर नारी हुआ उल्लास जी ॥

ऋषि रायचंदजी इम वीनवे, हुं आयो प्रभु-
जीने पास जी ॥ थें मन० ॥ १४ ॥ संवत
अढार गुणचांलीशमे, नागोर शहेर चोमास
जी ॥ पुज्य जेमलजी प्रसादथी, एक करी
अरदास जी ॥ थें मन० ॥ १५ ॥ इति. ॥

॥ ढाल २ जी. ॥

शासन नायक वीर जिणंद, तीरथनाथ
जाणे पुनम चंद ॥ चरणे लागे ज्यारे चो-
सठ इंद्र, सेवा करे ज्यारी सुर नर वृंद ॥
थें अबको चोमासो स्वामिजी अठेकरो जी,
थें पावापुरिसें पग आघो. मति धरो
जी, अठे करो, अठे करो, अठे करो, जी,
थें चरम चोमासो स्वामिजी अठे करो जी

॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ हस्तिपाळ राजा वि-
नवे, करजोड, पूरो प्रभुजी म्हारा मनरा हो
कोड ॥ शीश नमाय ऊभो जोडी हाथ, क-
रुणा सागर वांजो कृपाजी नाथ ॥ थें अ-
बको० ॥ २ ॥ रायनी राणी विनवे राजलोक,
पुण्य जोगे मळ्यो सेवानो संजोग ॥ मन
वंछित सहु मळियां जी काज; थें मया
करी मुज साम्रुं जुवो जिनराज ॥ थें
अबको० ॥ ३ ॥ श्रावक श्राविका कइ नर
नार, मळी मळी विनति करे वारंवार ॥
पावापूरिमां पधार्या वीतराग, प्रगटी पु-
ण्याइ म्हारां म्होटां जी भाग्य ॥ थें अ-
बको० ॥ ४ ॥ वळि हस्तिपाळ राजा वि-
नवे भूपाळ, प्रभु जी थें छो दीन दयाळ
॥ सूझती एक म्हारे म्होटी छे शाळ, हवे

लागी गयो छे वरषा जी काळ ॥ थें अब
को० ॥ ५ ॥ मानी विनती प्रभु रह्या चो-
मास, पांवापुरिमां हुओ हरष उंलास ॥
गौतम गणधर गुरांजीने पास, निशि दिन
ज्ञाननो करेजी अभ्यास ॥ थें अबको० ॥
॥ ६ ॥ साधु अनेक रह्या करजोड, सेवा करे
सदा होडाहोड ॥ चौद हजार चेला र-
त्नारी माळ, दीक्षा लीधी छोडी माया जं-
जाळ ॥ थें अबको० ॥ ७ ॥ वडि चेली
चंदनबाळाजी जाण, हुइ कुमारि महा सती
चतुर सुजाण ॥ मोतीनी माळा छत्रीश
हजार ॥ सघळी में बडी साधवी ए शि-
रदार ॥ थें अबको० ॥ ८ ॥ चारुइ संघ
सेवा नित्य करे, प्रभुजीने देखी देखी अं-
खीयां ठरे ॥ नव मल्लिने नव लच्छी जी

राय, ज्यारां दर्शन केरी चित्तमें च्हाय ॥ थें अबको० ॥ ९ ॥ संघ सघळा रे हुइ मन रंग रळी, पुण्य योगे प्रभुजी नी सेवा मळी ॥ ऋषि रायचंदजी विनवे जोडी हाथ, थें करुणासागर वाजो कृपाजीनाथ ॥ थें अबको० ॥ १० ॥ शहेर नागोरमें कियोजी चोमास, प्रभुजी देज्यो मुने मुगतिनो वास ॥ हुं सेवक तुमे साहिब स्वाम, म्हारे अवर देवाशुं नहि कोइ काम ॥ थें अबको० ॥११॥

॥ ढाळ ३ जी. ॥

शासन नायक श्री महावीर, तीरथनाथ त्रिभुवन धणी ॥ पावापुरिमें कियो चरम चोमास, हुइ मोक्षदायकरी महिमा घणी ॥ गौतमने मेल दियो महावीर, देवशर्माने प्र-

तिबोधका ॥ १ ॥ उतराध्यननां अध्ययन छत्रिश, कारतक वदि अमावास्ये कह्यां ॥ ऐकशोने वळी दश अध्ययन, सुत्र विपाक तणां लह्यां ॥ गौतमने० ॥ २ ॥ पोसा किधा श्री वीरजीनी पास, देश अढारना राजीया ॥ नव मल्लिने नव लच्छीजी राय, वीरना भगता आजीया ॥ गौतमने० ॥ ३ ॥ प्रभुं शासनना शिरदार, सर्व संघने संतोषने ॥ सोळ पहोर लगे देशना दीध, पछी वीर बीराज्या मोक्ष में ॥ गौतमने० ॥ ४ ॥ तिन वरसने साडा आठ मास, चोथा आराना बाकी रह्या ॥ दिन दोय तणो संथार, मौन रही मुगते गया ॥ गौतमने० ॥ ५ ॥ इंद्र आव्या जी चित्त उदास, देव देवीना साथमें ॥ जाणे झग मग लग रही ज्योत, अ-

मावश्यानी रात में ॥ गौतमने० ॥ ६ ॥ मूगति पहोत्या एका एक, सातसे हुवा ज्यारे केवळी ॥ चौदसे साधवियां हुइ सिद्ध, हुं सहुने वांदु मनरळी ॥ गौतमने० ॥ ७ ॥ रह्या त्रीश वरस घर मांय, वर्ष बेंतालि संग्रम पाळीयो ॥ प्रभु जग तारण जगदीश, दया मार्ग अजुवाळीयो ॥ गौतममे० ॥ ८ ॥ होजी देव देवी ने वळि इंद्र, निर्वाण तणो महोच्छव कीयो ॥ अरिहंत नो पडियो वीजोग, सुर नरनो भरियो हैयो ॥ गौतमने० ॥ ९ ॥ साधु साधवी करता शोक, श्रावक श्राविका पण घणा ॥ भरत क्षेत्रमां पडीयो वीजोग, आज पछी अरीहंततणो ॥ गौतमने० ॥ १० ॥ पछी बेठा सुधर्म स्वामी पाट, चारुइ संघ चरण सेवता ॥ ज्यारी पाळता

अखंडित ध्याण, सेवा करे देवीने देवता ॥ ॥ गौतमने० ॥ ११ ॥ मुगते पहोत्या श्री महावीर, प्रभु सुख पाम्या छे शाश्वतां ॥ ऋषि रायचंदजी कहे एम, महारे अरिहंत वचननी आसता ॥ गौतमने० ॥१२॥ इति॥

॥ढाळ ४ थी.॥

श्री महावीर पहोत्या निर्वाण, गौतमस्वामीए वातज जाणी ॥ गुजरांजी थें मने गोडे न राख्यो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मुगति जावणरो नाम न दाख्यो ॥ गुरांजी० ॥ २ ॥ हुं सघळा पहेला हुवो थारो चेलो, इण अवसर आघो किम मेल्यो ॥ गुरांजी० ॥ ३ ॥ प्रभु तुम चरणे महारो चित्त लाग्यो, पण थें मुने मेल दियो आगो ॥ गुरांजी०

॥४॥ मुने दरशन आपरो लागतो प्यारो, आप पहोत्या निर्वाण मूने मेल दियो न्यारो ॥ गुरांजी० ॥ ५ ॥ आपे तो मुजशुं अंतर राख्यो, पिण मे महारा मनरो दरद न दाख्यो ॥ गुरांजी० ॥ ६ ॥ हुं आडो मांडीने न ज्ञाळत पल्लो, पण साहिब काम कियो तुमे भल्लो ॥ गुरांजी० ॥ ७ ॥ हुं तुमने अंतराय न देतो, मुगतिमें जग्या बहेंची न लेतो ॥ गुरांजी० ॥८॥ हुं संकडाइ न करतो कांइ, आप साथे हुं मोक्षमें आइ ॥ गुरांजी० ॥९॥ अब हुं पुछा करशुं किण आगे, प्रभु महारो मन एक थाशुज लागे ॥ गुराजी० ॥ १० ॥ महारो सांसो कहो कूण टाळे, आप विना पाखंडीना मद कुण गाळे ॥ गुरांजी० ॥११॥ हुं तो चौदे पुरव ने चौनाणी, पिण मोहनी

कर्मे लपेटयो आणी ॥ गुरांजी० ॥ १२ ॥ इसो गौतमस्वामीये कियो विलपात, ए मोहनी कर्मनी अचरिज वात ॥ गुरांजी० ॥ १३ ॥ हवे मोहनी कर्म दुरे टाळी, गौतमस्वामीए सूरता संभाळी ॥ वीतराग राग द्वेषशुं वीत्या ॥ १४ ॥ ए आंकणी ॥ महारा चित्तमां आइ गइ चींता ॥ वीतराग० ॥ १५ ॥ तिणि वेळा निर्मळ ध्यानज ध्यायो, केवळज्ञान गौतमस्वामीए पायो ॥ वीतराग० ॥१६॥ बार वरस रह्या केवळज्ञानी, वात ज्याशुं कांइ नव रही छानी ॥ वीतराग० ॥ १७ ॥ गौतमे पण कियो मुगतिमे वासो, संसारनो सर्व देखे तमासो ॥ वीतराग० ॥ १८ ॥ जेणि राते मुगति गया वर्द्धमान, इंद्रभुतीने उपज्युं केवळज्ञान ॥

वीतराग० ॥ १९ ॥ तिण विनश्री ए वाजी दीवाळी, महोटो दिन ए मंगळ माळी ॥ वीतराग० ॥ २० ॥ रात दिवाळीनो शियळ यें पाळो, वळि रात्रिभोजन करवो टाळो ॥ वीतराग० ॥ २१ ॥ ऋपि रायचंद कहे सूणो हो सुज्ञानी, दयारुप दीवाळी थें लेज्यो मानी ॥ वीतराग० ॥ २२ ॥

॥ कलश. ॥ श्री शासन नायक मुगति दायक दया मारग अजुवाळियो ॥ श्री गौतमस्वामी, मुगति गामी; कियो चित वल्लभ चोढाळियो ॥ २३ ॥ संवत अढारे गुणचाळीशे, नागोर चोमासो निर्मळ मने ॥ पूज्य उमेलजी प्रसादे, संपूर्ण कियो दिवाळी दिने ॥ २४ ॥ इति समाप्त ॥"

अथ श्री लघु साधु वंदनानी सज्झाय

साधुजीने वंदना नित नित कीजे, प्रह उगमते सूर रे प्राणी; निच गतिमां ते नवि जावे, पामे रिद्धि भरपुर रे प्राणी ॥ सा० ॥ १ ॥ मोटा ते पंच महाव्रत पाळे, छकायरा प्रतिपाळरे प्राणी; भ्रमर भिक्षा मुनि सुझती लेवे, दोष बयालीश टालरे प्राणी ॥ सा० ॥ २ ॥ रिद्धि संपदा मुनि कारमी जाणे, दीधी संसारने पूंठरे प्राणी; एरे पुरुषारी बंदगी करतां, आठे करम जाये तुट रे प्राणी ॥ सा० ॥ ३ ॥ एक एक मूनिवर रसना त्यागी, एकेका ज्ञान भंडार रे प्राणी; एक एक मूनिवर वैयावच वैरागी, एना गूणनो नावे पाररे प्राणी ॥ सा० ॥ ४ ॥ गूण सत्तावीस करीने दीपे, जीत्या परिसा बा-

वीसरे प्राणी; बावन तो अनाचीरण टाले, तेने नमावुं मारुं शीशरे प्राणी ॥ सा० ॥५॥ ज्ञान समान ते संत मूनिश्वर, भव्य जीव बेसे आयरे प्राणी; पर उपकारी मुनि दाम न मागे, देवे ते मुगतीं पोचायरे प्राणी ॥ सा० ॥ ६ ॥ ए चरणे प्राणी शातारे पावे, पावे ते लील विलासरे प्राणी; जन्म जरा अने मरण मिटावे, नावे फरी गर्भावासरे प्राणी ॥ सा० ॥७॥ एक वचन ए सतगुरु केरो, जो बेसे दीलमांयरे प्राणी; नरक गतिगां ते नहि जावे, एम कहे जीनरायरे प्राणी ॥ सा० ॥ ८ ॥ प्रभाते उठीने उत्तम प्राणी; सूणो साधारो व्याख्यान रे प्राणी; ए पुरुषारी सेवा करतां, पावे ते अमर विमान रे प्राणी ॥ सा० ॥ ९ ॥ संवत अढार ने वर्ष

अडत्रीसे,' बुसी ते गाम चोमास रे प्राणी; मुनि आस्करणजी एणीपेरे जंपे, हुंतो उत्तम साधारो .दास रे प्राणी; साधुजीने वंदणा नित नित कीजे ॥ १० ॥ समाप्तम् ॥

अथ श्री साधु वंदंना लिख्यते.

नमु' अनंत चोवीशी, ऋषभादिक महावीर; आर्य क्षेत्रमां घाली धर्मनी सीर ॥ १ ॥ महा अतुल्य बलिनर, शुरवीर ने धीर; तीर्थ प्रवर्त्तावी, पहोत्या भवजल तीर ॥ २ ॥ श्रीमंधर प्रमुख, जघन्य तीर्थंकर वीश; छे अढीद्वीपमां, जयवंता जगदीश ॥ ३ ॥ एक शोने शितेर, उत्कृष्टा पदे .जगीश, धन्य महोटा प्रभुजी, जेहने नमावुं शीश ॥ ४ ॥ केवली दोय कोडी, उत्कृष्टा नव क्रोड; मुनि

दोय सहस्त्र कोडी, उत्कृष्ट नव सहस्त्र क्रोड ॥५ ॥ विचरे विदेहे, महोटा तपस्वी घोर, भाँषे करी वंदु, टाले भवनी खोड ॥ ॥ ६ ॥ चोवीशे जिनना, सघळा ए गणधार; चउदसेंने बावन, ते प्रणमुं सुखकार ॥ ७ ॥ जिनशाशन नायक, धन्य श्री वीर जिणंद; गौतमादिक गणधर; वर्त्ताव्यो आणंद ॥ ८ ॥ श्री रिषभदेवना भरतादिक सो पुत; वैराग्य मन आणी, संयम लियो अद्भुत ॥ ९ ॥ केवळ उपराजी, करि करणी करतुत; जिनमत दीपावी, सघळा मोक्ष पहुंत ॥१०॥ श्री भरतेश्वरना, हुवा पटोधर आठ, आदित्य जशादिक, पहोंत्या शिवपुर वाट ॥ ॥ ११ ॥ श्री जिन अंतरना, हुंवा पाट असंख्य; मुनि मूक्ति पहोंत्या; टाली कर्मनो वंक

॥ १२ ॥ धन्य कपिल मुनिवर, नमीं नमुं अणगार; जेणे ततक्षण त्याग्यो, सहस्र रमणी परिवार ॥ १३ ॥ मुनिवर हरकेशि चित्त मुनिश्वर सार, शुद्ध संयम पाली, पाम्या भवनो पार ॥ १४ ॥ वळी इखुकार राजा, घेर कमळावती नार; भगु ने जसा, तेहना दोय कुमार ॥१५॥ छये छति रिद्धि छांडीने, लीधो संयम भार; इम अल्पकालमां, पाम्या मोक्ष द्वार ॥ १६ ॥ वळी संजती राजा, हरण आहिडे जाय; मुनिवर गद भाली, आण्यो मारग ठाय ॥ १७ ॥ चारित्र लइने, भेटया गुरुना पाय; क्षत्री राज रुषीश्वर, चर्चा करी चित्त लाय ॥१८॥ वळी दशे चक्रवर्ति, राज्य रमणी ऋद्धि छोड; दशे मुक्ति महोंत्या, कुलने सोभा-

चहोंड ॥ १९ ॥ इण अवसर्प्पिणीमां, आठ राम गया मोक्षः बलभद्र मुनिश्वर, गया, पंचमे देवलोक ॥ २० ॥ दशार्णभद्र राजा, वीर वांद्या धरि मान; पछे इंद्र हठायो, दियो छकाय अभेदान ॥ २१ ॥ करकंडु प्रमुख, चारे प्रत्येक बोध; मुनि मुक्ति पहोत्या जीत्या कर्म महा जोध ॥ २२ ॥ धन्य महोटा मुनिवर, मृगापुत्र जगीश; मुनिवर अनाथी, जीत्या रागने रीश ॥ २३ ॥ वली समुद्रपाल मुनि, राजिमति रहेनेम; केशीने गौतम, पाम्यां शिवपुर क्षेम ॥ २४ ॥ धन्य विजयघोष मुनि, जयघोष वली जाण; श्री गर्गाचार्य, पहोत्या छे निर्वाण ॥ २५ ॥ श्री उत्तराध्ययनमां, जिनवरे कर्या वखाण; शुद्ध मनसें ध्यावो, मनमें धिरज आण ॥ २६ ॥ वली

खंधक सैन्यासी, राख्यो गौतम स्नेह; महावीर समीपे, पंच महाव्रत लेह ॥ २७ ॥ तप कठीण करीने, झोंशी आपणी देह; गया अच्युत देवलोके, चवी लेशे भव छेह ॥ २८ ॥ वली ऋषभदत्त मुनि, शेठ सुदर्शन सार; शिवराज ऋषीश्वर, धन्य गांगेय अणगार ॥ २९ ॥ शुद्ध संयम पाली, पाम्या केवल सार; ए चारे मुनीवर, पहोत्या मोक्ष मोझार ॥ ३० ॥ भगवंतनी माता, धन्य धन्य सती देवानंदा; वली सती जयंति, छोडी दिया घरफंदा ॥ ३१ ॥ सती मुक्ति पहोंत्यां, वली ते वीरनी नंद; महा सती सुदर्शना, घणी सतियोना वृंद ॥ ३२ ॥ वली कार्तिक शेठे, पडिमा वही शुरवीर; जम्यो महोरा उपर, तापस बळेली खीर ॥ ३३ ॥

पछी चारित्र लीधुं, मंत्री एक सहस्र आठ धीर; मरी हुवा शक्रेंद्र, चवी लेशे भव तीर ॥ ३४ ॥ वली राय उदायन, दियो भाणेजने राज; पछी चारित्र लइने, सार्यां आतम काज ॥ ३५ ॥ गंगदत्तमुनि आणंद, तरणतारण जीहाज; कुशल मुनि रोहो, दियो घणाे साज ॥ ३६ ॥ धन्य सुनक्षत्र मुनिवर, सर्वानुभुति अणगार; आराधिक हुइने, गया देवलोक मोझार ॥ ३७ ॥ चवि मुक्ति जाशे, वलि सिंह मुनीश्वर सार; बीजा पण मुनिवर, भगवतीमां अधिकार ॥ ॥३८॥ श्रेणिकना बेटा, महोटा मुनिवर मेघ; तजी आठ अंतेउरी, आण्यो मन संवेग ॥ ॥३९॥ विरपें व्रत लेइने, बांधीं तपनी तेग; गया विजय विमाने, चवि लेशे शिव वेग ॥

४० ॥ धन्य थावर्चा पुत्र, तजी बत्रिसे नार;
तेनी साथे निकल्या, पुरुष एक हजार ॥४१॥
सुकदेव सन्यांशी, एक सहस्त्र शिष्य लार;
पंचशयशुं सेलक, लिधो संयमभार ॥ ४२ ॥
सर्व सहस्त्र अढाइ, घणा जीवोने तार; पुंडर-
गिरि उपर, कियो पादोपगमन संथार
॥ ४३ ॥ आराधिक हुइने, किधो खेवो
पार; हुवा महोटा मुनिवर, नाम लिया निस्तार
॥४४॥ धन्य जिनपाल मुनिवर, दोय धनावा
साध; गया प्रथम देवलोके, मोक्ष जाशे
आराध ॥ ४५ ॥ श्री मल्लिनाथना छ मीत्र,
महाबळ प्रमुख मुनिराय; सर्वे मूक्ति सिधा-
व्या, महोटी पदवी पाय ॥ ४६ ॥ वलि जि-
तसत्रुराजा, सुबुद्धि नामे प्रधान; पोते चा-
रित्र लेइने, पाम्या मोक्ष बिधान ॥ ४७ ॥

धन्य तेतलि मुनिवर, दियो छकाय अभेदा-
न; पोटिला प्रतिबोध्या, पाम्या केवलज्ञान
॥ ४८ ॥ धन्य पांचे पांडव, तजी द्रौपदी
नार; स्थिरवरनी पासे, लियो संयम भार ॥
४९ ॥ श्री नेमिनंदननो, एहवो अभीग्रह की-
ध; मास मासखमण तप, शेत्रुंजय जई सिद्ध
॥५०॥ धर्मघोष तणा 'शिष्य, 'धर्मरुचि अण-
गार; किडियोनी करुणा, आणी दया अपार
॥ ५१ ॥ कडुवा तुंबानो किधो सघळो
अहार; सर्वार्थसिद्ध पहोत्या, चवि लेशे भव-
पार ॥ ५२ ॥ वली पुंडरिक राजा, कुंड-
रीक डगीयो जाण; पोते चारित्र लेइने,
न घाली धर्ममां हाण ॥ ५३ ॥ सर्वार्थसीद्ध
पहोंत्या, चवि लेशे निर्वाण; श्री ज्ञातासू-
त्रमां, जिनवरे कर्या वखाण ॥ ५४ ॥ गौत-

मादिक कुमर, सगा अढारे भ्रात; सर्वे अंधक त्रिष्णु सुत, धारणी ज्यारी मात ॥ ५५ ॥ तजी आठ अंतेउरी, काढी दिक्षानी वात; चारित्र लेइने, कीधो मुक्तिनो साथ ॥ ५६ ॥ श्री अनेक सेनादिक, छये सहोदर भाय; वसुदेवना नंदन, देवकी ज्यारी माय ॥ ५७ ॥ भद्दीलपुर नगरी, नाग गांहावई जाण; सुलसा घेर वधिया, सांभली नेमिनी वाण ॥ ५८ ॥ तजी बत्रीश बत्रीश अंतेउरी, निकलीया छटकाय; नल कुवेर समाणा, भेटया श्री नेमिना पाय ॥ ५९ ॥ करी छठ छठ पारणां, मनमें वैराग्य लाय; एक मास संथारे मुक्ति बीराज्या जाय ॥ ६० ॥ वली दारुक सारण, सुमुख दुमुख मुनिराय; वली कुमर अनादृष्टि, गया मुक्तिगढ मांय ॥६१॥

वसुदेवना नंदन, धन्य धन्य गजसुकुमाल; रूपे अति सुंदर, कलावंत वय बाल ॥ ६२ ॥ श्री नेमि समीपे, छांड्यो मोह जंजाल; भीक्षुनी पडिमा, गया मशाण महाकाल ॥ ॥६३॥ देखी सोमील कोप्यो, मस्तके बांधी पाल; खेरना खीरा, शीर ठविया असराल ॥ ६४ ॥ मुनि नजर न खंडी, पेटी मननी पाल ॥ परीसह सहीने, मूक्ति गया ततकाल ॥ ॥ ६५ ॥ धन्य जाली मयाली, उवयालादिक साध; सांबने प्रद्युमन, अनीरुद्ध साधु अगाध ॥६६॥ वली सचनेमी दृढनेमी, करणा कीधी वाद; दशे मुनि मुगते पहोत्या, जिनवर वचन आराध ॥६७॥ धन्य अर्जुनमाली, कर्यो कदाग्रह दूर; वीरपे व्रत लेइने, सत्यवादी हुवा शुर ॥६८॥ करी छठ छठ पारणां, क्षमा क-

री भरपुर; छ मासमांही, कर्म कियां चकचुंर ॥ ६९ ॥ कुमार अइमुते, दीठा गौतम स्वाम; सुणी वीरनी वाणी, कीधो उत्तम काम ॥ ७० ॥ चारित्र लइने, पहोंत्या शिवपुर ठाम, धूर आदि मकाइ, अंत अलक्ष मुनि नाम ॥ ७१ ॥ वळी कृष्णरायनी, अग्रमहीषी आठ, पुत्र बहु दोये, संच्या पुण्यना ठाठ ॥ ७२ ॥ यादवकुल सतियां, टाळी दुःख उचाट, पहोंत्या शिवपुरमें, ए छे सुत्रनो पाठ ॥ ७३ ॥ श्रेणिकनी राणी, काळियादिक दश जाण; दशे पुत्र वियोगे, सांभळी वीरनी वाण ॥ ७४ ॥ चंदनबाळापे, संजम लेइ हुवा जाण; तप करी देह झोशी, पहोंत्या छे निर्वाण ॥ ७५ ॥ नंदादिक तेरे, श्रेणिक नृपनी नार; सघळी चंदनबालापे, लीधो

संजम भार ॥ ७६ ॥ एक मास संथारे, पहो-
त्यां मुक्ति मोझार; ए नेवुं जणानो, अंत-
गडमां अधिकार ॥ ७७ ॥ श्रेणिकना बेटा,
जालियादिक तेवीस; विरपे व्रत लेइने, पा-
ल्यो विश्वावीश ॥ ७८ ॥ तप कठन करीने,
पूरी मन जगीश; देवलोके पहोत्या, मोक्ष
जाशे तजी रीस ॥ ७९ ॥ काकंदिनो धन्नो,
तजी बत्रीसे नार; महावीर समीपे, लीधो
संजम भार ॥ ८० ॥ करी छठ छठ पारणां,
आयंबिल उछीत्त अहार; श्री वीरे वखा-
ण्या, धन्य धन्नो अणगार ॥ ८१ ॥ एक मास
संथारे; सर्वार्थसिद्ध पहोंत; महाविदेह क्षे-
त्रमां करशे भवनो अंत ॥ ८२ ॥ धन्नानी रीते,
हुवा नवे संत; श्री अनुत्तरोववाइमां, भांखी
गया भगवंत ॥ ८३ ॥ सुबाहु प्रमुख, पांच

पांचसें नार; तजी वीरपें लीधां, पंच महाव्रत सार ॥८४॥ चारित्र लेइने, पाल्यो निरतिचार, देवलोके पहोंत्या, सुखविपाके अधिकार ॥ ८५ ॥ श्रेणिकना पौत्रा, पौमादिक हुवा दस; वीरपें व्रत लइने, काढयो देहनो कस ॥ ८६ ॥ संयम आराधीं, देवलोकमां जइ वश; महाविदेह क्षेत्रमां, मोक्ष जाशे लेइ जश ॥ ८७ ॥ बलभद्रना नंदन, निषधादिक हुवा बार; तजी पचाश; अंतेउरी त्याग दियो संसार ॥ ८८ ॥ सहु नेमि समिपे, चार महाव्रत लीध; सर्वार्थसिद्धि पहोंत्या, होशे विदेह शिद्ध ॥ ८९ ॥ धन्नो ने शालिभद्र, मुनिश्वरोनी जोड, नारीना बंधन, ततक्षण नाख्यां तोड ॥९० ॥ घरकुटुंब कबीलो, धन कंचननी क्रोड, मास मासखमण तप, टाळशे

भवनी खोड ॥ ९१॥ श्रीसुधर्मास्वामीना शिष्य, धन्य धन्य जंबुस्वाम; तजी आठ अंतेउरी, मातपिता धन धाम ॥ ९२ ॥ प्रभवादिक तारी, पहोंत्या शिवपूर ठाम; सुत्र प्रवर्तावी, जगमां राख्युं नाम ॥ ९३ ॥ धन्य ढंढण मुनिवर, कृष्णरायना नंद, शुद्ध अभिग्रह पालि, टाली दीयो भव फंद ॥९४॥ वली खंधक ऋषिनी, देह उतारी खाल, परीसह सहीने, भव फेरा दिया टाळ ॥ ९५ ॥ वली खंधक ऋषिना, हुवा पांचसें शिष्य, घाणीमां पिल्या, मुक्ति गया तजी रीस॥९६॥ संभुतिविजय शिष्य, भद्रबाहु मुनीराय; चउद पुरवधारी, चंद्रगुप्त आण्यो ठाय ॥ ९७ ॥ वळी आद्रकुमार मुनि, स्थूलीभद्र नंदिषेण, अरणिक अइमुत्तो, मुनिश्वरोनी

श्रेण ॥ ९८ ॥ चोवीसें जिननां मुनीवर, संख्या अठावीस लाख; उपर सहस्र अडतालीस, सुत्र परंपरा भांख ॥ ९९ ॥ कोइ उत्तम वांचो, मोढे जयणा राख; उघाडे मुख बोल्यां पाप लागे इम भांख ॥ १०० ॥ धन्य मरुदेवी माता, ध्यायुं निर्मळ ध्यान; गज होदे पायुं, निर्मळ केवलज्ञान ॥ १०१ ॥ धन्य आदेश्वरनी पुत्री, ब्रह्मी सुंदरी दोय; चारित्र लेइने, मुक्ति गयां सिद्ध होय ॥ १०२ ॥ चोवीसे जिननी, वडी शिष्यणी चोवीस; सती मुक्ति पहोंत्यां, पूरी मन जगीस ॥१०३॥ चोवीसें जिननी, सर्व साधवी सार, अडतालीस लाख ने आठसें शितेर हजार ॥ १०४ ॥ चेडानी पुत्री, राखी धर्मशुं प्रीत; राजिमती विजया, मृगावती सुवि-

नित ॥ १०५ ॥ पद्मावती मदणरेहा, द्रौपदी दमयंती सीता; इत्यादिक सतियो, गइ जन्मारो जीत ॥ १०६ ॥ चोवीसे जिनना साधु साधवी सार; गया मोक्ष देवलोके हृदये राखो धार ॥ १०७ ॥ इण अढीद्वीपमां, घरडा तपस्वी बाल; शुद्ध पंच महाव्रत धारी; नमो नमो तिण काल ॥ १०८ ॥ ए जतियो सतियोनां, लीजे नित प्रते नाम; शुद्धे मन ध्यावो, एह तरणनो ठाम ॥ १०९ ॥ ए जतियो सतियोशुं, राखो उज्वल भाव; एम कहे ऋषि जेमलजी, एह ज तरणनो दाव ॥ ११० ॥ संवत अढारने, वरस सातो शिरदार; गढ झालोरमां एह कह्यो अधिकार ॥ १११ ॥ समाप्तम् ॥

॥ अथ वैराग्य उपदेशक दोहा. ॥

दया सुखनी वेळडी, दया सुखनी खाण ॥ अनंत जीव मुग्ते गया, दया तणा फल जाण ॥ १ ॥ हींसा दुःखनी वेलडी, हींसा दुःखनी खाण ॥ अनंत जीव नरके गया, हींसा तणा फळ जाण ॥ २ ॥ चेतोरे भवी प्राणीया, ए संसार असार ॥ स्थीरता कोई दीसे नहीं, धन जोबन परीवार ॥ ३ ॥ धर्म करो तमे प्राणीया; धर्म थकी सुख होय ॥ धर्म करंता जीवने, दुःखीया न दीठा कोय ॥४॥ जीव दया पाळी सही, पाळी छे छ काय ॥ वस्ता घरनो प्राहुणो, मीठां भोजन खाय ॥ ५ ॥ जीव दया पाळी नहीं, पाळी नहीं छ काय ॥ सूना घरनो प्राहुणो, जेम आव्यो

तेम जाय ॥ ६ ॥ रत्न पडयुं छे बजारमां, रह्यो गरद लपटाय ॥ मुरख जाणे कांकरो, चतुरे लीयो उठाय ॥ ७ ॥ चौटा केरे बजारमें, लांबा पान खजुर ॥ चडे तो चाखे प्रेमरस, पडे तो चकना चुर ॥ ८ ॥ ए शीखामण साची कही, सर्वने हीतकार ॥ कांइक दया करुणा राखजो, तमे सांभळयानुं परीमाण ॥ ९ ॥ खरो मारग वीतरागनो, सुक्ष्म जेना भेद ॥ शाणा थइने सरदजो; मनमां राखो उमेद ॥ १० ॥ डगाव्या डगजो मती, निश्चय राखजो मन ॥ हींसाथी रहेजो वेगळा, कहेवाशो धन धन ॥ ११ ॥ ढील न कीजे धर्मनी, तप जप लीजे लुंट ॥ जेशी सीसी काचकी, जाय पलकमें फुट ॥ १२ ॥ दुक्ष्म आरो पंचमो, निश्चळ राखजो मन ॥

थोडामां नफो घणो, जेम कुंडामांही रतन ॥ १३ ॥ साधु चंदन बावना, शीतल जाको अंग ॥ लेहेर उतारे भुजंगकी, देवे ज्ञानको रंग ॥ १४ ॥ साधु बडे परमारथी, मोटो जीनको मन ॥ भर भर मुष्टी देतहे, धर्म रुपीयो धन ॥ १५ ॥ हलु करमी जीवने, रुचे ए उपदेश ॥ खरो मारग वीतरागनो, जेमां कुड नही लवलेश ॥ १६ ॥

॥ सज्जाय प्रकरण समाप्त ॥



श्री भक्तामर स्तोत्र.

(वसंततिलका वृत्तम्.)

भक्तामरप्रणतमौलिमणि प्रभाणा,
मुद्योतकं दलितपापतमो वितानम् ॥
सम्यक् प्रणम्य जिन पादयुगं युगादा,
वालंबनं भवजले: पततां जनानाम् ॥ १ ॥
य: संस्तुत: सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा
दुद्भूतबुद्धिपटुभि: सुरलोकनाथै: ॥
स्तोत्रैर्ज्जगत्रितयचित्तहरैरुदारै:
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेंद्रम् ॥ २ ॥
बुध्या विनापि विबुधार्चितपादपीठ,
स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ॥
बालं विहाय जल संस्थितमिंदुबिम्ब,
मन्य: क इच्छति जन: सहसा ग्रहीतुम् ॥३॥

वक्तुं गुणान गुणसमुद्र शशांककांतान ,
कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोपि बुद्ध्या ॥
कल्पांतकालपवनोद्धत नक्रचक्रं,
कोवा तरीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥
सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश,
कर्तुं स्तवं विगत शक्तिरपि प्रवृत्तः ॥
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेंद्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम्॥५॥
अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरी कुरुते बलान्मांम् ॥
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चारुचाम्रकलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥
त्वत्संस्तवेन भवसंताति संन्निबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ॥
आक्रांतलोकमलि नीलमशेषमाशु,

सूर्यांशुभिन्नमिवशार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥
मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद,
मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ॥
चेतो हरिष्यतिसतां नलिनीदलेषु,
मुक्ता फलद्युतिमुपैति ननुदबिंदुः ॥ ८ ॥
आस्तां तव स्तवनमस्त समस्तदोषं,
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानिहंति ॥
दुरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव
पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाजि ॥ ९ ॥
नात्यद्भूतं भुवनभूषणभूतनाथ,
भूतैर्गुणैर्भुवि भवंतमभिष्टुवंतः ॥
तुल्याभवंति भवतोननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं, यइह नात्मसमंकरोति ॥ १० ॥
दृष्ट्वा भवंतमनिमेष विलोकनीयं,
नान्यत्र तोषमुपयातिजनस्य चक्षुः ॥

पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिंधोः,
क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ॥११॥
यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ॥
तावंतएव खलु तेप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समानमपरं नहि रुपमस्ति ॥ १२ ॥
वक्रं क ते सुरनरोरगनेत्रहारि,
निःशेषनिर्ज्जितजगत्रितयोपमानम् ॥
बिम्बं कलंकमलिनं क निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पांडुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥
संपूर्णमंडल शशांक कलाकलाप,
शुभ्रा गुणास्त्रि भुवनं तव लंघयंति ॥
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर नाथमेकं,
कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥
चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांग नाभि-

नींतं मनागति मनो न विकारमार्गम् ॥
कल्पांतकालमरुता चलिताचलेन,
किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥
निर्धुमवर्त्तिरपवर्ज्जिततैलपूरः,
कृत्स्नं जगत्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥
गम्योन जातु मरुतां चलिताचलानां,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥१६॥
नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगंति ॥
नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभाव,
सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र लोके ॥१७॥
नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं,
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकांति,
विध्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥

किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ ॥
निष्पन्नशालि वनशालिनि जीव लोके,
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभार नम्रैः ॥ १९ ॥
ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्वं,
नैवंतु काचशकले किरणाकुलेपि ॥ २० ॥
मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनोहरति नाथ भवांतरेपि ॥ २१ ॥
स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता
सर्वादिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं,

प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥
त्वामामनंति मुनयः परमं पुमांस,
मादित्यवर्णममलं तमसः पुरस्तात ॥
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयंति मृत्युं,
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनींद्र पंथाः ॥२३॥
त्वामव्ययं विभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं,
ब्रह्माणमीश्वर मनंतमनंगकेतुम् ॥
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,
ज्ञानंस्वरुपममलं प्रवदंति संतः ॥ २४ ॥
बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्,
त्वं शंकरोसि भुवनत्रयशंकरत्वात् ॥
धातासि धीर शिवमार्ग विधेर्विधाना,
व्यक्तंत्वमेव भगवन्पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥
तुभ्यं नमास्त्रिभुवनार्त्तिहरागनाथ,
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ॥

तुभ्यं नम स्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिनभवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥
को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै,
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥
दोषैरुपात्तविविधाश्रय जातगर्वैः ·
स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥
उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख,
गाभाति रूपममलं भवतोनितातम् ॥
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं,
बिंब खेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥ २८ ॥
सिंहासने मणिमयुखशिखाविचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ॥
बिंबं वियद्विलसदंशुलतावितानं,
तुंगोदयाद्रिशिरसीवसहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥
कुंदावदात चलचामरचारुशोभं,

विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतम् ॥
उद्यच्छशांकशुचिनिर्जरवारिधार,
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौंभम् ॥ ३० ॥
छत्र त्रयं तव विभाति शशांककांत,
मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम् ॥
मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्ध शोभं,
प्रख्यापयत्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥
गंभीरताररवपुरितदिग्विभाग,
स्त्रैलोक्यलोकशुभसंगमभूतिदक्षः ॥
सद्धर्मराजजयघोषणघोषकःसन् ,
खे दुंदुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ॥ ३२ ॥
मंदारसुंदर नमेरुसुपारिजात,
संतानकादिकुसुमोत्करवृष्टिरुद्धा ॥
गंधोदबिंदुशुभमंदमरुत्प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा ॥३३॥

शुभत्प्रभावलयभुरिविभा विभोःते,
लोकत्रयद्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती ॥
प्रोद्यत् दिवाकरनिरंतरभुरिसंख्या,
दीप्त्याजयत्यपि निशाभपि सोमसौम्याम् ।३४।
स्वर्गापवर्गगममार्गविमार्गणेष्ट,
सद्धर्मतत्वकथनैकपटुस्त्रिलोक्या ॥
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व,
भाषास्वभावपरिणामगुणैःप्रयोज्यः ॥ ३५ ॥
उन्निद्रहेमनवपंकजपुंजकांति,
पर्युल्लसन्नखमयूख शिखाभिरामौ ॥
पादौ पदानि तव यत्र जिनेंद्र धत्तः;
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥ ३६ ॥
इत्थं यथा तव विभुतिरभुज्जिनेंद्र,
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥
याहक्प्रभा दिनकृतः प्रहतोधकारा,

ताहक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोपि ॥ ३७ ॥
श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल,
मत्त भ्रमद् भ्रमर नादविवृद्धकोपम् ॥
ऐरावताभमिभमुद्धत्तमापतन्तं,
दृष्ट्वाभयं भवतिनो भवदाश्रितानाम् ॥ ३८ ॥
भिन्नेभकुंभगलदुज्वल शोणिताक्त,
मुक्ताफलप्रकार भूषित भूमिभागः ॥
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रमयुगा चलसंश्रितं ते ॥ ३९ ॥
कल्पांतकालपवनोद्धतवह्निकल्पं,
दावानलं ज्यलितमुज्ज्मुत्फूलिंगम् ॥
विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतंतं,
त्वन्नामकीर्त्तनजलं समयत्यशेषम् ॥ ४० ॥
रक्तेक्षणं समदकोकिलकंठनील,
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्कणमापतंतम् ॥

आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंक,
स्त्वन्नामनागदमनीहृदियस्यपुंसः ॥ ४१ ॥
वल्गतुरंगगजगर्जितभीमनादं,
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ॥
उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं,
त्वत्कीर्तनात्तमइवाशुभिदामुपौति ॥ ४२ ॥
कुताग्रभिन्नगजशोणित वारिवाह,
वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ॥
युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा,
स्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो लभंते ॥ ४३ ॥
अभोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र,
पाठीनपीठभयदोल्वणवाडवाग्नौ ॥
रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा,
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजंति ॥ ४४ ॥
उद्भूतभीषणजलोदर भारभुग्नाः,

शोच्यांदशामुपगताश्च्युत जीविताशाः
त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा,
मर्त्या भवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४५ ॥
आपादकंठ मुरुशृंखलवेष्टितांगा,
गाढं बृहन्निगडकोटि निघृष्टजंघाः ॥
त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः
सद्यः स्वयं विगतबंधभया भवंति ॥ ४६ ॥
मत्त द्विपेंद्रमृगराज दवानलाहि,
संग्राम वारिधिमहोदरबंधनोत्थम् ॥
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४७ ॥
स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्र गुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मयारुचिरवर्णाविचित्रपुष्पाम् ॥
धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं,
तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४८ ॥

॥श्री चिन्तामणिं पार्श्वनाथस्तोत्र॥

(शार्दूलछंद.)

किं कर्पूरमयं सुधारसमयं किं चन्द्ररोचिर्मयं । किं लावण्यमयं महामणिमयं कारुण्यकेलिमयम् ॥ विश्वानंन्दमयं महोदयमयं शोभामयं चिन्मयं । शुक्लध्यानमयं वपुर्जिनपतेर्भूयाद्भवालम्बनम् ॥ १ ॥

भावार्थः—श्री जीनेंद्र भगवाननुं शरीर अहा ! कर्पुर जेवुं श्वेत, अमृत जेवुं मीष्ट, चंद्रनी कान्ति जेवुं शीतळ अने प्रकाशीत; सुंदर मोटा मणी जेवुं तेजस्वी, कारुण्यतानी भुमीकारुप, समग्र विश्वने आनंदमय, महा उदय-

वाळुं, शोभावाळुं, सचीत स्वरूप, शुक्ल ध्यानमां निमग्न, एवा श्री जिनेन्द्र भगवान संसारना आधार रूप हो. ॥ १ ॥

पातालं कलयन् धरां धवलयन्नाकाशमापूरयन् । दिक्चक्रं क्रमयन् सुरासुरनरश्रेणींच विस्मापयन् ब्रह्माण्डं सुखयन् जलानि जलधेः फेनच्छलाल्लोलयन् । श्रीचिन्तामणि पार्श्वसंभवयशोहंसश्चिरं राजते ॥२॥

भावार्थः—पाताळमां पण प्रवेश करी रहेलो, पृथ्वीने उज्वल करतो, आकाशमां सर्व स्थळे व्याप्त थतो, दिशाओना चक्रने पण उल्लंघी जतो, देव दानवोने विस्मय पमाडतो, त्रणे जगतने सुख आपतो; समुद्रमां श्वेत फी-

णथी शोभायमान जळने इहोळी नांखतो; एवो श्री पार्श्वनाथ चिंतामणीनो यशरूपी हंस चीरंकाल शोभे छे. ॥ २ ॥

पुण्यानां विपणिस्तमोदिनमणिः
कामेभकुम्भेश्रृणिर्मोक्षे निस्सरणिः
सुरेन्द्रकरिणी ज्योतिःप्रकाशारणिः॥
दाने देवमणिर्नतोत्तमजन श्रेणिः
कृपासारिणी। विश्वानन्दसुधाघृणि-
र्भवभिदे श्रीपार्श्वचिन्तामणिः ॥३॥

भावार्थः—पुण्यना हाट (भंडार) रूप, पापरूपी अंधकारमां सूर्यरूप, विषयरूपी हाथीने वश करवामां अंकुशरूप, मोक्षमां गमन करवा माटे निसरणीरूप, आत्मज्ञान रूप ज्योतीने प्र-

काश आपवामां अरणीना वृक्ष समान, दान देवामां इन्द्र समान, एमनी (श्री पार्श्वनाथनी) आगळ नमन करी रहेली सज्जन पुरुषोनी पंक्तिने कृपानी नदी समान, विश्वमां आनंदरुपी अमृतना तरंग समान श्री पार्श्वचिंतामणी (भगवान) संसारसमुद्रनो नाश करनार आपज छो. ॥ ३ ॥

श्री चिन्तामणि पार्श्वविश्वजनता-
संजीवनस्त्वं मया । दृष्टस्तात ततः
श्रियः समभवन्नाशक्रमाचक्रिणम् ॥
मुक्ति क्रीडति हस्तयोर्बहुविधं
सिद्धं मनोवाछितं । दुर्दैवं दुरितंच
दुर्दिनभयं कष्टं प्रणष्टं मम ॥ ४ ॥

भावार्थः—हे तात ! (हे श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ !) आखा विश्वना जीवनरुप, सच्चीदानंद श्री चिंतामणी मार्श्वनाथ ज्यारथी मने आपनां दर्शन थयां छे, त्यारथीज इन्द्र देव तथा चक्रवर्ति पर्यंतनी समृद्धी मने प्राप्त थइ छे. मारा हस्तमांज मुक्तिरुपी देवी क्रीडा करी रही छे, मारी विविध प्रकारनी मननी अभिलाषाओ सिद्ध थइ छे, अने मारुं दुर्दैव, मारुं पाप अने मारुं दुःख तथा मारो दारीद्रतानो भय समूळ नाश पाम्यो छे. ॥ ४ ॥

यस्यप्रौढ तमप्रतापतपनः प्रोद्दामधामा जग—जंघालः कलिकालकेलिदलनो मोहान्धविध्वंसकः ॥ नित्योद्योतपदं समस्तकमलाके-

लिगृहं राजते । स श्रीपार्श्वजिनो जनेहितकृते चिन्तामणिः पातु माम् ॥ ५ ॥

भावार्थ—हे अतिशय प्रतापवान् सूर्यरुप, अति उत्कृष्ट जगत्रुपी धामने तथा कळीकाळना महिमाने दहन करनारा, मोहरुपी अंधकारनो नाश करनारा, अने जेनुं समस्त प्रकारनी समृद्धी धारण करनार पद हमेश शोभी रह्युं छे एवा श्री पार्श्वनाथ भगवान जगतना जीवोनुं हीत करनार चिंतामणी मारुं रक्षण करो.॥५॥

विश्वव्यापितमो हिनस्ति तरणिर्बालोपि कल्पाङ्कुरो । दारिद्राणि गजावलीं हरिशिशुः काष्ठानि वह्नेः

कुणः ॥ पीयूषस्य लवोपि रोगनिवहं यद्वत्तथा ते विभो । मूर्त्तिः स्फूर्त्तिमती सती त्रिजगतीकष्टानि हर्त्तुं क्षमा ॥ ६ ॥

भावार्थः—सूर्य बाल्यावस्थामां होवा छतां पण विश्वमां व्यापी रहेला अंधकारनो नाश करे छे, कल्पवृक्षनो एकज अंकुर (फणगो) दारिद्रतानो नाश करवामां समर्थ छे, सिंहनुं एक नानुं बाळकज हाथीओना समुहनो नाश करे छे, अग्निनो एक सुक्ष्म कण काष्टना जथ्थाने भस्मवत् करी नांखे छे, अमृतनुं एकज बिंदु रोगने निर्वंश करे छे; तेज प्रमाणे हे विभो! मनुष्योनी मतिमां स्फुरणा करनारुं तमारुं शरीर त्रणे जगतनां दुःखो हणवाने माटे समर्थ छे. ॥ ६ ॥

श्रीचिन्तामणिमन्त्रमोंकृतियुतं
ह्रींकारसाराश्रितं । श्रीमर्हंनमिऊ-
णपाशकलित त्रैलोक्यवश्यावहम ॥
द्वेधाभूतविषापहं विषहरं श्रेयःप्रभा
याश्रयं । सोल्लासं वसहाङ्कितं जिन-
फुल्लिङ्गा—नन्दनं देहिनाम ॥ ७ ॥

भावार्थः—ॐ शब्दनी आकृतिवाळो ह्रीं-
कारथी युक्त श्री मर्हंनमिउणना मंत्रथी बद्ध
थयेलो त्रणे लोकने वश वर्तावनार, विषयरुपी
झेरनो नाश करनार, कल्याणकारक, प्रभाव-
वाळो, व, स, ह, इत्यादि अक्षरोथी युक्त एवा
मनुष्य मात्रने आनंदरुप श्री चिंतामणी नामनो
मंत्र छे. ॥ ७ ॥

"ह्रीँश्रीँकारवरं नमोक्षरपरं ध्यायन्ति ये योगिनो-हृत्पद्मे विनिवेश्य पार्श्वमधिपं चिन्तामणिसंज्ञकम् ॥ भाले वामभुजे च नाभि करयोर्भूयो भुजे दक्षिणे । पश्चादष्टदलेषुते शिवपदं द्वित्रैर्भवैर्यान्त्यहो॥८

भावार्थः–ह्रीँ श्रीँ इत्यादि आकारथी युक्त मंत्रनुं जे योगीओ हृदयकमळमां अधिष्टाता पार्श्वनाथ भगवानना चिंतामणीनी संज्ञावाळो जेनी पूर्वमां नमो मुकेलो छे एवो ह्रीँ श्रीँकारादि उत्तम वर्णयुक्त मंत्रने हृदयकमळमां धारण करीने कपाळने विषे, डाबा हाथने विषे, नाभिमां अने घणे भागे जमणा हाथमां अने त्यार

पछी आठे दलोने विषे ध्याम धरे छे ते बे त्रण भव पछी मोक्ष धाममां सिद्धारे छे. ए शुं आश्चर्यजनक नथी ! ॥ ८ ॥

(स्रगधरा छंद.)

नो रोगा नैव शोका न कलहकलना नारिमारिप्रचारो–नैवाधि र्नासमाधिर्नच दरदुरिते दुष्टदारिद्रता नो ॥ नो शाकिन्यो ग्रहा नो न हरिकरिगणा व्यालवैतालजाला–जायन्ते पार्श्वचिन्तामणिमतिवशतः प्राणिनां भक्तिभाजाम् ॥ ए ॥

भावार्थ–जे भक्तिवान प्राणीओ श्री चिंतामणी पार्श्वनाथमां पोतानी वृत्ति जोडे छे,

तेओने रोग, शोक, क्लेश, अशान्ति, भय, पाप दुष्ट दारिद्रपणुं शत्रुद्वारा उपजती व्याधि, तथा शाकिनी; भूत, पिशाच विगेरे तथा हाथी तथा सिंहना समुहो दुःखरुप थइ शंकतां नथी ॥९॥

(शार्दूल छंद.)

गीर्वाणद्रुमधेनुकुम्भमणयस्त-
स्याङ्कणे रङ्गिणो देवा दानवमानवाः
सविनयं तस्मै हितध्यायिनः ॥ ल-
क्ष्मीस्तस्य वशा वशेव गुणीनां ब्रह्मा-
ण्डसंस्थायिनो । श्रीचिन्तामणिपा-
र्श्वनाथमनिशंसंस्तौ तियोध्यायते १०

भावार्थः—जे प्राणी श्री चिंतामणी पार्श्वनाथनी हमेश स्तुति करेछे तथा ध्यान धरेछे,

तेना आंगणामां रागादि आनंद थया ज करे छे. तेने कल्पवृक्ष, कामदुघा धेनु पारसमणी इत्यादि अलौकिक पदार्थ प्राप्त थायछे, देवदानव अने मनुष्यो सुद्धां विनयथी तेना हितनुं ज चिंतवन कर्या करे छे. गुणवान पुरुषोने आ ब्रह्मांडमां प्राप्त थती समस्त लक्ष्मी तेने वश वर्ते छे. ॥ १० ॥

(मालीनी छंद.)

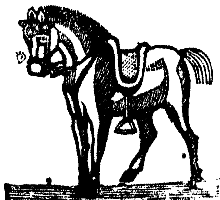
इति जिनपतिपार्श्वः पार्श्वपार्श्वाख्ययक्षः प्रदलितदुरितौघःप्रीणितप्राणिसार्थः त्रिभुवनजनवांच्छादानचिन्तामणिकः । शिवपदतरुबीजं बोधिबीजं ददातु ॥ ११ ॥

भावार्थः—आ प्रमाणे जीनपति पार्श्वनाथ

भगवाननी पासे रहेनारो पार्श्व नामनो यक्ष, जेनां पापकर्मो नष्ट थइ गयां छे, अने ते भगवाने जनसमुदायने संतुष्ट कर्यां छे, अने जे त्रणे भुवननी वांच्छा पुरवामां चिंतामणी समान छे, ते मोक्षपद रुपी वृक्षनुं बीजरुप समकीत मने अर्पण करो ! ! ॥ ११ ॥

॥ इतिश्रीचिन्तामणिपार्श्वनाथस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ स्तोत्र प्रकरण समाप्त ॥



प्रदेशी राजाना प्रश्नोत्तर.

प्र०—प्रदेशी राजा केशीगणधरने निवेदन करे हे स्वामीन! आप कहो छो के जीवने शरीर जुदा छे, अने जेवुं कर्युं होय एवुं भोगवे, तो मारा दादा नास्तिकमती हता, घणी हिंसा करता, ते तमारा कहेवा मुजब नर्के जवा जोइए; अने तेम थयुं होत तो नर्कना दुःख जोइ मने सूचना करत के हे पुत्र! तुं पाप न कर; पाप करवाथी महारा जेवा दुःख भोगववा पडशे; एवी रीते आवीने कहे तो हुं जीव ने शरीर जुदा मानुं.

उ०—केशीगणधर प्रत्युत्तर कहे हे राजन! तारी सूरिकंताराणी सर्व प्रकारना आभुषण पेहेरी बेठी छे, एवामां कोइ उलंठ पुरुष तेनी

साथे खोटी चेष्टा करे, तो तुं शुं करे ? राजा कहे तेने तो ठार मारुं, जेम तुं तेनो विनाश करे ने जवा दे नही, तेम नर्कमांथी परमाधामी आववा दे नही, एटले शी रीते आवे ? ॥१॥

प्र०—राजा कहे आपे कह्युं ते सत्य, पण माहरी दादी घणाज धर्मीष्ट हता, दान देता हता ते तमारा कहेवा प्रमाणे देवलोके जवा जोइए, ते आवीने कहें के हे पुत्र ! तु धर्म कर जेथी महारा जेवा देवलोकना सुख मळशे: एवुं आवीने कहे तो हुं जीव जुदो मानुं.

उ०—केशीगणधर बीजो प्रश्न सांभळी कहे छे के तुं नाही धोइ आभुषण पेहेरी देव पुजवा जतो होय, तेवामां तने कोइ विष्टानी कोटडी (संडास) मां बोलावे तो त्यां जाय ? राजा कहे ते वचन मात्र सांभळुं नही. तो अनेक सुखमां लीन थएला देवता आ दुर्गंध

युक्त मनुष्य लोकमां आवी शके ? मनुष्य लोकनी दुर्गंध ५०० योजन सुधी उछळे छे; ते दुर्गंधने लीधे आवी शकता नथी. ॥२॥

प्र०—प्रदेशी राजा कहे स्वामीन ! कोइ जुवान पुरुष नीरोगी माणस सर (बाण) नाखे, तेवुंज बाण कोइ रोगी पुरुष बाळ अवस्थावाळो नाखी शकशे ? अर्थात नही नाखी शके. तमारा कहेवा प्रमाणे जीव तो तेमां पण छे, पण शरीरना बळनी खामीथी नाखी शकतो नथी; वास्ते शरीर छे तेज छे, बीजुं कंइ नथी.

उ०—वळी तेहनो उत्तर केशीगणधर कहे छे. हे राजन् ! जिम कोइक बाळक सुकुमाळ छे, अथवा कोइक वृद्धपुरुष कठिन छे. हवे ते बिहुं जण संघाते शर नाखे. तिहां बालकनो शर (बाण) कोमलपणा माटे टूंकडो पडे. मो-

टानो शर कठिनपणा माटे वेगलो पडे. एतो शरीरनो गुण. पण जीवनो विशेष नहि. जिम कावडिनो दृष्टांत. एक कावडिं (कावड) नवा वांशनी होय ते घणो भार वहे अने तेहज कावडि जीर्ण वांसनी थई तेवारे भारने निरवही (उपाडी) न शके, तेम कावडि नवा वांस समान छे. शरीरनी निर्बलता सबलता शरीरनो गुण छे. तेणे करी वेगलो ढूंकडो बाण जाय. ते माटे शरीरनो गुण छे पण जीव तो सदृश (सरखा) जाणवा. ॥ ३ ॥

प्र०—वळी प्रदेशीराजा पूछे हे स्वामिन् ! तुम्हे कह्युं ते प्रमाण, तुम्हारी मति आगळ महाराथी जवाब न थाय पण एक चोरने जीवतो तोळी जोयो पछी शस्त्रादि उपक्रम विना श्वासरुंधनादिके करी मार्यो. ते वळी मूवा पूंठे तोळी जोयो पण तेटलोज थयो. अनंत शक्ति-

वंत जीव शरीरमांहे छे तो ते जीव गया पूंठे तोलतां ओछो केम न थयो ? ते माटे म्हारुं वचन ते साचुं. जीव तेहज शरीर पण जुदा नहि.

उ०—चोथा प्रश्ननो उत्तर हवे कहे छे के हे राजन् ! जेम कोइक पुरुष डाह्यो कौतुकवंत चांबडानो दडो मसक ठालो (खालि) थको तोली जोए. तेवारपछी ते मसक वायरा साथे भरे, तेवार पछी तोले पण कांइ फेर न पडे. तो हे राजन् ! ते अधिक न्यून थाय ? राजा कहे, ना स्वामी. तेहनी परे वायुसमान जीव जाणवो. मसकसमान शरीर जाणवुं.जेम वायु पूर्ण मसक पाणी मांहे तरे. मन गमे भार मूकीए तो पण खमे तेणी परे जीवशक्ति जाणवी. एटला माटे, जीव शरीर जूजूया (जुदा) जाणवा. ॥ ४ ॥

प्र०—वळी राजा कहे तमे कहो ते साचुं पण जीव जोवानी बुद्धिए एक चोरने शस्त्रोपघात विना मारी खंडे खंड करीने सप्तधातु भेदी भेदी जोयो पण किहांए जीवनो प्रदेश दीठो नहि, ते माटे शरीर तेहज जीव पण जूजूया (जुदा जुदा) नहि.

उ०—एम सांभळी वळी केशीगणधर उत्तर कहे छे. हे राजन् ! जेम कोइक नगरने विषे चार कबाडी पुरुष कबाडीने अर्थे वनमां गया. तिहां ते एक पुरुषने कहेवा लाग्या जे अमे कबाडीने (लाकडा लेवा) जइए छीए. तुं पाछळथी अरणीनुं तथा वांसनुं काष्ट लइ ए मांहे अग्नि छे ते अग्नि पेदा करी भोजनपाणीनी सामग्री करजे एम कहीने वनमांहि गया. पाछळ ते अज्ञानी समजतो नथी तेणे ते काष्ट खंडोखंड करी जोयुं पण अग्नि न दीठो. भूंठो

थई बेसी रह्यो ते साथी (लोको) फरी आ॰ व्या तेणे हील्यो निंद्यो हीणमति तेणे वळतुं फरी काष्ट आणी मथीने अग्नि उपाइ (पाडीने) जमण कीधुं. सुखी थयां, तेम हे राजन् ! शरीरमां जीव जाणवो. जेम दूधमांहि घृत, जेम कुसुम (फूल) मांहि वास, जेम काष्ट- मांहि अग्नि, जेम तलमांहि तेल, पाषाणमांहि सुवर्ण, तेम शरीरमांहे जीव जाणवो. पण डहा- पणथी जणाय. ॥ ५ ॥

प्र०—वळी राजा कहे हे स्वामी ! तुमे कहो छो ते प्रमाण. पण जेम घटपटस्तंभादि सकलपदार्थ प्रत्यक्ष दीसे छे, तेम जीवपदार्थ बोर प्रमाण आमळा प्रमाण मात्र पण जीव देखाडो तो हुं प्रत्यक्षपणे मानुं. अन्यथा हुं न मानुं. में कह्युं ते साचुं.

उ०—ए छठो प्रश्न सांभळी वळी केशी-

गणधर कहे हे राजन् ! आ वाडी वनखंडमांहि जोइने, पत्र पुष्प फल वेली हाले चाले कहे राजा ते शाने बले ? तेवारे राजा कहे स्वामिन् ! वायराने बले (जोरथी). तेवारे केशी-गणधर कहे तुं वायरो मुजने हाथे झाली देखाडे तो हुं तुजने जीव देखाडुं. एम कह्युं तेवारे राजा कहे स्वामिन् ! वायरो झांल्यो न जाय. तो गुरु कहे जीव झाल्यो न जाय. जेम वायरो हालवा चालवा लक्षणे जाणीए, तेम जीव शरीरने विषे गमनागमनादि क्रियाए जाणीए अने प्रत्यक्षपणे न दीसे ते तो कह्युं छे के दशस्थानकप्रत्ये छद्मस्थमनुष्य सर्व भाव न जाणे न देखे, ते जेम धर्मास्तिकाय १, अधर्मास्तिकाय २, आकाशास्तिकाय ३, शरीर विना एकलो जीव चैतन्यलक्षण ४, परमाणु पुद्गल ५, शब्द ६, गंध ७, वायरो ८,

ए प्राणी जिन (केवळी) थाशे किंवा नहिं थाए ९, ए प्राणी सर्वदुःखनो अंत करशे किंवा नहि करें १०. ए दश वाना ज्ञानी जाणे पण छद्मस्थ ते न जाणे ॥ ६ ॥

प्र०—वळी राजा कहे हे स्वामिन् ! तुह्मारे वचनें म्हें जीवपदार्थ मान्यो पण एटलो संदेह छे, जे कीडीनो कुंथुवानो कुंजर० (हाथी) नो जीव बराबर छे ते केम घटे ? प्रत्यक्षे घणोज फेर दीसे छे.

उ०—एम सांभळी केशीगणधर प्रदेशीने प्रत्युत्तर कहे. हे राजन् ! जेम दीवो कुलडीमांहे घालीए तेवारे कुलडीना प्रमाण जेटलो प्रकाश करे, घडामांहि मूकीए तेवारे घडा जेटलो प्रकाश करे, ओरडामांहि मूकीए तेवारे ओरडा जेटलो प्रकाश करे. पटसालमांहि मूकीए तेवारे पटसाल जेटलो प्रकाश करे.

जेहवो थानक मले तेहवो प्रकाश करे. तेम दीपक समान जीव जेवुं निर्माणनामकर्मे शरीर पामे तेटली बलशक्ति प्रकाशे. जेम जेम आवरणनो क्षयोपशम पामे तेम तेम प्रकाश करे. पण जीवपदार्थ ते बराबर जाणवो. ॥७॥

प्र०—ए सात प्रश्न सांभळी प्रदेशीराजाए जीव सद्दह्यो, जीव अने शरीर जूदा मान्या, अने कहेवा लाग्यो. हे पूज्य ! भली तुह्मारी प्रज्ञा ! म्हें जीव ओलख्यो. पाप—पुण्य—फलनो भोक्ता करी जाण्यो. पण हे स्वामी ! बापदादापर्यागतनो चाल्यो आव्यो धर्म केम मूकाय ? ते माटे नास्तिकमत न मूकुं. जे वृद्धे कीधुं होय ते कीजीए. केमके पोते वावेला झेरना वृक्षने पण छेदाय नहिं.

उ०—एम सांभळी श्रीकेशीगणधर लोहवाणीयानो दृष्टांत कहे. जेम एकनगरीथी चार

व्यापारी वणिक् परद्वीपे जावा व्यापारने अर्थे नीकल्या. आगळ जातां लोहनो आगर (खाण) आव्यो तेणे लोह लीधो, वळी केटलीएक भूमि जातां त्रांबानो आगर आव्यो, तेवारे लोह नांखी त्रांबु संग्रह्युं. त्हेमां एक कहेवा लाग्यो आदर्युं (लीधेलुं) ते न मूकीए, एम कहि लोह न मूक्युं. वळी आगळ जतां रूपानो आगर आव्यो, त्रांबु नांखी रूपुं लीधुं. रूपुं नांखी सुवर्ण लीधुं, वळी आगळ जतां रत्ननो आगर आव्यो. तिहां रत्ननो संग्रह कीधो. घणे जणे कह्युं पण लोहवाणीओ लोह न मूके, लोहभारवाही दुःखी थयो. पाछो फरी पोताने नगरे आव्यो त्यारे बीजा सर्वपुरुषो तेहने हसवा लाग्या. निर्धन रह्यो. बीजा सर्व सुखी थया. धर्मकर्मना साधनहार थया. तेम लोहवाणीयानी पेरे हठवाद करतो

जीव दुःखी थाय. वळी कोइ भारवाहक छे, ते सात पेढीमांहि कोइ कांइ सुखीओ नथी. कुलक्रमागत दरिद्र छे हवे. तेहने राज्ञः प्रसन्न थयो, अने छत्रचामरसहित राज्य ते भारवाहकने आपे. तेवारे कुलक्रमागत दरिद्रपणुं मेली राज्य ले किंवा न ले? तेवारे प्रदेशीराजा कहे स्वामी! ते राज्य ले. ना लीए तो अज्ञानी कहीए. त्यारे श्रीकेशीगणधर कहे, राजा! तुं पण ते दृष्टांत करे छे. ए अष्ट. प्रश्नना प्रश्नोत्तर सांभळी राजा प्रतिबोध पाम्यो. ॥ ८ ॥

सूरिकंतानुं केरदर्शक चरित्र.

अधमाधम लंपट स्त्रीओना दाखला शास्त्रमां अनेक छे. बीजा नंबरनी अधम स्त्री सू-

रिकंता छे, जेनुं वर्णन " रायपसेणी " सूत्रमां छे. सूरिकंता अर्धकेकयी देशना राजा परदेशीनी पटराणी हती. परदेशी राजा पूर्व अवस्थामां घणो अधर्मी, अन्यायी, जुल्मी, क्रूर, नास्तिक, धर्मद्रोही अने विषयासक्त हतो. सूरिकंतानी उपर तेनो घणो प्रेम हतो कारण के ते पटराणी हती अने तेनो पुत्र सूरिकंतकुमार युवराज हतो, तेथी भविष्यनी ते राजमाता हती. सूरिकंतानी इच्छा प्रमाणे दरेक वस्तु राजा तरफथी तेने मळती तेथी राजाने ते अति प्रेमभाव दर्शावतो. ज्यांसुधी राजाने सद्गुरु केशी स्वामीनो समागम नहोतो थयो त्यांसुधी तो राणीना प्रेमनो प्रवाह तेवो ने तेवो चालु रह्यो पण चित्तसारथीना प्रयत्नथी केशी स्वामीनुं श्वेतांबिका नगरीमां आगमन थयुं अने परदेशी राजाने मृगवन उ-

ध्यानमां प्रसंगे सदगुरुनो समागम थयो, एटलुं ज नहि पण केशी स्वामीनी युक्तिभरी दलीलोथी ज्यारे परदेशी राजाना मननुं समाधान थयुं, स्वर्ग–नरक, पुनर्जन्म–पुनर्भव, पुण्य–पाप, धर्म–अधर्म अने शरीर भिन्न जीव छे एवी खातरी थइ त्यारे राजाए नास्तिकपणानव मिथ्या सिद्धांतोने त्यजी दइ जैन धर्मना सत्य सिद्धांतो स्वीकार्या; तेनी साथे बारव्रत रुप श्रावक धर्म स्वीकार्यो अने पोताना ताबाना सात हजार गामोना चार विभाग पाडी एक भागमांथी दानशाळा मांडवानुं नकी कर्युं. परदेशी राजानी धार्मिक वृत्ति एटली दृढ थइ के तेणे संसारनां तमाम कार्यो छोडी दीधां; मात्र एकांतनी पौषधशाळामां धर्म ध्यान करवुं एटलुं ज कार्य ते पोतानुं समज्यो, अने अहर्निश तेज कार्यमां

मशगुल बनी रह्यो. आ वात सूरिकंताने पसंद पडी नहि, कारण के तेथी तेनो स्वार्थ सधातो अटक्यो. सूरिकंतानी स्वार्थी वृत्तिमां पूर्वना प्रेमनो अंकुर बळीने दग्ध थइ गयो. प्रेमनी जग्या द्वेषे लीधी. रातदिवस सुरिकंताना मनमां परदेशी राजा उपर अने तेने धर्ममां समजावनार केशी स्वामी उपर द्वेष उभरावा लाग्यो. तेणी एम समजती हती के साधुए राजाना उपर कंइ भुरकी नांखी राजाने भरमावी दीधा छे, अने मारा उपरनो प्रेम उतरावी नांख्यो छे.

स्वार्थपरायण सुरिकंता पूर्वनो स्नेह, उपकार, संबंध, ए सर्व भूली जइ प्रभुतुल्य पतिने यमधाममां पहोंचाडी देवाना विचारपर आवी पहोंची. ते विचार तरत पार पाडवाने पाश रचवा लागी. आ कार्य केवळ पोतानी जातथी नहि बनी शके एम जणायाथी सुरि-

कंतकुमारने राज्यसत्ताना लोभमां नांखी तेने पोताना धारेला कार्यमां सामेल राखवानो सूरिकंताए निश्चय कर्यो. एक माणसने मोकली तेणे कुमारने पोतानी पासे बोलाव्यो. एकांतना ओरडामां तेने लइ जइ नीचे प्रमाणे ते कहेवा लागी.

सुरिकंता—केम कुमार ! तमारी शी इंच्छाछे ?

कुमार—माताजी ! हुं तमारो प्रश्न हजु समज्यो नथी. मने खास बोलावी कइ इच्छा विषे पूछो छो ?

सूरिकंता—हुं राज्यनी इच्छा विषे पूछुं छुं, के तमारे राज्यगादीए बेसवुं छे के नहि ?

कुमार—माताजी ! आ वखते आ प्रश्न पूछवानुं शुं प्रयोजन ?

सुरिकंता—प्रयोजन ए के राज्यनुं बधुं काम बगडे छे. राजाजीने धर्मनो छंद लागी

गयो छे के कोण जाणे मतिविभ्रम थइ गयो छे. गमे तेम हो, तमे जोता नथी के राज्य के घरनी बाबतमां ते जराए लक्ष आपे छे ?

कुमार—ना, ते तो नथी आपता; पण तेनुं हवे शुं करवुं ?

सूरिकंता—शुं करवुं ते बधुं हुं जणावीश पण ते पहेलां एटली भलामण करुं छुं के आपणी आ खानगी वात क्यांय पण बहार पडवी न जोइए.

कुमार—मारा तरफथी बहार नहि पडे ते विषे खात्री राखो, पण वात शुं छे ते जणावो.

सूरिकंता—कुमार ! जुओ हवे राजा आपणने आडखीलरूप छे. एमनी हयाती सुधी तमने राज्यगादी मळी शकशे नहि अने त्यां सुधीमां राज्यनी स्थिति अस्तव्यस्त थइ जाय, माटे कोइ न जाणे तेवी रीते आपणे बंने कोइ

पण प्रयोगथी झेर आपी, आग लगाडी के शस्त्रथी राजाने मारी नांखीए.. पछी तमे छो अने हुं छुं. आपणे बंने एकबीजानी सलाहथी राज चलावीशुं. केम आ मारी वात रुचे छे?

कुमार—(स्वगत) अधधध!! आ भयंकर विचार!! आटलो बधो राज्यसत्तानो लोभ!! धूळ पडो ते राज्यवैभवमां के जेने माटे आवा क्रूर विचारो उत्पन्न थाय छे! हवे अहीं बेसवामां के बोलवामां लाभ नथी. वधारे पडतुं बोलीश तो मारा माटे पण आवा विचारो बांधतां मारी माता वार लगाडशे नहि (प्रकाश) माताजी! एना माटे हुं विचार्या वगर हमणां कंइ नहि कही शकुं. हमणां मारुं शरीर अस्वस्थ छे, तेथी जवानी रजा लउं छुं.

एटलुं बोली कुमार उठी चालतो थयो. सूरिकंता जरा वार तो विचारमां पडी के काम

न थयुं अने वात बहार पडी गइ. कुमार मारा विचारमां संमत थयो नहि. अस्तु. में बीजानो आश्रय माग्यो, ए ज भूल करी. ए काम मारा एकलाथी क्यां बनी शके तेवुं नथी ? एक राजाने ते पण खानगी रीते मारवो तेमां बीजानी मददनी शी जरुर हती ? हवे तरत ते काम पार पाडुं. विलंब थवाथी क्खते ते वात कुमार तरफथी बहार पडी जाय माटे तरत गोठवण करुं. आवो निश्चय करी ते दुष्टाए परदेशी राजाने पोताने त्यां जमवानुं आमंत्रण आप्युं अने रसोइमां, वासणमां, आसनमां, दरेक स्थळे झेर नांखी दीधुं. राजा जमवाने आव्या, भोजन कर्युं, तेनी साथे झेरनी असर थइ, तेथी अधूरे भोजने राजा उठी गया अने पोषधशाळामां गया. सूरिकंताना आ कावत्रानी राजाने खबर पडवा छतां तेनो वांक न

देखतां समाधि परिणामे संथारो करी राजा स्वर्गे गया.

(दोहा.)

स्वार्थना सौको सगां, जो जो इण संसार ॥
किण विध विचरे कंथसुं, सूरिकंता नार ॥१॥
कुण बेटा कुण पोतरा, कुण नारी कुण भाय ॥
स्वार्थका सौको सगा, परमारथ मुनिराय ॥२॥

राणीनो कपटरुपी विलाप.

(राग—चोपाई.)

राणी लटो तोडी करे शोगो,
म्हारा व्हाला तणोरे विजोगो ॥
मने अन्न पाणी नवि भावे,
परिवार नहि रे सुहावे ॥ १ ॥
हुं तो चार फेरानी छुं नारी,

कंथा करी चाल्या रे खुवारी ॥
मारो नाम मति कोइ लेजो,
म्हने दरिशण देखवा देजो ॥ २ ॥
राणी लज्जा कपट मन धरती,
उमरावोने दूरे करती ॥
राणी आडी परीच करावी,
राणी मांहि गई रे चलाई ॥ ३ ॥
राणीए ईसडो अकारज कीधो,
राजाने गळे जइ टुंपो दीधो ॥
राणीए मनमां न आणी मया,
राजानी नहि जाणी रे दया ॥ ४ ॥
मुवानो कारज कीधो,
सूरिकंत कुंवर राज दीधो ॥
एवो अस्थीर पदारथ जाणो,
संसारनो मोह मति आणो ॥ ५ ॥
एम भांख्यो श्री केवळ ज्ञानी,

जीणशुं वात नहि कोइ छानी ॥
जीणरो कह्यो जे जीव करशे,
संसार समुद्रने तरशे ॥ ६ ॥

श्री दश वैकालीक सूत्रनुं
१-२-३-४ अध्ययन.

धम्मो मंगल मुक्कठं, अहिंसा संजमो तवो ॥ देवाविंतं नमं संति, जस्स धम्मे सजामणे ॥ १ ॥ जहादुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवीयइ रसं ॥ न य पुप्फं किलामेइ, सोय पिणेइ अप्पयं ॥ २ ॥ एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो ॥ विहंगमा व पुप्फेसु, दाणभत्तेसणेरया ॥३॥ वयं चं वीत्तिं लब्भामो, नय कोइ उवहुम्मइ ॥ अहागडेसु रीयंते, पुप्फेसु भमरा जहा

॥ ४ ॥ महुकार समा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया ॥ नाणा पिंडरयादंता ॥ तेण वुच्चंति साहुणो ॥ ५ ॥ त्तिबेमि ॥ १ ॥



अध्ययन बीजुं.

कहं नु कुज्जा सामण्णं, जो कामे न निवारए ॥ पए–पए विसीयन्तो, संकप्पस्स वसं गओ ? ॥ १ ॥ वत्थ–गन्ध–मलंकारं, इत्थीओ सयणाणि य ॥ अच्छंदा जे न भुंजन्ति, न से "चाइ" त्ति वुच्चई ॥ २ ॥ जे य कन्ते पिए भोए, लद्धे विप्पिट्ठि–कुव्वई ॥ साहीणे चयइ भोए, से हु "चाइ" त्ति वुच्चई ॥ ३ ॥ समाए पेदाए परिव्वयन्तो, सिया मणो निस्सरई बहिद्धा ॥ 'न सा महं नो वि अहं पि तीसे', इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं ॥ ४ ॥ आयावयाही ! चय

सोगुमल्लं !, कामे कमाही ! कामयं खु-
दुःखं; ॥ छिन्दाहि दोसं ! विणएज्ज रागं !
॥ एवं सुही होहिसि सम्पराए ॥ ५ ॥ प-
क्खन्दे जलियं जोइं, धूम-केउं दुरासयं ॥
नेच्छन्ति वन्तयं भोत्तुं, कुले जाया अगन्धणे
॥ ६ ॥ धिरत्थु ते जसो-कामी, जो तं जी-
विय-कारणा ॥ वन्तं इच्छसि आवेउं ! सेयं
ते मरणं भवे ॥ ७ ॥ अहं च भोग-रायस्स,
तं च सि अन्ध वण्हिणो ॥ मा कुले गन्ध-
णा होमो, संजमं निहुओ चर ॥ ८ ॥ जइ
तं काहिसि भावं जा-जा दच्छिसि नारिओ
॥ वायाइद्धो व्व हढो, अट्ठियप्पा भविस्ससि
॥ ९ ॥ तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाए
सुभासियं ॥ अंकुसेण जहा नागो, धम्मे स-
म्पडिवाइओ ॥ १० ॥ एवं करेन्ति सम्बुद्धा,

पण्डिया पवियक्खणा ॥ विणियट्टन्ति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमो ॥ ११ ॥ त्तिबेमि ॥ २ ॥

अध्ययन त्रीजुं.

संजमे सुट्ठियप्पाणं विप्पमुक्काण ताइणं ॥ ते सिमेयमणाइण्णं, निग्गन्थाण महेसिणं ॥ १ ॥ उद्देसियं १ कीयगडं २ नियागं ३ अभिहडाणि ४ य ॥ राइ–भत्ते ५ सिणाणे ६ य गन्ध ७ मल्ले ८ य·वीगणे ९ ॥ २ ॥ सन्निही गिहि–मत्ते य, रायपिण्डे किमिच्छए ॥ सम्बाहग दन्त-पहोयणा य, सम्पुच्छण देह–पलोयणा य ॥ ३ ॥ अट्ठावए य नाली य छतस्स य धारणट्ठाए ॥ ते गिच्छं पाणहा पाए, समारम्भं च जोइणो ॥ ४ ॥ सेज्जायर

पिएडं च, आसन्दी पलियंकए ॥ गिहन्तर
निसैज्जा य, गायस्सूव्वट्टणाणि य ॥ ५ ॥
गिहिणो वेयावडियं, जाय. आजीव वत्तिया
॥ तत्तानिव्वुड-भोइत्तं, आउर-स्सरणाणि य
॥ ६ ॥ मुलए सिंगबेरे य, उच्छु-खण्डे अ-
निव्वुडे ॥ कन्दे मूले य सच्चित्ते, फले बीए
य आमए ॥ ७ ॥ सोवच्चले सिन्धवे लोणे
रोमा लोणे य आमए ॥ सामुद्दे पंसु-खारे य,
काला-लोणे य आमए ॥ ८ ॥ धूवणे त्ति-
वमणे य, वत्थी-कम्म विरेयणे ॥ अंज्जणे
दन्तवणे य, गायाभंग-वीभूसणे ॥ ९ ॥ स-
व्वमेयमणाइण्णं, निग्गन्थाण महेसिणं ॥ सं-
जमम्मि य जुत्ताणं, लहुभूय विहारिणं ॥१०॥
पंचासव परिन्नाया, ति गुत्ता छसु संजया,
पंच-निग्गहणा धीरा निग्गन्था उज्जु दंसिणो
॥ ११ ॥ आयावयन्ति गिम्हेसु, हेमंतेसु अ-

वाउडा ॥ वासासु पडिसंलीणा, संजया, सु-
समाहिया ॥ १२ ॥ परिसह-रिऊ दन्ता, धुय
मोहा जिइन्दिया ॥ सव्व—दुक्ख प्पहीणट्ठा,
पक्कमन्ति महेसिणो ॥ १३ ॥ दुक्काराइं करे-
त्ता णं, दुस्सहाइं सहेत्तु य ॥ के एत्थ देव-
लोगेसु, केइ सिघन्ति नीरया ॥ १४ ॥ खव-
वित्ता पुव्व—कम्माइं, संजमेण तवेण य ॥ सि-
द्धि—मग्गमणुप्पत्ता, ताइणो परिनिव्वुड ॥१५॥
त्तिबेमि ॥ ३ ॥

---

(४)

अजयं चरमाणो उ पाण—भूयाइ हिंसइ ।
बन्धई पावयं कम्मं, तं से होई कडुयं फलं ॥
१ ॥ अजयं चिट्ठमाणो उ पाण—भूयाइ हिंसई
। बन्धई पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥
२॥ अजयं आसमाणो, उ पाण—भूयाइ हिंसई ।

बन्धइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥
३ ॥ अजयं सयमाणो उ पाण–भूयाइ हिंसई
। बन्धई पावयं कम्मं, ते से होइ कडुयं फलं॥
४ ॥ अजयं भुञ्जमाणो उ पाण–भूयाइ हिं-
सई । बन्धइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं
फलं ॥ ५ ॥ अजयं भासमाणो उ पाण–भू-
याइ हिंसई । बन्धई पावयं कम्मं, तं से होइ
कडुयं फलं ॥ ६ ॥ कहं चरे ? कहं चिट्ठे
कहं आसे ? कहं सए ? । कहं भुञ्जन्तो भा-
सन्तो, पावं कम्मं न बन्धइ ? ॥ ७ ॥ जयं
चरे, जयं चिठे, जयं आसे, जयं सए । जयं
भुञ्जन्तो भासन्तो पावं कम्मं न बन्धइ ॥८॥
॥ सव्व–भूयप्प–भूयस्स सम्मं भूयाइ पास ओ
। पिहिया सवस्स दन्तस्स पावं कम्मं न बन्धइ ९
पढमं नाणं तओ दया, एवं चिट्ठइ सव्व–सं-
जए । अन्नाणी किं काही किं वा नाहिइ छेय

पावगं ? ॥१०॥ सोच्चा जाणइ कल्लाणं सोच्चा जाणई पावगं । उभयं पि जाणइ सोच्चा जं छेयं तं समायरे ॥ ११ ॥ जो जीवे वि न याणाइ अजीवे वि न याणइ । जीवाजीवे अयाणन्तो कह सो नाही उ संजमं ? ॥ १२ ॥ जो जीवेवि वियाणाइ अजीवे वि वियाणइ । जीवाजीवे वियाणन्तो सो हु नाही उ संजमं ॥ १३ ॥ जया जीवमजीवे य दो वि एए वियाणई । तया गइं बहुविहं सव्व–जीवाण जाणई ॥ १४ ॥ जया गइं बहुविहं सव्व–जीवाण जाणई । तया पुण्णं च पावं च बन्धं मोक्खं च जाणई ॥ १५ ॥ जया पुण्णं च पावं च बन्धं मोक्खं च जाणई । तया निव्विन्दए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ॥ १६ ॥ जया निव्विन्दए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे। तया चयइ सम्भोगं सब्भिन्तर–बाहिरं ॥१७॥

जया चयइ सम्भोगं सब्भिन्तर—बाहिर । तया मुण्डे भवित्ताणं पव्वइए अणगारियं ॥ १८॥ जया मुण्डे भवित्ताणं पव्वइए अणगारियं । तया संवरमुक्कठं धम्मं फासे अणुत्तरं ॥१९॥ जया संवरमुक्कठं धम्मं फासे अणुत्तरं । तया धुणइ कम्म—रयं अबोहि—कलुसं कडं ॥२०॥ जया धुणइ कम्म—रयं अवोहि—कलुसं कडं ; तया सव्वत्त—गं नाणं दंसणं चाभिगच्छई ॥२१॥ जया सव्वत्त—गं नाणं दंसणं चाभिगच्छई । तया लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली ॥ २२ ॥ जया लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली । तया जोगे निरुम्भित्ता सेलेसिं पडिवज्जाई ॥ २३ ॥ जया जोगे निरुम्भिता सेलेसिं पडिवज्जाइ । तया कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ ॥ २४ ॥ जया कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ । तया लोग

मन्थय–त्थो सिद्धो भवइ सासओ ॥ २५ ॥
सुह–सायगस्स समणस्स सायाउलगस्स नि-
गामसाइस्स । उच्छोलणा–पहोइस्स दुलहा
सोग्गइ तारिसगस्स ॥ २६ ॥ तवो–गुण–
पहाणस्स उज्जुमइ खन्ति–संजम–रयस्स ।
परीसहे जिणन्तस्स सुलहा सोग्गइ तारिसगस्स
॥ २७ ॥ (पच्छा वि ते पयाया खिप्पं
गच्छन्ति अमर–भवणाइं । जेसिं पी उ तवो
संजमो य खन्ती य बम्भचेरं च ॥) इच्चेयं
छ–ज्जीव–णियं सम्मद्दिट्ठी सया जए । दुलहं
लभित्तु सामण्णं कम्मुणा न विराहेज्जासि ।२८।
त्ति बेमि ॥ ४ ॥

श्री महावीर स्तुति.

पुच्छिंसु णं समणा माहणा य, आगा-
रिणो या परतिथिया य, से केइ णेगंत हिय

धम्म माहु, अणेलिसं साहु खतिखयाए ॥ १ ॥ कहं च नाणं कहं दंसणं से, सील कहं नायसुयस्स आसी, जाणा सिणं भिक्खु जहातहेणं, अहासुयं बुहि जहाणि संतं ॥ २ ॥ खेयन्ने से कुसले महेसी, अणंतनाणी य अणंत दंसी, जसंसिसणो चक्खुपहेठियस्स, जाणाहि धम्मं चधिइ चपेहा ॥ ३ ॥ उड्ढं अहेयं तिरियं दिसासु, तसा य जे थावर जेह पाणा सेनिच्चेनिच्चेहि समिख पन्ने, दीवेव धम्मं समियं उदाहु ॥ ४ ॥ से सव्वदंसी अभिभुयनाणी, निराम गंधे धिमं ठियप्पा, अणुत्तरे सव्व जगंसि वीजं, गंथा अतीते अभये अणाउ ॥ ५ ॥ से भुइ पन्नेअणिए अचारी, उहतरे धीरे अणंत चक्खु, अनुत्तरे तपइ सूरिए वा, वइरोयणिंदेव तमंपभासे ॥ ६ ॥ अणुत्तरे धम्ममिणं जिणाणं

नेया मुणि कासव आसुपन्ने, इंदेव देवाणं महाणु भावे, सह स्सणेतादिविणं विसिठे ॥ ७॥ से पन्नया अक्खय सागरेवा,महोदहि वावि अणंत पारे ॥ अणाइलेया अकसाइ भिक्खु, सक्केवदेवाहिवइ जुइमं ॥ ८ ॥ से वीरिएण पडिपुन्न विरिए, सुदंसणेवा नगसव्व सेठे, सुरालएवासि मुदागरे से, विराय एणेगं गुणोववेए ॥ ९ ॥ सयं सहस्साणउ जोयणाणं, तिकंडसे पंडग वेजयंते, सेजोयणे नवनवइ सहसे, उद्धुस्सिए हेठं सहस्स मेगं ॥ १० ॥ पुठे नभे चिठइ भूमि वठिए, जंसूरिया अणु परियट्टयंति से हेमवन्ने बहु नंदणे य, जंसी रइं वेदयंति महिंदा ॥ ११ ॥ से पव्वए सदमहप्प गासे, विरायइ कंचण मठवन्ने, अणुत्तरे गिरिसुय पव्वदुगे, गिरिवरेसे जलिएव भोमे ॥ १२ ॥ महीए मझमि ठिएण गिंदे,

पन्नायते सूरिए सुद्ध लेसे, एवं सिरिएऊ स भूरि वन्ने, मणो रमे जोयइ अचि माली ॥ १३ ॥ सुदंसणं स्सेव जसो गिरिस्सं, पवुच्चइ महओ पव्वयस्स, एतोवमे समणे नायपुत्ते, जाइ जसो दंसण नाण सीले ॥ १४ ॥ गिरिवरेवा निसहोय याणं, रुयएव सेठे वलुयायताणं; तउवमे से जग भूइ पन्नें, मुणीण मझे तमुदाहु पन्ने ॥ १५ ॥ अणुत्तरं धम्म मुइ रइत्ता, अणुत्तरं झाणवरं झियाइं, सुसुक सुकं अपगंड सुकं, सखिंदु वेगं तवदात सुकं ॥ १६ ॥ अणुत्तरग्गं परमं महेसी, असेसकम्मं सुवि सोह इत्ता, सिद्धिं गइ साइ मणंत पत्ते, नाणेणं सीलेण य दंसणेणं ॥ १७ ॥ रुखे सुणाए जह साम लीवा, जंस्सिरइं वेद यंति सुवन्ना, वणे सुवा नंदण माहु शेठं, नाणेणं सीलेणं यभूइ पन्ने ॥ १८ ॥ थणियंव

सद्दाण अणुत्तरे उ, चंदोव्वतारण महा-णुभावे, गंधेसुवा चंदण माहु शेठं, एवं मुणीणं अपडिन माहु ॥ १९ ॥ जहा सयंभू-उदहीण सेठे, नागे सुवा धरणींद माहु सेठं ॥ खओद एवा रसवेजयंते, तवोवहाणे मुणि वेजयं ते ॥ २० ॥ हंथिसुएरावण माहुणाए, सीहो मियाणं सलिलाण गंगा, पखि सुवा गेरु लेवेणुं देवे, निव्वाण वादी निहनाय पुत्ते ॥ २१ ॥ जोहे सुणाये जह वीस सेणे, पुप्फेसुवा जह अरविंद माहु, खत्तीण सेठे जह दंत वक्के, इसींण सेठे तह वद्धमाणे ॥ २२ ॥ दाणाण सेठं अभय प्पयाणं, सच्चेसुवा अणवजं वयंति, तवेसुवा उत्तम बंभ चेरं; लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते ॥ २३ ॥ ठितिण सेठा लव सत्तमावा, सभा सुहम्माव सभाण सेठा, निव्वाण सेठा जह

सव्व धम्मा, ननायपुत्ता परमथि नाणी ॥ २४ ॥ पुढो वमे धुणइ विगइ गेहीं, नस्संनिहं कुव्वइआ सुपन्ने, तरितुं समुदंःच महाभबोधं अभयंकरे वीर अणंत चख्खु ॥ २५ ॥ कोहंच माणंच तहेव मायं लोभं चउथं अशथ दोसा, ए आणिवंता अरहा महेसी. नकुवइपाव नकारवेइ ॥ २६ ॥ किरिया किरियं वेगइ याणुवायं, अन्ना णियाणं पडियच्चठाणं. से सव्वावायं इतिवेद हता, उवठीए धम्म सदीहरायं ॥ २७ ॥ सेवारिया इथि सराइ भत्तं, उवहाणवं दु;ख खयठीआये, लोगं विदित्ता आरं पारंच, सव्वं पभू वारिय सव्व वारं ॥ २८ ॥ सोच्चाय धम्मं अरिहंत भासियं, समाहियं अथपउ विसुद्धं, तं सद्दहंताय जणा अणाउ, इंदेव देवाहि आगमिस्संति ॥ २९ ॥ तिबेमि ॥

॥ श्री प्रस्तावीक गाथाओ प्रारंभ ॥

पंच महव्वय सुव्वय मुलं, समणामणा इलसाहु सुचिण्णं ॥ वेर वीरामण पजवसाणं, सव्व समुद्दमहोदही तित्थ्यं ॥ १ ॥ त्तिथ्यं करेहिं सुदेसिय मग्गं ॥ नरग तिरीय विव जीयं गग्गं ॥ सव्व पवित्त सुनिम्मिय सारं ॥ सिद्धि विमाणं अवं गूयदारं ॥ २ ॥ देव- नरींद नम सियपूइयं ॥ सव्वजगूत्तम मंगलं मग्गं ॥ दुधरिसं गुण नायकमेकं ॥ मोख पहस्स वडिसग भुयं ॥ ३ ॥ देव दाणव गं- धवा, जख रखस कीन्नरा ॥ बंभयारी नमं- संती, दुक्करं जे करिंती ते ॥ ४ ॥ एसधम्मे धुवे णीयए ॥ सासए जीणदेसिए ॥ सिझा सिझंति चाणेणं ॥ सिझिस्संति तहावरे, तिबेमी ॥ ५ ॥ अरिहंत सिद्ध पवयणं ॥

गुरुथेर, बहु सुए तवस्सीसु ॥ वछलयाय-
तेसिं, अभिरवनाणो बउगेय ॥ ६ ॥ दंसण
विणव आवरस एय, सीलवेय निरइयाए ॥
खणलब तवचीगाए, वेयांवच्चे शमाहिए
॥ ७ ॥ अपुव नाणग्गहणे, सुयभत्ति पव-
यणे पभावणया ॥ एएहिंकारणेहिं, तिथय-
रतं लहइ जीवो ॥ ८ ॥ जीणवयणे अणुरत्ता
जीणवयणं जे करंती भावेण ॥ अमला असं-
कीलिठ्ठा, ते हुंतिपरीत्त संसारी ॥ ९ ॥
एवंखु नाणिणोसारं, जंनींहसइ कींचणं ॥
अहिंसा संजम चेव, एतावतं वियाणीया ॥
१० ॥ जाइंचवुठ्ठीच इज्जपासं, भूतेहिं जाणे
पडिलेइवायं ॥ तम्हा तिवीज्जो परमंति-
णचा, सम्मत दंसी णकरेइ पावं ॥ ११ ॥
उमुच्च पासइह मच्चीएहीं, आरंभजीवी उभ-
याजु पस्सी ॥ कामेसु गीद्धाणी चयंकरंति,

संमिच्चमाणा पुणरेति गब्भं ॥ १२ ॥ सवणं नाणेय वीन्नाणे, पच्चख्खाणेय संजमे ॥ अणहनए तवे चेव, वोदाणे अकिरीया सिद्धी ॥ १३ ॥ सारं दंसणनाणं, सारंताव निमम संजम सीलं ॥ सारं जीणवर धम्मं; सारं संलेहणा मरणं ॥ १४ ॥ वल्लाण कोडि जणणी, दुरंत दुरियारीबग्गणी ठवणी ॥ संसार जलहितरणी, ए गंच होइ जीव दया ॥ १५ ॥ आरंभे नत्थि दया, महीला संगेणनासए बंभं संकाए सम्मत्त नासइ,* पव्वजा अत्थगहणेणं ॥ १६ ॥ मज्जं विसय कसा; या, निंदा विकहाय पंचमी भणिया ॥ ए ए पंच पमाया, जीवा पडंति संसारे ॥ १७ ॥ लभ्भंति वीमला भोए, लभ्भंति सूर संपया ॥ लभ्भंति पुत्त मितंच, एगोधम्मो न लभ्भइ ॥ १८ ॥ एगो-हं नत्थिमे कोइ, नाह-मन्न

स्स कस्सइ ॥ एवं अदीणमणसो, अप्पाण-
मणुसासइ ॥ १९ ॥ ए गोमे सासओ अप्पा,
नाणंदंसण संजुओ ॥ सेसामे बाहीराभावा,
सव्वे संजोग लख्खणा ॥ २० ॥ नवी सु-
ही देवता देवलोए, नवी सूही पुढवी पई
राया ॥ नवि सुही सेट्ठं सेणावइणं एगंतु
सूही मुणि वीयरागी ॥ २१ ॥

अध्ययन संग्रह समाप्त.

पंच परमेष्टी वंदणा.

॥ श्री अरीहंत देवने. (सवैया एकत्रीशा) ॥

नमुं श्री अरिहंत, करमाको कीयो अंत,
हुवासो केवळ पंथ, करुणा भंडारी है;
अतिसे चोतीसधार, पेंतीस वाणी उचार,
समजावे नरनार, पर उपगारी है;

शरीर सुंदर आकार, सुरजसो झलकार,
गूण है अनंत सार, दोष परिहारी है;
केतहै तिलोकरीख, मन, वच, काय करी;
लळी लळी वारंवार, वंदणा हमारी है.

श्री सिद्ध भगवंतने.

सकल करम टाळ, वशकर लीयो काल,
मुगतिसे रह्या माल, आतमाका तारी है;
देखत सकल भाव, हुवा है जगतराव;
सदाहि क्षायिक भाव, भय अविकारी है;
अचल अठल रुप, आवे नहि भवकुप,
अनुप सरुप उप, अैसी रिध धारी है;
केतहै तिलोकरीख, बतावो ए वास प्रभु,
सदाहि उगत सूर, वंदणा हमारी है.

श्री आचार्यजीने.

गुण है छतीश पुर, धारत धरम उर,
मारत करम क्रूर, सुमति विचारी है;

शुद्ध सो आचारवंत, सुंदर है रूपकंत,
भणिया सबी सिद्धांत, वांचणी सु प्यारी है;
अधिक मंधुर वेण, कोइ नहि लोपे केण,
सकल जीवोका सेण, कीरत अपारी है;
केत है तिलोक रीख, हितकारी देत शिख,
अेसे आचारज ताकु, वंदणा हमारी है,

श्री उपाध्यायजीने.

पढत अगीआरे अंग, कर्मासु करे जंग,
पाखंडीको मान भंग, करण हुशीआरी है;
चउदे पूर्वधर, जाणत आगम सार,
भवियोके सुखकार, भ्रमणा निवारी है;
पढावे भविक जण, थिर कर देत मन,
तप करी तावे तन, ममता निवारी है;
केत है तिलोकरीख, ज्ञान भानु पर तिख;
अैसे उपाध्याय ताकु, वंदणा हमारी है,

श्री साधुजीने.

आदरी संजम भार, करणी करे अपार,
सुमति गुपतिधार विकथा निवारी है;
जयणा करे छकाय, सावद न बोले वाय,
बुझाइ कषाय लाय, किरिया भंडारी है;
ज्ञान भणे आठे जाम, लेवे भगवंत नाम,
धरमको करे काम, ममताके मारी है;
केत है तिलोकरीख, कर्मा को टाळे विख,
अैसा मुनिराज ताकु, वंदणा हमारी है.

श्री गुरु देवने.

जैसे कपडाको थान, दरजी बेतत आण,
खंड खंड करे जाण, देत सो सुधारी है;
काटके ज्युं सुत्रधार, हेमकु कसे सुनार,
माटीके को जो कुंभकार, पात्र करे त्यारी है,
धरती के कीरसाण, लोह के लुहार जाण,

सील वाट सील आण, घाट घडे भारी है;
केत है तिलोकरीख, सुधारे ज्युं गुरु शीष,
गुरु उपकारी, नित लीजे, बलिहारी है.
गुरु मित्र गुरुमात, गुरु सगा गुरुतात,
गुरु भूप गुरु भ्रात, गुरु हितकारी है;
गुरु रवि गुरु चंद्र, गुरुपति गुरु इंद्र,
गुरु देव दे आणंद, गुरु पद भारी है;
गुरु दिठत ज्ञान ध्यान, गुरु देत दान मान;
गुरु देत मोक्ष थान, सदा उपकारी है;
केत है तिलोकरीख, भली भली दीनी शिख,
पल पल गुरुजीके, वंदणा हमारी है.

श्री चोवीस तीर्थंकरनी स्तुति.

रीखव अजीत जीननाथ, संभव अभिनंदना;
सुमती पदम सुपार्श्वे, चंदा प्रभु वंदना. १
सुबुद्धी शीतळ श्रीयेंश, के वासूपुज्य ध्याइए;

विमळ अनंत धर्मनाथ, शांत गुण गाइए. २
कुंथु अर च मल्लीनाथ, मुनीसुव्रत नीर्मळा,
नेमी अरीष्ट नेमीनाथ, पार्श्व महावीर भला.३
ए चोवीशीना नाम, के नित्य प्रत्ये भजो;
हिंसा जुठ अदत्त, मैथुन परिग्रह तजो. ४
ए चोवीशीना नाम, के नित्य प्रत्ये ध्याइए;
जन्म मरण दुख दुर, मुक्ति पद पाइए. ५
वीशे वांदु वेरमाण, अगीयारे वांदु गणधरा;
बे करजोडी नमुं शीश, के साचा जीनेश्वरा.६
कवीश्वर कहे करजोड, सुणो रे भवी प्राणीया;
कर्महरण ए उपाय, के जगमें जाणीया. ७
साचो ते श्री जैन धर्म, व्यसन व्यशमें वस्यो;
चाल्यो कुकर्मनी चाल, चोर्याशीमां भटकीयो.८
भम्यो अनंतो काळ, के धर्म विना कुगतिमां;
प्रभुजी करजो मुज उपर मेहर, के मेलजो मुक्तिमां

॥ चोवीस तिर्थंकरना नाम. ॥

१ श्रीरुषभदेव स्वामो.	१३ वीमलनाथ स्वामी
२ अजीतनाथ स्वामी.	१४ अनंतनाथ स्वामी.
३ संभवनाथ स्वामी.	१५ धर्मनाथ स्वामी.
४ अभीनंदन स्वामी.	१६ शांतीनाथ स्वामी.
५ सुमतीनाथ स्वामी.	१७ कुंथुनाथ स्वामी.
६ पद्म प्रभु स्वामी.	१८ अरनाथ स्वामी.
७ सुपार्श्वनाथ स्वामी.	१९ मलीनाथ स्वामी.
८ चंद्रप्रभु स्वामी.	२० मुनीसुव्रत स्वामी.
९ सुवीधीनाथ स्वामी.	२१ नमीनाथ स्वामी.
१० शीतलनाथ स्वामी.	२२ नेमीनाथ स्वामी.
११ श्रेयांसनाथ स्वामी.	२३ पार्श्वनाथ स्वामी.
१२ वासुपुज्य स्वामी.	२४ महावीर स्वामी.



दरोज धारवाना १४ नियम.

सचित्त द्व्व विगय नाणी, तंबोल वथ्थ कुसुमेसु॥
वाहन सयण विलेवण, बंभ दिसी न्हाण भत्तेसु ॥

(पृथ्वी, अप्, तेजः, वायु वनस्पति, त्रस, ए छकायनी रक्षाः तथा अप्सि, मसि ने कृषि ए रीते कुल २३ बाबतना नियम करवा.)

सचित्त–माटी, पाणी, फळ, काष्ट, पत्र, बीज, तथा जे कांइ लीली वस्तु छेद्याने बे घडी थइ न होय तेनुं वजन धारवुं.

द्रव्य–सचित्त अने अचित्त वस्तु वापरवी होय तेनी गणत्री करवी.

विगइ–दुध, दहीं, तेल, घी, गोळ तथा जे कढाइमां तळाय ए छ विगयनी गणत्री करवी.

वाणी–जोडा, मोजां वगेरेनुं प्रमाण करवुं.

तंबोळ—पान, सोपारी, इलायची, चुरण, लवींग आदिनुं प्रमाण करवुं.

वथ्थ—वस्त्र रेशमी, सुतराऊ, शण तथा उनना वि. नुं प्रमाण करवुं.

कुसुमेसु—फुल, छींकणी, अत्तर वगेरे सुंघवानी चीजनु प्रमाण करवुं.

वाहन—चरतां, फरतां के तरतां वाहनो जेवां के, गाडी, आगबोट वगेरेनु प्रमाण करवुं.

सयण—बीछानुं, पाट पाटला, खुरशी विगेरेनो नियम.

विलेवण—सुखड, चंदन वगेरे विलेपननु प्रमाण.

बंभ—ब्रह्मचर्यनो नियम करवो.

दिसी—छ दिशाए जवानी गाउनुं प्रमाण.

न्हाण—बधे शरीरे महावानो नियम.

भत्तेसु—जमवानी वस्तुओनुं प्रमाण.

पृथ्वीकाय–माटी, मीठुं, खडी, रमचो खारो वगेरेनुं प्रमाण.

अपकाय–टाढं तथा उना पाणीनुं प्रमाण.

तेउकाय–दीवा, चुला, च्यारी सगडीओ वगेरेनुं प्रमाण.

वाउकाय–पंखा, धमणो, हींचका वगेरेनुं प्रमाण.

वनस्पतिकाय–शाकभाजी वगेरेनुं प्रमाण.

असि–धार, अणी ने धबाको एटले तरवार, भालो के तोप अने बंदुक, छरी वगेरे शस्त्रोनुं प्रमाण.

मसि–स्याही, खडीया, कलम, रंगवानुं पाणी वगेरेनी गणत्री.

कृषि–खेती, टांकां, भोंयरां, कुवा, तळाव वाव्य, वगेरेनुं प्रमाण.

॥ श्रावकना ३ त्रण मनोर्थ विषे ॥

दोहा—आरंभ परिग्रह तजी करी, क्यारे थउं व्रतधार ॥ अंत समय आलोयणा, करुं संथारो सार ॥ १ ॥

(१) पहिला मनोरथमें—श्रमणो पासक (श्रावकजी) ऐसा चिंतवेके कब में, १४ प्रकारका बाह्य और ९ प्रकारका अभ्यंतर, परिग्रहसें अथवा आरंभ समारंभसें निवर्तुंगा यह आरंभ परिग्रह, काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ, विषय, कषायका बढानेवाला, दुर्गतिका दाता मोह मत्सर राग द्वेषका मूल, धर्म ज्ञान क्रिया क्षमा दया सत्य संतोष सम्यकत्व संयम तप ब्रह्मचर्य और सुमतिका नास करनेवाला, अठारे पापका बढानेवाला, अनंत संसारमें परीभ्रमण करानेवाला, अध्रुव, अनित्य अशाश्वता

असरण अतरण, निग्रंथ मुनियोंका निंदनीक, ऐसे अपवीत्र आरंभ परीग्रहका में जब त्याग करूंगा, सो दिन मैरा परम कल्याणका होवेगा. ॥ १ ॥

(२) दूसरा मनोरथमें—श्रावकजी एसा चिंतवेके कब में द्रव्ये भावे मुंड हो के दस प्रकारका यति धर्म, नव वाड विशुद्ध ब्रह्मचर्य, पंच महाव्रत, पांच सुमत्ति, तिन गुप्ती, सतरे प्रकारे संयम, बारह प्रकारे तप, छकायका दयाल, अप्रतिबंध विहारी, सर्व संग रहित, वितराग देवकी आज्ञानुसार चलनेवाला होउंगा. जिस दिन निग्रंथ (साधू) का मार्ग अंगीकार करूंगा, वो दिन मैरा धन्य परम कल्याणका होवेगा. ॥ २ ॥

(३) तीसरा मनोरथमें—श्रावकजी ऐसा चिंतवेके किस वखत मैं एर्व पाणस्थानक, आ-

लोई, निंदी, निःशल्य, होकर सर्व जीवोसे खमत खामणा कर, त्रिविध २ अठरा पापकों त्याग जिस शरीरकों मैंने अति प्रेमसे पोषण कीयो है, ऐसें शरीरसें ममत्व त्याग छेले (आखरी) श्वासोश्वास तक वोसिराके, चारही आहारकों त्यागके, तीन आराधना, चार सरणा सहित आयुष्य पूर्ण करूगा संलेषणाके पांच अतिचार टालके, पंडित मरणसें मरुंगा सो दिन मेरा धन्य परम कल्याणका होवेगा.

यद ३ मनोरथ विचारता हुवा (चितवन करता हुवा) प्राणी महा निर्जरा उपराजन करे, संसार परत करे, मोक्षके सन्मुख होवे, अनुक्रमें सर्व दुःखसें मुक्त होवे, अनंत अक्षय सुखकी प्राप्ती होवे. एसे जानकर श्रावक श्रावीकाओको उचित है के, नित्य हमेश

यह ३ तीन मनोरथका विचार (चिंतवन) करता रहे. ॥

दोहा-तीन मनोरथ ए कह्या, जो ध्यावे नित्यमन ॥ सक्तिसार वरते सहु, तो पावे शिव सुख धन ॥ १ ॥

नित्य नियम प्रकरण समाप्त.